अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

नारीलोक

लिखें शक्ति की नई ऋचाएं, अनुशासन के दीप जलाएं

Acharya Mahapragya Birth Centenary 1920-2020

ज्ञान चेतना वर्ष

अंक 264 | पंजीकृत कार्यालय : 'रोहिणी', अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल, लाडनूं (राजस्थान) | जून 2020

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी

महाप्रज्ञ - अष्टकम

(आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा रचित)

पुनीतान्तःप्रज्ञा गहनतम-तत्त्येषु निपुणा,
श्रुतस्वाध्यायेन सुविदितरहस्यो विभुवरः।
प्रशस्या शास्त्राणां सुषमतर-सम्पादन-सृतिः,
महाप्रज्ञः पूज्यो जिनपतिसरूपो गुरुवरः।

विशुद्धा सम्भाषा विनयति विबाधाः प्रतिपदं,
प्रकाण्डं पाण्डित्यं श्रवति मुखपद्मात् प्रवचने।
प्रभावी व्याहारो जनयति समाधिं जनचये,
महाप्रज्ञः पूज्यो जिनपतिसरूपो गुरुवरः ।।

गभीरं साहित्यं सुमतिविदुषां प्रीतिजनकं,
प्रदत्ते सौहित्यं पठनपर-लोकाय विपुलम्।
विशिष्टश्लोकानां विरचनमकार्याशुकविना,
महाप्रज्ञः पूज्यो जिनपतिसरूपो गुरुवरः।।

तनायग्रस्तोऽयं विविधभययुक्तश्च मनुजः,
विधत्ते सन्तापं प्रशमसमभावाद् विरहितः।
शुभ प्रेक्षाध्यानं सहजसुखदं विश्ववरदं,
महाप्रज्ञः पूज्यो जिनपतिसरूपो गुरुवरः।।

विकासो बुद्धेः स्याद् विशद्तरभावेन सहितः ।
पवित्रा लेश्या चेत् प्रखरमतिलाभोऽपि सुफलः।
शिवा शिक्षाक्षेत्रे बुर्दजना नरमता जीवनकला,
महाप्रज्ञ पूज्यो जिनपतिसरूपो गुरुवरः।।

अहिंसा-शक्तीनां भवतु समवायः सुखकरः,
सदा यात्रा भूयात् विविधजनताया हितकृते।
जगत्यां तेजस्ते प्रहस्तुतमां व्याप्त-तिमिरं,
महाप्रज्ञ पूज्यो जिनपतिसरूपो गुरुवरः।।

दयाभावः पुण्यो विलसतितरां पूतहृदये,
प्रकामं वात्सल्यं प्रवहित सुधातुल्यममलम्।
प्रसन्ना मुद्रेयं स्फुरति वदने शान्ति-जननी,
महाप्रज्ञः पूज्यो जिनपतिसरूपो गुरुवरः।।

शरच्चन्द्रश्वेतो गणगगनभानुर्गतमलः,
सुलब्धा प्रख्यातिः प्रणयन-कलायां कविकुले।
प्रदत्तं विज्ञेम्यः कठिनतरपृच्छा-प्रतिवचः,
महाप्रज्ञः पूज्यो जिनपतिसरूपो गुरुवरः ।।

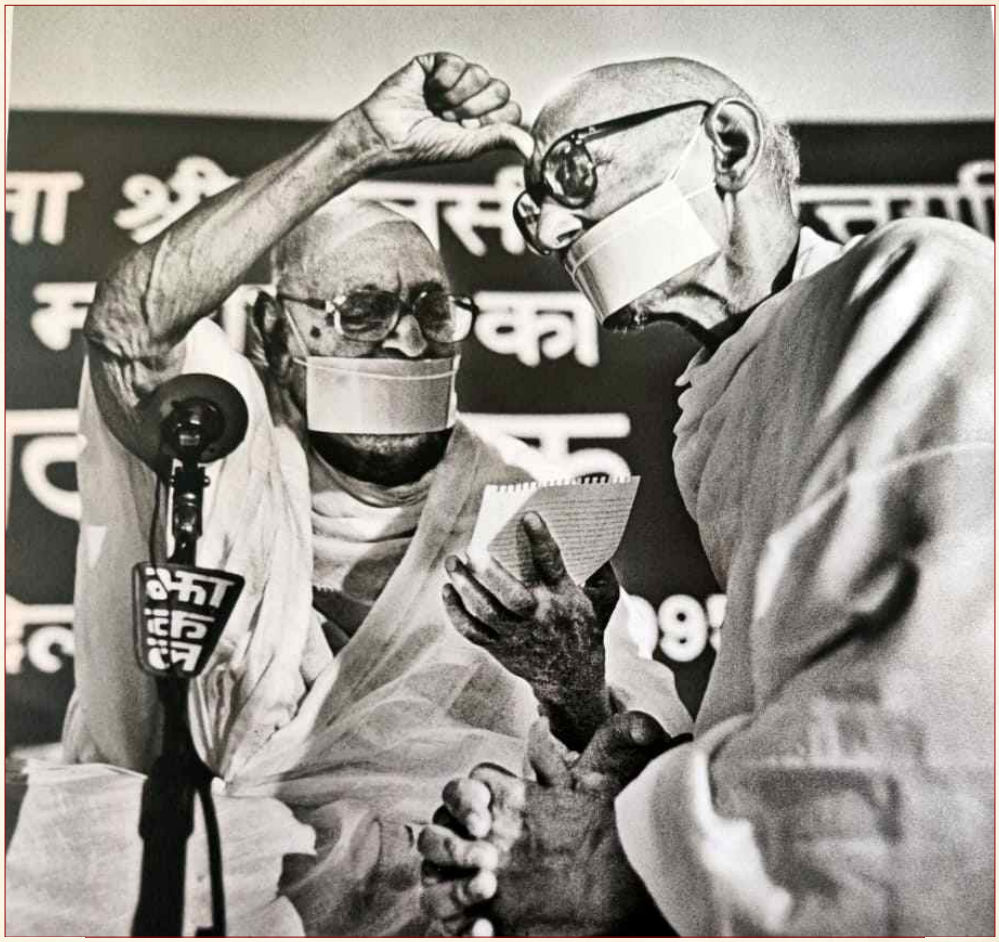

उत्तराधिकार-पत्र

अर्हम्

'नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स'
श्री भिक्षु भारीमाल ऋषिराय जयजश मघवा माणक डालचन्द
कालु गुरुभ्यो नमः।।

मैं आज तेरापंथ धर्मसंघ के 115वें मर्यादा-महोत्सव समारोह में अपने उत्तराधिकारी के रूप में महाप्रज्ञ शिष्य मुनि नथमल को नियुक्त करता हूँ। मुनि नथमल प्रारम्भ से ही मेरे प्रति समर्पित रहा है और अनिर्वचनीय आनन्द की अनुभूति करता रहा है। मेरा विश्वास है कि मुनि नथमल अपने दायित्व का समग्रता से निर्वाह करते हुए हमारे धर्मसंघ को उत्तरोत्तर विकासोन्मुख बनाता रहेगा।

आचार्य तुलसी
साक्ष्यः साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

विक्रम संवत् 2035 माघ शुक्ला 7
शनैश्चर बार, नाहर भवन
राजलदेसर (राज.)

आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अपने प्रभावी व्यक्तित्व, प्रखर कर्तृत्व एवं कुशल नेतृत्व से अपनी सुयोग्यता को सत्यापित किया। न केवल जैन समाज में अपितु पूरे भारतीय प्रबुद्ध समाज में आचार्यश्री महाप्रज्ञ का नाम एक मौलिक चिन्तक, मुर्धन्य साहित्यकार, महान दार्शनिक एवं मनीषी संत पुरुष के रूप में वस्तु सम्मान के साथ लिया जाता है। अपने महान अवदानों से जैन तेरापंथ तथा उसके माध्यम से दर्शन, धर्म, अध्यात्य, योग और भारतीय वाङ्मय की जो सेवा उन्होंने की है वह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जैन शासन, तेरापंथ, भारतीय समाज और इनसे भी आगे मानव जाति उनकी उपकृत है।

जीवन की जटिल समस्याओं का समुचित समाधान उनके प्रवचनों में तैरता हुआ सा नजर आता है। इस माध्यम से उन्होंने प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से समाज की बहुत बड़ी सेवा की है।

- आचार्य महाश्रमण

आगम संपादन कर जिसने छिपा हुआ कृर्तत्व निखारा।
जैन योग के पुनरुद्धारक महाप्रज्ञ को नमन हमारा।।

नई दृष्टि दे अपने युग को भर देता प्राणों में स्पन्दन
रहा महकता जो कण-कण में बन पावन संस्कृति का चंदन
चमक रहा गण-नभ में जिसका पौरुष होकर दिव्य सितारा।।

जिसके उजले अंतर्मन में करुणा का सागर लहराया
युग नयनों की विशद झील में आशाओं का कमल खिलाया
जिस अभिधा के पुण्य स्मरण से मझधारा में मिले किनारा।।

भूल नहीं पाएंगी सदियां जिनके अभिनव अवदानों को
किया प्रभावित जिसने अनगिन परम कोटि के विद्वानों को
विश्व क्षितिज पर अंकित जिसका इंद्रधनुष-सा नाम निहारा।।

अपनी जीवन-पोथी के पृष्ठ लिख रहे वे दिखलाओ
नया सृजन क्या किया वहां पर कुछ तो हमको भी बतलाओ
अगर असंभव यहां आगमन सपनों में ही करो इशारा।।

- साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

आचार्य श्री महाप्रज्ञ : परिचय एवं अलंकरण

आचार्य महाप्रज्ञ के अनमोल विचार

1. वही कार्य सफल होता है, जो अपनी अर्हता का विकास करता है।
2. मन की शांति और सामंजस्य चाहते हो तो कषाय को उपशांत करो।
3. मैत्री की महिमा का व्याख्यान करना सरल है। उसका प्रयोग करना कठिन है। कठिन को करने का प्रयत्न करो।
4. सहन करने की शक्ति का विकास, होगा तभी मैत्री का अनुभव होगा।
5. क्या अभ्यास के बिना साध्य सध सकता है? संभव नहीं, इसलिए अभ्यास पर ध्यान केन्द्रित हो।
6. किसका मूल्य ज्यादा – लिखने का या अभ्यास का? अभ्यास शून्य लेखन सार्थक नहीं होता।
7. अतीत को वर्तमान नहीं बनाया जा सकता, किंतु उससे अनुभव किया जा सकता है।
8. कल से आज अच्छा बने, आने वाला कल और अच्छा। यह संकल्प से संभव है।
9. मुक्त आकांक्षा और मुक्त विचार दोनों मोहक होते हैं। पर दोनों दुर्लभ हैं।
10. एक क्षण भी प्रमाद मत करो। वाक्य छोटा है साधना बहुत बड़ी है।
11. दूसरों को देखना जरूरी है, पर अपने को देखे बिना दूसरों को मत देखो।
12. दूसरों से मत पूछिए – मैं कैसा हूँ? अपने आप से पूछिए मैं कैसा हूँ?
13. अच्छा क्या है – याद रखना या भूलना? जो बात तनाव पैदा करे, उसे भूलने का अभ्यास करो सुखी बनोगे।
14. सुख कैसे मिले? दुख को जानने का प्रयत्न करो, सुख अपने आप आ जाएगा।
15. उत्सुकता क्या है? अपनी अपूर्णता की अनुभूति।
16. कुछ भी करो, उससे पहले प्रयोजन निश्चित करो। निरूद्देश्य कार्य क्या सफल हो सकता है?
17. वर्तमान को अतीत के दर्पण में पढ़ो। अनागत अच्छा होगा।
18. भावना का वेग कभी-कभी विवेक पर भी छा जाता है, इसलिए भावना पर नियंत्रण जरूरी है।
19. लिखने से ज्यादा जरूरी है पढ़ना। पढ़ने से ज्यादा जरूरी है मनन करना।
20. अनुकूल और प्रतिकूल दो शब्दों में बहुत कुछ छिपा है। इससे परे होना सुख का मार्ग है।
21. समीक्षा करो, तितीक्षा का विकास कितना हुआ है? वह सफलता का पहला सोपान है।
22. अपूर्ण में पूर्ण को खोजना सत्य की दिशा में प्रस्थान करना है। पूर्ण होने का अहं मत करो।
23. पूर्णिमा का चांद निर्मल सतर्कता से संपन्न होता है। जीवन में निर्मलता आए, सब कलाओं का विकास स्वत: होगा।
24. जितना प्रबल अहंकार, उतना प्रबल क्रोध। क्रोध कम करना चाहो, तो पहले अहंकार को कम करो।
25. पेड़ को मत देखो। बीज को देखो। छोटे से बीज का चमत्कार है, लघु महान बन गया।
26. तुम चाहते हो – सब मुझ पर विश्वास करें। पहले देखो – तुम अपने पर कितना विश्वास करते हो।
27. सोचना अच्छा है, पर उतना ही सोचो, जितना जरूरी हो। अच्छा भोजन भी सीमा से ज्यादा नहीं खाया जा सकता।
28. तुम क्या बनना चाहते हो? लक्ष्य का निर्धारण करो। लक्ष्य के अनुरूप प्रयोग करो, सफलता अवश्य मिलेगी।
29. समझने का प्रयत्न करो। जैसे-जैसे समझने का प्रयत्न करोगे, वैसे-वैसे नया सत्य मिलेगा।

30. अतीत को देखने का अभ्यास करो। उसके बिना वर्तमान कैसे देख सकोगे ?
31. समस्या कहां है–भीतर या बाहर ? यदि बाहर तो समाधान बाहर खोजो, भीतर समस्या का समाधान बाहर नहीं मिलेगा।
32. अपेक्षा की उपेक्षा मत करो। अपेक्षा को समझने का बोध ही वास्तव में बोधि है।
33. सेवा लेना जानते हो या देना भी जानते हो। यदि देना जानते हो तो लेने के लिए सोचना ही नहीं होगा।
34. दूसरे के सहारे चलो पर अपने पैरों की ताकत कम मत करो। दूसरों का सहयोग तभी मिलेगा जब तुम्हारे पैर ताकतवर हो।
35. घड़ी की सुई अपने नियम से चलती है। इसलिए लोग उस पर विश्वास करते हैं। नियम का सम्मान करो, विश्वास अपने आप बढ़ेगा।
36. समस्या का समाधान करने की कला है संतुलन।
37. संक्षेप और विस्तार दो दृष्टियां हैं। केवल विस्तार नहीं, संक्षेप भी जरूरी है।
38. यात्रा हितकर है। इससे जनता का हित होता है। क्या अंर्तयात्रा अंतर यात्रा के बिना वह संभव है!
39. शरीर बल ज्यादा जरूरी है या मनोबल ? इसका निर्णय करने वाला है – भावबल।
40. लक्ष्य का निर्धारण करो। लक्ष्य स्पष्ट होने पर दिशा निश्चित हो जाती है और दृष्टि स्पष्ट। सफलता की पृष्ठभूमि तैयार हो जाती है।
41. जो तुम्हारा है उससे तुम दूर भागते हो। जो तुम्हारा नहीं है, उसे खोज रहे हो, क्या तुम्हारी खोज सफल होगी ?
42. अनुशासन शक्तिशाली नेतृत्व की कसौटी है।
43. अनुशासन वह है जिसके आगे–आगे स्वतंत्रता की लौ जलती है पीछे–पीछे समता की अनुभूति चलती है।
44. अनुशासन का प्रारंभ स्वयं से।
45. अनुशासन का पाठ कांटों से नहीं फूलों से भरा है।
46. विकास का दूसरा नाम अनुशासन जीवन की सर्वोत्तम उपलब्धि।
47. कवि के समान चंचल मन को शिक्षित करना ही अनुशासन।
48. अनुशासन की लक्ष्मण रेखा का उल्लंघन करते ही विपदा का पहाड़ टूट पड़ता है।
49. अनुशासनविहीन विकास उच्छृंखलता पैदा करता है।
50. विकासशील अनुशासन जड़ता पैदा करता है।
51. मन के पागलपन ने जब–जब ज्वालामुखी उभारा तब–तब अनुशासन ही इस नर को सदा उबारा।
52. अनुशासन को भार नहीं उपहार मानोगे, तो अनुशासन के फूलों से समर्पण का पराग स्वत: फूटेगा।
53. अनुशासन वह बुनियादी ईंट है जिसके आधार पर जीवन मर्यादा का समुद्र लहरा उठता है।
54. अनुशासन वह किरण है जिसके जीवन की अंधियारी राहों में आलोक बिछा देती है।
55. सबसे बड़ा अनुशासन आत्मानुशासन।
56. अनुशासन रोशनी है सब कलाओं की जननी है।
57. अनुशासन की गंगोत्री से भी अमल, आचार, व्यवहार की धारा संभव। बड़ा मूल्यांकन है – उसे जीवन में।

आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा ऐतिहासिक दुर्लभ मंत्र

चिलचिलाती धूप वाली रश्मियां हमें अनुबन्धित कर रही है, योगसाधना के महासूर्य आचार्य महाप्रज्ञ जी को श्रद्धासिक्त नमन करते हुए जिन्होंने समाज को इतिहास के दुर्लभ मंत्रों का दस्तावेज दिया। जिस प्रकार भगवान शिव ने समुद्र मंथन करके अमृत निकाला था वैसे ही आचार्य महाप्रज्ञ जी ने आगमों का गहन अध्ययन करके हमें प्रभावशाली मंत्रों के रूप में अमृत पान करवाया। हम आचार्य महाप्रज्ञ को आधुनिक युग का शिव भी कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। जन्मशताब्दी वर्ष पर प्रस्तुत कर रहे हैं महाप्रज्ञ जी के प्रभावशाली मंत्र, जिन्हें हम अपने जीवन में प्रयोग करें तो अनेक अधि, व्याधि, समस्या, कष्ट संकट से उबर सकते हैं। बस जरूरत है दृढ़ शक्ति एवं संकल्प के साथ इन मंत्रों की साधना की।

1. **मन्त्र** **यशवर्धक**

णमो अरहंताणं णमों सिद्धाणं णमो आयरियाणं णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रं ह्रः नमः स्वाहा।

परिणाम – यश प्राप्त होता है। आरोग्य बढ़ता है। प्रतिदिन एक माला सवा लाख जप कर उसे सिद्ध करें।

2. मन्त्र **वचनसिद्धि**

ऐं ह्रौं झां झीं।

सुविहिं च पुप्फदंतं सीयलसिज्जंस वासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं धम्मं संतिं च वंदामि।।

स्वाहा।

मंत्र संख्या – 1211 बार। परिणाम – जो कहते हैं वहीं होता है। शत्रु का भय दूर होता है। राज्य में महत्व व प्रतिष्ठा बढ़ती है।

3. **मन्त्र** **अर्हत् की अर्हता**

अर्हं अ सि आ उ सा णमो अरहंताणं नमः।।

मन्त्र संख्या – प्रतिदिन एक माला। प्रयोग विधि – चित को आनंद केन्द्र पर केन्द्रित कर जप करें।

परिणाम – कल्याणकारी वातावरण का निर्माण व मोक्ष साधना की सिद्धि प्राप्त होती है।

4. **मन्त्र** **कल्याण करः इष्ट सिद्धि**

ह्रीं श्रीं कलि कुण्ड स्वामिने नमः।

मन्त्र संख्या – प्रतिदिन एक माला।

परिणाम – विघ्न निवारण और कल्याण का प्रवर्तन होता है। प्रयोजन सिद्ध होते हैं।

5. **मन्त्र** **सन्मति प्रदायक**

सुमति जिनेश्वर साहिब शोभता सुमति करण संसार।
सुमति जप्यां थी सुमति बधै धणी, सुमति सुमति-दातार।।

मन्त्र संख्या – प्रतिदिन एक माला फेरें। परिणाम – चिन्तन सम्यक् बनता है।

6. **मन्त्र** **संपदा**

अरिहंत सिद्ध आयरियउवज्झाय सव्वसाहूणं।

मन्त्र संख्या – प्रतिदिन एक माला। परिणाम संपदा की प्राप्ति।

7. **मन्त्र** **सफलता**

भक्तामर प्रणत-मौलिमणि-प्रभाणा-मुद्योतकं दलित-पाप-तमोवितानम्।
सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा-वालम्बनं भवजले पततां जनानाम्।।

मन्त्र संख्या – प्रतिदिन एक माला। परिणाम – प्रत्येक क्षेत्र में लाभ, सफलता और सम्पदा की प्राप्ति।

8. **मन्त्र** **दिन का मंगल प्रारम्भ**

सिद्धा

मन्त्र संख्या – एक श्वास में 21 बार अथवा 32 बार

प्रयोग विधि – सूर्योदय के समय मंत्र का प्रयोग करें।

परिणाम – 1. मंगल मय वातावरण 2. इष्ट सिद्धि।

9. **मन्त्र** **दुर्लभ वस्तु की प्राप्ति**

ह्रीं अर्हं संभवनाथाय नमः।

मन्त्र संख्या – प्रतिदिन एक माला। परिणाम – नई वस्तु की उत्पत्ति, प्राप्ति।

10. **मन्त्र** **एकाग्रता**

अ सि आ उ सा।

प्रयोग विधि – अ – नाभि सि – मस्तक आ – कण्ठ उ – हृदय सा – मुख

कालमान् – प्रारम्भ में 9 आवृत्ति करें। धीरे-धीरे अभ्यास कर प्रतिदिन 108 आवृत्ति करें।

परिणाम – एकाग्रता की सिद्धि और विघ्न-बाधा निवारण।

11. **मन्त्र** **सौभाग्यवर्धक**

ह्रीं श्रीं अर्हं पद्मप्रभवे नमः।

मन्त्र संख्या – प्रतिदिन एक माला

परिणाम – सौभाग्य की वृद्धि होती है।

12. **मन्त्र** **बुद्धिवर्धक**

णमो अरहंताणं वद वद वाग्वादिनी स्वाहा

मंत्र संख्या – प्रतिदिन एक माला

परिणाम – स्मरणशक्ति बढ़ती है।

13. **मन्त्र** **बुद्धिवर्धक**

ह्रीं श्रीं अर्हं सुविधिनाथाय नमः।

मंत्र संख्या – प्रतिदिन एक माला

परिणाम – बुद्धि (मेधा) का विकास होता है।

14. **मन्त्र** **ऋद्धिवर्धक**

ह्रीं श्रीं अर्हं महावीराय नमः।

मंत्र संख्या – प्रतिदन एक माला

परिणाम – आध्यात्मिक ऋद्धि का विकास होता है।

15. **मन्त्र** **ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक**

ह्रीं णमो अरहंताणं मम ऋद्धि वृद्धि समीहितं कुरु कुरु स्वाहा।

मंत्र संख्या – त्रिसन्ध्या में 21 बार।

परिणाम – ऋद्धि-सिद्धि की प्राप्ति होती है।

16. **मन्त्र** **आध्यात्मिक संपदा**

उन्निद्रेहम-नवपंकजपुंञ्जकान्ती

पर्युल्लसन नश्वमयूखशिखाभिरामौ।

पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धतः

पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति।।

मंत्र संख्या – प्रतिदिन एक माला।

परिणाम – आध्यात्मिक लक्ष्मी का वरण होता है।

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी आचार्य महाप्रज्ञ

पूर्व जन्मों के शुभ पुण्यों से, तेरापंथ शासन को पाया,
तुलसी सा विद्या गुरु पाकर, पायी गहरी शीतल छाया ।
दृढ़ संकल्प और समर्पण ने, नत्थू को महाप्रज्ञ बनाया,
ज्ञान की गंगा बहाकर, तिमिर विश्व का आप ने हटाया ।।

जीवन विज्ञान प्रेक्षाध्यान द्वारा, सोये मानव को जगाया,
कला जीने की सीखा कर, विश्व शांति का पाठ पढ़ाया ।
जन्मशती पर महिला मंडल, श्रद्धार्पण से शीश नवाया,
याद रहेगा सदियों-सदियों, महाप्रज्ञ का पावन साया।

आचार्यश्री तुलसी ने कहा - मेरे जीवन की अनेक उपलब्धियों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि है कि मैंने एक योग्य और योग्यवर ही नहीं योग्यतम उत्तराधिकारी को पाया है।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ योग्यतम उत्तराधिकारी कैसे बने ? उनकी योग्यता में ऐसा क्या था, देखते हैं उनके जीवन में से.....

आचार्यश्री महाप्रज्ञ का जन्म खुले आकाश के नीचे धरती पर हुआ। जिस प्रकार आकाश व्यापक, विशाल व सबको आश्रय देने वाला असीमता के लिए हुए हैं उसी प्रकार आचार्य महाप्रज्ञ ने अपनी प्रज्ञा रश्मियों से पूरी मानवता को एक अद्‌भुत अद्वितीय आलोक प्रदान किया है। वह किस प्रकार अलौकिक पुरुष बने इसके लिए मैं कई बिंदुओं पर लिखना चाहूंगी।

स्वस्थता के प्रति जागरूकता - आचार्यश्री महाप्रज्ञ सरस्वती के साक्षात पर्याय थे। उन्होंने इतना पढ़ा, इतना अनुसंधान व प्रयोग किए जिससे जाना कि व्यक्ति को सबसे पहले स्वस्थ रहना चाहिए। स्वस्थ व्यक्ति के ही स्वस्थ मस्तिक व स्वस्थ चित होता है। स्वस्थ चित में ही बुद्धि की स्फूरणा होती है। स्वस्थ वह है जिसका शरीर, मन, बुद्धि, व भाव सब स्वस्थ होते हैं। स्वस्थ व्यक्ति नए-नए चिंतन से विकास के नए-नए द्वार खोलता है, ऐसे विकास के पुरोधा थे - आचार्य महाप्रज्ञ ।

व्यक्तित्व विकास - आचार्य महाप्रज्ञ विद्या और साधना के संगम थे। व्यक्तित्व विकास के लिए चाहिए - मन की एकाग्रता, संकल्प शक्ति और प्रशिक्षण। आचार्य महाप्रज्ञ प्रेक्षाध्यान के प्रयोग स्वयं पर कर रसायनों में बदलाव व परिवर्तन लाने वाले प्रयास से स्वयं के व्यक्तित्व को निखारा जन-जन में इन प्रयोगों से सामान्य जनता के व्यक्तित्व विकास में अभूतपूर्व परिवर्तन कर अध्यात्म जगत के शिखर पुरुष कहलाए।

अहिंसा प्रशिक्षण - आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा के अग्रदूत थे। विश्व में हिंसा का प्रशिक्षण तो देखा जाता है लेकिन अहिंसा प्रशिक्षण की चर्चा नहीं होती। उन्होंने हिंसा के मूल कारणों को विश्लेषित कर उन्हें निर्मूल कर अहिंसा की प्रेरणा दी। अहिंसा और नैतिकता के संदेश से अनुप्राणित हैं उनकी अहिंसा यात्रा। हिंसा से धधकते गुजरात को आचार्यश्री अहिंसा यात्रा की शीतल बयार से शांत किया। ऐसे थे अहिंसा के महान प्रणेता।

समर्पण - विलक्षण गुरु के विनम्र शिष्य थे आचार्य महाप्रज्ञ। उनकी योग्यता का रहस्य है अखंड श्रद्धा, अक्षुण्ण समर्पण। लक्ष्य व सत्य के प्रति समर्पण, गुरु के मार्गदर्शक के प्रति समर्पण। आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन में इन सब का नैसर्गिक समर्पण था। जैसे नदी सागर में मिलने के पश्चात नदी नहीं रहती, ऐसे ही गुरु के प्रति संपूर्ण समर्पण से अनेक बड़े-बड़े कार्य कर डाले जैसे अच्छे कवि, वक्ता, लेखक, संस्कृत के प्रकांड विद्वान और आगम संपादन जैसे महान कार्य कर जैन वाङमय को विस्तार दिया। यह सब कार्य गुरु के प्रति अगाढ़ श्रद्धा व समर्पण से ही हो पाया। आचार्य महाप्रज्ञ ने एक बार यह प्रतिज्ञा ली थी कि मैं कभी मुनितुलसी (विद्या गुरु) को नाराज नहीं करूंगा। इस प्रतिज्ञा से वह नत्थू से महाप्रज्ञ और महाप्रज्ञ से आचार्य महाप्रज्ञ बन पाए।

परिष्कारक - वे अध्यात्म जगत के शिखर पुरुष थे। उन्होंने हमें सिखाया व्यवहार में जहां क्रूरता हो तो उसका परिष्कार करुणा, कोमलता, मृदुता से करें। धोखाधड़ी, मिलावट, लूटमार जैसे क्रूरता हमारे अंदर विद्यमान रहेगी तो यह भ्रष्टाचार बढ़ता रहेगा। हम आचार में परिष्कार

कर समता का विकास करें। स्वभाव में क्रोध, मान, माया, लोभ व वासना का परिष्कार करें। इसके लिए आचार्य प्रवर ने हमें सिखाया ध्यान व अनुप्रेक्षा करना। इसलिए वे आधुनिक युग के विवेकानंद कहलाए।

लक्ष्य के प्रति आस्था – महान लक्ष्य के बिना व्यक्ति महान नहीं बन सकता। लक्ष्य में विचार, व्यवहार और संस्कार तीनों एक दिशा में होने चाहिए। सफलता के लिए कल्पना नहीं सार्थक प्रयास भी जरूरी है। सीढ़ियों को देखते रहना ही पर्याप्त नहीं है, सीढ़ियों पर चढ़ना भी जरूरी है। ऐसा आपका मंतव्य था। पथ चाहे कितना भी लंबा हो, सही लक्ष्य मंजिल तक अवश्य पहुंचाएगा। हमने पढ़ा और सुना भी है आचार्य महाप्रज्ञ प्रारम्भ में अल्पज्ञ थे। उन्हें ठीक से चलना, पछेवड़ी ओढ़ना तक नहीं आता था और न ही उन्हें कुछ जल्दी से याद होता था, सीधे-साधे थे। पर जब मुनि तुलसी के पास पढ़ते थे तो पढ़ते-पढ़ते अपना लक्ष्य बना लेते थे कि मुझे आज इतने पद्य याद करने हैं, कविता बनाना है, भाषण बोलना है। अमूक विषय पर लिखना और मुनि तुलसी जो भी करने को कहते वह ही उनका लक्ष्य बन जाता और उसे वह हर हाल पूरा करते। ऐसे थे पुरुषार्थ के धनी आचार्य महाप्रज्ञ।

साहित्य सर्जक – आचार्य महाप्रज्ञ अपरिमित शब्दकोश के धनी थे। उन्होंने अपने जीवन में बहुत विषयों पर लिखा। वे संस्कृत, प्राकृत, हिंदी तीनों भाषाओं में ही लिखा। संस्कृत के आशुकवि थे, संस्कृत के प्रकांड पंडित थे। उन्होंने 300 के लगभग साहित्य की रचना की। आगम संपादन का महान कार्य किया। अध्यात्म व विज्ञान का समन्वय कर साहित्य की रचना की। 'मैं हूं अपने भाग्य का विधाता' पुस्तक के पाठक सुप्रीम कोर्ट के वकील श्री एस. के. सबर लिखते हैं – मैंने यह पुस्तक सांगोपांग पढ़ी है, इस पुस्तक ने ही मेरे विचारों का कायाकल्प कर दिया। 'मैं मेरा मन मेरी शांति' का पाठक एक व्यापारी कहता है – मैं जब भी पुस्तक पढ़ता हूं, मुझे अपनी समस्या का समाधान मिल जाता है। अटल बिहारी वाजपेयी कहते हैं – मैं महाप्रज्ञ के साहित्य का प्रेमी पाठक हूं, मुझे इससे मानसिक खुराक मिलती है। डॉ. दयानंद भार्गव ने लिखा – महाप्रज्ञ को पढ़ने से नई दृष्टि मिलती है। सामान्यता देखा जाता है कुछ व्यक्ति ज्ञानी होते हैं, पर वक्ता नहीं होते, कुछ वक्ता होते हैं पर लेखक नहीं और कुछ लेखक हो सकते हैं पर काव्य निर्माण की कला में दक्ष नहीं होते। इन सारी विलक्षणताओं के एक साथ आचार्य महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व में देखी जा सकती हैं।

वाणी की सरसता – आचार्य महाप्रज्ञ अंतर्दृष्टा थे। व्यक्ति व समय की उन्हें पहचान थी। जीवन तो एक बुझे हुए दीपक की तरह होता है, जो व्यक्ति उसमें सहजता, सरलता एवं सरसता गुण रूपी तेल का सिंचन करता है, वह अपने जीवन को समरस बना लेता है। जीवन में सरसता के लिए संवेदनशीलता, सम्यक चरित्र, कृतज्ञता का भाव व सबके प्रति स्नेह का भाव भी होना जरूरी है। आचार्य के व्यवहार में, व्याख्यान में, दिनचर्या में सरसता के दर्शन होते थे। वे उलहाना तो किसी को जल्दी से देते ही नहीं थे। कम बोलना उनकी आदत थी इसलिए पंचमूकाल के महावीर कहलाए।

जीवन-विज्ञान, प्रेक्षाध्यान प्रदाता – जैन धर्म की जुड़ी विस्मृत ध्यान प्रणाली को प्रेक्षाध्यान के रूप में कल्याण हेतु प्रस्तुत करने वाले प्रज्ञा जगत के मसीहा! आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने सुप्त चेतना को जगाने हेतु चेतन्य केंद्रों पर जप, अनुष्ठान, अनुप्रेक्षा, ध्यान के द्वारा जागृत करने पर बल दिया। उनका मंतव्य था कि इन केन्द्रों के माध्यम से शरीरस्थ पूरी चेतना को हम जगा सकते हैं। चेतना के साथ ही हमारी अधिभौतिक शक्तियां जुड़ी हुई हैं। चेतना के जागृत होते ही यह शक्तियां सक्रिय हो उठती है।

प्रेक्षाध्यान द्वारा आधि, व्याधि एवं उपाधि तीनों का समाधान हो सकता है। शरीर से व्याधि मिटे इसमें कोई आश्चर्य नहीं पर मानसिक व देवकृत समस्याओं का समाधान पाकर व्यक्ति कृत-कृत हो जाता है। प्रेक्षाध्यान द्वारा संपूर्ण शरीर में कैंसर जैसी बीमारी भी ठीक हो सकती है। प्रेक्षाध्यान शिविरों में हृदय रोगी रोगियों को भी लाभ मिलता है। दस हजार से अधिक रोगियों ने प्रेक्षा चिकित्सा से लाभ प्राप्त किया है।

इस प्रकार आचार्यश्री महाप्रज्ञ के बहुआयामी विकास की पृष्ठभूमि रही – उनकी प्रखर संयम साधना, गहन तप, दृढ़ निष्ठा, अनेकांत दर्शन, स्वस्थ चिंतन, प्रदीप पौरुष, गुरु के प्रति समर्पण, आचार निष्ठा एवं चारित्रिक उज्जवला इत्यादि। आचार्यश्री ने छोटे से शासनकाल में जो श्रम की बूंदे बहाई, उसकी साक्षी है सदूर अहिंसा यात्रा। **ऐसे महान आचार्य के जन्म शताब्दी पर संपूर्ण नारी समाज भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।**

युग के महान योगी हो तुम, तुम हो दिव्य दिवाकर।
मनस्वी मूर्धन्य विद्वान हो तुम, तुम हो परम प्रभाकर।।

गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी का 24वां महाप्रयाण दिवस

उर्जस्वल व्यक्तित्व की सुदर्शन पहचान गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी के दिव्य चरणों में महिला समाज की श्रद्धा का कृतज्ञता भरा समर्पण। आकर्षक, पावन और वात्सल्यामृत के पटोधर नवमाधिशास्ता के हर इंगित में प्रदीप्त आत्मानुशासन, सहज कल्पना और महान् सृजनशीलता की झलक हर श्रद्धाशील को अभिभूत करने वाली थी, जिसे देखकर दृष्टा भाव विभोर और श्रद्धानत हो जाता था। उनकी कान्त कमनीय काया में निर्मल संयम की गंगा सतल प्रवाहित होती थी, जिसकी मैत्री, समता, सौहार्द, समन्वय एवं जन जीवन की पीड़ा हरने वाली उर्मियां प्रतिपल शीतलता प्रदान करती थी।

अपने जीवन और धर्मसंघ की सजीव प्रयोगशाला में गुरुदेव जितने मौलिक परम्पराओं के संपोषक थे, उतने ही युगानुरूप नवीनता को स्वीकार करने में सक्षम सिद्ध पुरुष थे। उन्होंने धर्मसंघ में अनेक कृतियों का सृजन किया। उन्हीं के द्वारा सृजित आचार्य महाश्रमण जी धर्मसंघ के भाल पर मुकुट मणि की तरह सुशोभित हो रहे हैं। उन्हीं की अनुपम कृति साध्वी प्रमुखश्री कनकप्रभाजी आज असाधारण साध्वी प्रमुखाश्री जी के रूप में सुशोभित हो रही हैं।

व्यक्ति के रूप में आज वे इस क्षितिज से अदृश्य हो चुके हैं किन्तु अब भी उनका कालजयी कृतित्व और अनुपमेय व्यक्तित्व जनमानस को प्रभावित कर रहा है। गुरुदेव ने व्यक्तित्व निर्माण में नारी की भूमिका को समझा एवं साथ ही साथ उसमें छिपी सर्जक एवं समाजोद्धारक शक्ति को भी परखा। जिस प्रकार हनुमान जी की समुद्र पार करने की सोई शक्ति को जामबंत की प्रेरणाओं ने जागृत किया था। उसी प्रकार गुरुदेव श्री तुलसी की प्रेरणाओं एवं प्रोत्साहन ने तेरापंथ समाज की घूंघट में छिपी बहनों को कर्मठ बनाया एवं आज हम सब जहां खड़ी हैं उस मंजिल तक हमें पहुंचाया।

ऐसे समर्थ, स्थितप्रज्ञ, लोकनायक, युग पुरुष, परम उपकारी गुरुवर के चरणों में श्रद्धांजलि युत कोटिशः शत्-शत् नमन् ।

पर्यावरण की रक्षा की जा सकती है

मोह व महत्वकांक्षा एक ऐसी प्रबल शक्ति है जो आदमी से मनचाहा करवाती है। आपदाएं प्राकृतिक भी होती हैं, मानव निर्मित भी होती है। दिन-रात कटते पेड़, बर्मों से उड़ाए जा रहे पहाड़, खेतों की जगह बस रहे नगर, शहर, लुप्त हो रही नदियां, समाप्त हो रही पशु-पक्षियों की जातियां, प्रतिदिन कार्बन डाइआक्साइड के बढ़ने से गर्मी का बढ़ता प्रकोप यानि ग्लोबल वार्मिंग। सिंगल प्लास्टिक के प्रयोग से धरती से अम्बर तक कचरे के ढ़ेर जिससे पर्यावरण प्रदुषण फैर रहा है। इन सबसे ज्यादा एक देश की दूसरे देश से लड़ाई- जिसमें करोड़ों अरबों के अस्त्र-शस्त्र बनाए जाते हैं ऐसे अणुबम एवं परमाणु और देखें तो ऐसे वायरस (विषाणु) तैयार किए जा रह है जिनको दूसरे देशों में भेज कर महामारी फैलाकर देश के देश समाप्त कर सकते हैं। ऐसे में हमारा पर्यावरण कैसे सुरक्षित रह सकता है। इसके जिम्मेदार और कोई नहीं, हम ही है। हमारी स्वार्थी भावनाओं व असीमित आवश्यकताओं ने ऐसा तांडव रचा है कि सब कुछ तबाह हो रहा है।

ऐसी स्थिति में चारों तरफ निराशा, उदासीनता एवं विवशता अपने पांव पसार रही है। पर निराशा और विवशता किसी समस्या का समाधान नहीं उसका एक मात्र समाधान है संयम, सादमी, सदाचार एवं अणुव्रत को जीवन में अपनाया जाए। पर्यावरण को शुद्ध बनाने के लिए प्रकृति का दोहन न करके प्रकृति व मानव के बीच संतुलन व सामंजस्य ही स्वस्थ जीवन शैली का आधार है। सिंगल यूज प्लास्टिक का प्रयोग न करेंगे। आईये हम सब इस बार पर्यावरण दिवस (5 जून 2020) पर शपथ लें कि हम अधिक से अधिक पेड़ लगाएंगे और पर्यावरण का स्वच्छ बनायेंगे। फल-फूल छायादार पेड़ पौधे लगाएं जाएं। जिससे शांति प्राप्त हो सके। आचार्य तुलसी ने श्रावक संबोध में लिखा है -

इच्छा परिमाण अणुव्रत अपरिग्रह का, हो जाता स्वयं शमन आर्थिक विग्रह का।
आवश्यकता आकांक्षा एक नहीं है, आकांक्षा पर हो अंकुश, यही सही है।

आपकी अपनी

पुष्पा बैद

आलौकिक प्रज्ञा के धनी आचार्य महाप्रज्ञ सूर्य सा उनका तेजस्वी चरित्र, चन्द्र सा उनका समोहक व्यवहार, सिद्ध पुरुष सा अतीन्द्रिय ज्ञान, क्रान्तिकारी वीर सा उत्सर्ग, बल जो युग-युगान्तर तक व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व को सद्प्रेरणा-सद्प्रकाश सत्य और साहस देते रहेंगे।

आज शताब्दी वर्ष पर प्रज्ञा के शिखर पुरुष को समूचा महिला समाज श्रद्धा प्रणति प्रस्तुत करता है।

- शान्ता पुगलिया
प्रधान ट्रस्टी, अ.भा.ते.म.मं.

His holiness Acharya Mahapragya, the tenth spiritual Guru of the Jain Shwetambar Terapanth community, whose great mental clarity, objective, thinking and wisdom came through in every moment of his life. A Multidimensional personality and a renowned scholar of Indian and western philosophy and religion, His Holiness got education under the guidance of Aacharya Shri Tulsi , authored numerous books, walked more than 10000 kilometres on feet over his life and visited 10 thousand villages, to spread the message of Nonviolence-Ahimsa His major works include Contemplative Meditation for the virtue of tolerance and reconciliation, namely Preksha Dhyan. From sensuous poetry to Voluptuous epics, facts that were both explicit and explorative and even practices ,Mahapragyaji introduced a range of innovative techniques to explain and transmit his teachings. Using an array of stories and myths, he started with a historical account of the Agams and went on further to delve into the philosophy of the religion. His books on the tenets that form the Bedrock of Tatvagyan are illuminating, be it the 9 Tatwas, Anekantwad, the belief in the multidimensionality of truth, the interplay between Desire and Restraint ,which is the heart of Jainism. On "HIS" birth century,I Bow down to him ,not to the almighty but to the one who has given meaning to our existence. Thy thought us, Tolerance, Endurance, Forgiveness and Modesty are invaluable Jewels to be treasured, to achieve a blissful life!!

Abhivandan

- CA Taruna Bohra
Gen. Secretary
ABTMM

नेहा जैन, बीकानेर

मरूस्थल में बहती मंदाकिनी, नव संदेश देती रेतीली धरती, बड़े-बड़े टीलों की सुन्दरतम सुषमा को निहारती आँखों की रोशनी, चारों तरफ चिलचिलाती धूप का सम्राज्य। ऐसे रेगिस्तान की महिमा को द्विगुषित करने राजस्थान की उस बंजर भूमि में एक नंद ने जन्म लिया। जिसकी आँखों में लावण्य टपकता था। उन्नत भाल में चमकती भाग्य रेखाएं संचित पुण्याई से प्रबल बनी हुई थी। सम्पूर्ण मुख मुद्रा का अवलोकन करने वाले प्रथम दर्शन में आकर्षित हो जाते थे। नत्थू से नथमल और महर्षि महाप्रज्ञ की जीवन यात्रा अध्यात्म के आलोक में नव प्रकाश दिखाकर धर्म के दसों प्रकारों को अपने में समेट लेती है। महाप्रज्ञ आज भी हमारे कण-कण में रग-रग में बसे हुए हैं। उनका नाम चिंतामणि रत्न, उनका साहित्य कामधेनु तथा उनके द्वारा प्रदत अवदान कल्पवृक्ष हैं।

- तारा सुराणा, संरक्षिका
(अ.भा.ते.म.मं.)

''आचार्य महाप्रज्ञ''

आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन को 100 शब्दों में व्यक्त करना अत्यंत कठिन है। सन् 2005 में, आचार्य महाप्रज्ञजी के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल के अंतर्गत मेरा राष्ट्रीय अध्यक्षा का मनोनयन हुआ। आचार्यश्री द्वारा सुनाई गई मांगलिक से मुझ में अंतत शक्ति का संचार हुआ और अभी तक उस ध्वनि से मेरे अंतर्मन को शांति प्राप्त होती है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ- एक महामानव, साहित्यकार, वैज्ञानिक, प्रेक्षाध्यापक, अध्यात्म योगी थे। ऐसे संत आत्मा का चिंतन कभी एकांगी नहीं रहा।

उनके बताए हुए सुखी परिवार, जीवन निर्माण के दो महत्वपूर्ण सूत्र - आश्वास और विश्वास मेरे जीवन के आधार है। अहिंसा यात्रा के अग्रदूत को श्रद्धासिक्त श्रद्धांजलि।

- सुशीला पटावरी, संरक्षिका

(अ.भा.ते.म.मं.)

तीर्थंकर के प्रतिनिधि सचमुच अनेक ऊँचाइयों के शिखर पुरुष थे महात्मा महाप्रज्ञ। सौभाग्यशाली है ये जीवन जो महाप्रज्ञ युग का साक्षी बना। उनके दर्शन कर, उनके चरणों में बैठकर उनकी कृपा का आचमन कर मन मानसरोवर सा भर जाता, जितनी बार उनके तेजस्वी आभामंडल को निहारा, कुछ नया पाया। जैसे -

एक पैर उठा तो लगता जैसे धर्म खड़ा है, धर्म खड़ा है
दूजा पैर उठा तो लगता सूर्य चला है, सूर्य चला है
कदम तीसरा पड़ा धरा पर तम पिघला है, तम पिघला है
चौथा चरण अंगद के जैसा, मनचाहा संकल्प फला है
कदम पाँचवा पग पग मंगल,प्रज्ञा का निर्झर झरता है
प्रेक्षा ध्यान, प्रयोग प्रशिक्षण, आत्म शक्ति जागृत करता है
आगम सम्पादन कर अर्हत वांग्मय का भंडार भरा है
सत्य, शिवम् सुंदरम वाणी लाखों का बेड़ा पार पड़ा है
कालजयी पद चिन्ह तुम्हारे, युगों-युगों तक अमीट रहेंगे
धरती तो क्या, अम्बर में तेरी कथा कहानी देव कहेंगे।

- सायर बैंगानी, संरक्षिका

(अ.भा.ते.म.मं.)

दिव्य आत्मा को शत्-शत् नमन

अंतर्प्रज्ञा से जागृत उस महान दिव्य आत्मा का नाम है आचार्य महाप्रज्ञ जिन्होंने वैचारिक जगत को नए अवदान दिए, बौद्धिक जगत को उपकृत किया और अध्यात्म जगत में नए आयाम उद्छाटित किए। एक ध्यानी योगी साधक जब समाज की हित चिंता के लिए साधना की अतल गहराई में बैठकर जीवन के अनमोल मोती प्रस्तुत करता है तो उससे संपूर्ण मानवता लाभान्वित होती है। प्रेक्षाध्यान, लेश्याध्यान, जीवन-विज्ञान आदि कई अवदान उनकी अंतर्दृष्टि से स्वतः प्रस्फुटित हुए है। उन्होंने सदियों से लुप्त होती जा रही ध्यान की, परंपरा को पुनर्जीवित कर दुनिया के सामने प्रस्तुत किया। उनकी जन्म शताब्दी के अवसर पर उनके इन अवदानों को जीवन में आत्मसात करने का संकल्प ही सच्ची भावांजलि होगा।

ऐसे परम उपकारी गुरु को जन्म शताब्दी के अवसर पर श्रद्धासिक्त शत्-शत् नमन्।

- प्रकाश देवी तातेड़, ट्रस्टी

(अ.भा.ते.म.मं.)

प्रज्ञा पुरुष आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी को श्रद्धासिक्त नमन्

कुछ महापुरुष ऐसे होते हैं जिनका नाम सदियों तक जनमानस पर अंकित रहता है। भारतीय संत परंपरा में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का नाम विशेष उज्जवला के साथ चमक रहा है। आप अर्तीद्रिय प्रतिमा के साक्षात प्रतिरूप थे। हिंदी संस्कृत एवं प्राकृत भाषाओं के महान साहित्यकार और प्रखर आशु कवि थे। आगम संपादन के द्वारा आपने जैन शासन की अतुलनीय सेवा की तथा अनेकानेक अध्यात्मिक ग्रंथों की बेजोड़ रचना की। उनके जीवन में प्रज्ञा और पुरुषार्थ की समन्विति थी। आपने अपने भीतर झांकने के लिए प्रेक्षाध्यान पद्धति का अनुसंधान कर आपने मानव जाति पर बहुत बड़ा उपकार किया है।

ऐसे युग प्रधान महान गुरुवर के चरणों में उनकी जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में कोटि-कोटि अभिवंदना ।

- सौभाग बैद, ट्रस्टी,

(अ.भा.ते.म.मं.)

महाप्रज्ञ अभिवंदना

कलजयी व्यक्तित्व तुम्हारा, है असीम कर्तृत्व तुम्हारा।
कैसे शब्दों में बांधू मैं, यह विराट अस्तित्व तुम्हारा ।।
तेरापंथ के शिखर शिरोमणि, प्रज्ञा के उत्तुंग हिमालय ।
विश्व क्षितिज पर शांतिदूत बन, नव चिंतन के बने महालय।।
महावीर की वाणी को जब, नए अर्थ के साथ परोसा ।
मानवता खिल उठी धरा पर, मिला अहिंसा का संदेशा ।।
प्रखर प्रवक्ता अनेकांत के, विद्वद जग के तुम ध्रुव तारे ।
शब्दों के ताने बाने में, दिए अर्थ को नए नजारे ।।
मिला अचिंतन से जो चिंतन, बन जाता वह अद्भुत सर्जन ।
प्रज्ञा के पावन निर्झर से, शुचिता मुदिता बहती छन छन ।।
पावन अवसर है शताब्दी का, वर मांगू मैं कैसे तुमसे ?
तुम अनंत विराट जगत में, प्रज्ञा सूरज बनकर चमके ।।
अज्ञ भले हूं प्रज्ञ बनूंगी, चिंतन की धारा बदलूंगी ।
अंतस में दर्शन कर तेरा, तुम सम बनने का वर लूंगी ।
तव चरणों में सदा रहूंगी, तव चरणों में सदा रहूंगी ।।

- कनक बरमेचा, ट्रस्टी
(अ.भा.ते.म.मं.)

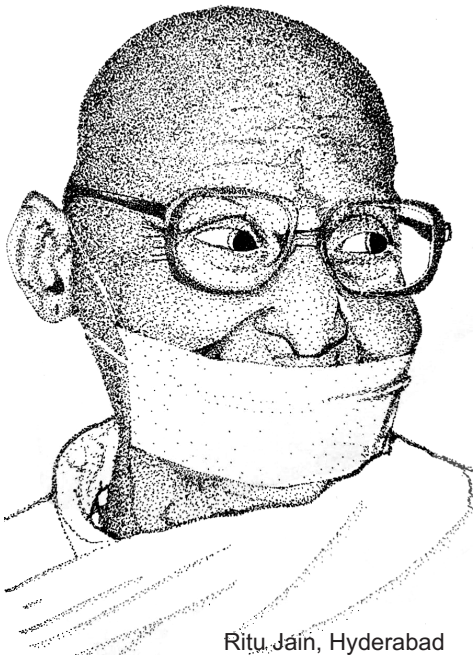
Ritu Jain, Hyderabad

राजस्थान के छोटे-से कस्बे टमकोर ग्राम के बालक नत्थू से बने तेरापंथ धर्मसंघ के दशमाधिशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ की यात्रा विराट व अद्भुत है। आचार्य महाप्रज्ञ ने जैन आगम के सम्पादन जैसा महान कार्य तो किया ही, साथ ही साथ ध्यान, योग, दर्शन, धर्म, संस्कृति, विज्ञान, जीवनशैली, व्याकरण, शिक्षा, साहित्य, राजनीति, समाजशास्त्र तथा अर्थशास्त्र जैसे तमाम विषयों पर कविता, लघुकथा, निबंध, संस्मरण तथा साक्षात्कार जैसी विधाओं में कलम चलाई है। जैन दर्शन के फलक को विस्तार देते हुए सभी धर्मावलम्बियों के लिए उसकी प्रासंगिकता भी सिद्ध की।

ऐसे महात्मा महाप्रज्ञ की जन्म-शताब्दी पर उन्हें शत-शत नमन्, वंदन !

- मधु दुगड़, ट्रस्टी
(अ.भा.ते.म.मं.)

अभिवन्दना..... तेरा तुझको अर्पण

हे महात्मा महाप्रज्ञ, अनुपम ज्ञान के गिरिनार।
अन्तर चेतना के विज्ञ तुम्हे अभिवन्दन शत बार।।

प्रज्ञालोक के रत्नाकर ने युग को दिया प्रेक्षा ध्यान।
अहिंसा के दिव्य प्रभाकर ने किया अनुप्रेक्षा का आह्वान।।

आभामंडल था जिनका तेजस्वी, अमूर्त चिन्तन के सूत्रधार।
मैं, मेरा मन, मेरी शान्ति के, सूत्रों का किया साक्षात्कार।।

हर व्यक्ति को जताया, मैं हूँ अपने भाग्य का निर्माता।
शान्ति की खोज से बनें, चित्त ओर मन के व्याख्याता।।

महाप्रज्ञ ने कहा करो चैतन्य केन्द्रों का जागरण,
अनेकान्त दृष्टि से सुलझाया मन के कायाकल्प का पर्यावरण ।

अवचेतन मन से सम्पर्क कर, किया चेतना का उर्ध्वारोहण ।
सम्बोधि की गीता से, कर्मवाद की ओर आरोहण ।

चिन्तन के परिमल से किया स्वयं का परिष्कार ।
अन्तःस्थल का स्पर्श पा किया आरोग्य का आविष्कार ।।

हे तुलसी की छाया महाश्रमण के चित्रकार ।
जन्म शताब्दी पर वन्दन शत्-शत् बार।।

सूरज बरड़िया जैन, ट्रस्टी
(अ.भा.ते.म.मं.)

भारतीय परम्परा के गुरु की महिमा अपरम्पार है। गुरु मोम की तरह मुलायम होते हैं। वे अपनी असीम कृपा से व असीम आशीर्वाद से शिष्य को तृप्त कर देते हैं। गुरु कठोर भी बनते हैं अतः गुरु को कुम्हार व मूर्तिकार की उपमा दी जाती है। कुम्हार अपनी थपकी दे-देकर मिट्टी को घड़ा बनाता है और मूर्तिकार छैनी हथोड़े से चोट लगाकर अनगढ़ पत्थर को मूर्ति का रूप देता है वैसे ही गुरु शिष्य को तराश व निखाकर सुयोग्य बनाता है।

आचार्य तुलसी ने मोम बनकर मुनि नथमल पर असीम वात्सल्य व आशीर्वाद दिया। कुम्हार व मूर्तिकार बनकर उनको तराशा व निखारा। गण मंदिर में आचार्य पद पर अपने हाथों से ही शोभायमान किया। आचार्य महाप्रज्ञ जी ने अपने गुरु की आज्ञा शिरोधार्य कर मानव सेवा के कार्य अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, आगम संपादन और साहित्य सृजन आदि को आगे बढ़ाते हुए गुरुद्वारा सौंपी गई गण सम्पदा को ऊँचाई प्रदान की।

दिया सूत्र सृजन और विसर्जन का अहिंसा का गाया संगान।
अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान से प्यासे जगत को नित नए अवदान ।

- प्रियंका जैन, ट्रस्टी
(अ.भा.ते.म.मं.)

आचार्य महाप्रज्ञ को शब्दों में उतारना उतना ही कठिन है, जितना तेजस्वी सूर्य के ताप को मापना। उसी दिव्य पुरुष को नमन करती हुई, अपनी अल्प प्रज्ञ से कुछ शब्द व्यक्त कर रही हूँ, नमन करती हूँ। टमकोर की उस भूमि को, माता बालू जी को जिसमें बालक नत्थू को जन्म दिया। नमन है आचार्य तुलसी को जिन्होंने अबोध बालक नत्थू से अपने समकक्ष आचार्य महाप्रज्ञ बनाकर, उसे विश्व की क्षितिज पर एक महान अध्यात्म योगी, अतींद्रिय चेतना जागृत ध्यानी, विश्व स्तर का दार्शनिक एवं एक अद्‌भुत आगम पुरुष के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया।

आपके प्रवचन, उपासना, आपका आत्मीय भाव, सरलता और सहजता ने इतना आकृष्ट किया कि कभी भी दूर जाने का मन ही नहीं करता था आपकी आंखों में उमड़ती करुणा एवं निराली छवि भीतर कब अपना स्थान बना लेती पता ही नहीं चलता। आपकी महानता, आपकी विशेषताएं, आप कितने आयामों के शिखर पुरुष हैं, यह मेरी समझ से परे है। मैं तो सिर्फ इतना कह सकती हूँ, मेरे पर उनका जो अनुग्रह एवं कृपा थी जिसका मुझे आज भी सात्विक गौरव है। उनके श्री चरणों में बारंबार नमन करती हूं।

– लता जैन, परामर्शक
(अ.भा.ते.म.मं.)

प्रज्ञा प्रवर आचार्यश्री महाप्रज्ञ

आचार्यश्री महाप्रज्ञ इस युग की एक ऐसी महान विभूति का नाम है जिन्होंने अपने गहन ज्ञान, दूरदर्शी दृष्टि एवं प्रज्ञा से पूरे विश्व को आलोकित किया। जैनाचार्यों की यशस्वी परंपरा में आचार्यश्री महाप्रज्ञ महान कीर्तिधर प्रभावी आचार्य हुए। उन्होंने प्रखर ऊर्जा पुंज बनकर अपनी उज्जवलतम आलोक रश्मियों से लगभग आठ दशक तक मानवता के पथ को आलोकित किया। वे संतता की दिव्य सुवास और चिंतन की दूधिया चांदनी से विश्व चेतना को प्रभावित करने वाले प्रज्ञा महर्षि थे।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ आत्म दृष्टा, युग दृष्टा एवं भविष्य दृष्टा थे। आत्म दृष्ट के रूप में उन्होंने धर्म और अध्यात्म के गूढ़ रहस्यों को आत्मसात किया। युग दृष्टा बनकर युगीन समस्याओं का समाधान दिया और भविष्य दृष्टा बनकर ऐसे अवदान दिए जो सुखद भविष्य को सुनिश्चित कर सकें। उन्होंने अपने उदात्त विचारों एवं कुशल कर्तृत्व से युग को सम्यक चिन्तन, सही दिशा एवं नया आलोक पथ दिया।

'आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी' के पुनीत और ऐतिहासिक अवसर पर उस महान आत्मा को शत्-शत् नमन।

– संतोष चोरड़िया, परामर्शक
(अ.भा.ते.म.मं.)

आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी को जन्म शताब्दी पर शत्-शत् नमन

तेरापन्थ धर्म संघ की इस महान विभूति के बारे जितना भी लिखा जाये कभी भी संपूर्ण हो नहीं सकता। अपने आप में एक यूनिवर्सिटी से भी बढ़कर तथा आगम ज्ञाता, प्रख्याता, ध्यान, योग, दर्शन, धर्म, संस्कृति, विज्ञान, स्वास्थ्य, जीवनशैली, व्याकरण, शिक्षा, साहित्य, राजनीति, समाजशास्त्र तथा अर्थशास्त्र जैसे तमाम विषयों पर कविता, लघुकथा, निबंध, संस्मरण तथा साक्षात्कार जैसी विधाओं में आपने कलम चलाई है। आपने जैन तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के जीवन पर आधारित 'ऋषभायण' महाकाव्य की रचना की, जिसे विद्वत समाज एक महत्त्वपूर्ण कृति के रूप में देख रहा है।

आचार्यजी प्राचीन और आधुनिक विचारों के समन्वय के पक्षधर थे। वे कहते थे कि जो धर्म सुख और शांति न दे सके, जिससे जीवन में परिवर्तन न हो, उसे ढोने की बजाय गंगा में फेंक देना चाहिए। जहां समाज होगा, वहां समस्या भी होगी और जहां समस्या होगी, वहां समाधान भी होगा। यदि समस्या को अपने साथ ही दूसरे पक्ष की दृष्टि से भी समझने का प्रयास करें, तो समाधान शीघ्र निकलेगा। इसे वे 'अनेकांत दृष्टि' का सूत्र कहते थे। पुनः शत्-शत् नमन

– बिमला नाहटा, परामर्शक (ABTMM)
(अ.भा.ते.म.मं.)

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी नेअपनी जागृत प्रज्ञा से युग को अनेक अवदान दिये। उनके द्वारा संपादित आगम, सम्पूर्ण जैन समाज की अनमोल धरोहर है। प्राचीन आगम 'आयारो' पर भाष्य लिखने वाले आचार्य महाप्रज्ञ प्रथम व्यक्ति थे।

वे विश्व के महान संत ऋतम्भरा प्रज्ञा के धनी, उत्कृष्ट दार्शनिक, संवेदनशील कवि, महान साहित्यकार और आगम भाष्यकार थे। कवि भवानी प्रसाद जी ने महाप्रज्ञ को 'कबीर' की उपमा दी, तो दिगम्बर आचार्य विद्यानंदजी ने 'जैन न्याय के राधाकृष्णन' के रूप में देखा।

कवि दिनकर ने महाप्रज्ञ को विवेकानंद के नाम से नवाजा तो किसी ने सिद्धसेन के रूप में उन्हें पाया। उन्हें अनेकों पुरस्कारों से भी नवाजा गया, लेकिन वे विभिन्न उपाधियों के बीच एक निरूपाधिक व्यक्तित्व थे। उस महान आत्मा के जिन अवदानों से यह धरती अवदात है, उन अवदानों को जीवन में अपना कर, अपने जीवन को उन्नत कर पाए तो उस महामना को शताब्दी वर्ष पर सच्ची और सार्थक श्रद्धांजलि होगी। उन्होंने सागर मंथन कर अमृत के अनेक कलश हमारे सम्मुख रख दिये है। उस अमृत का पान कर स्व उत्थान करना हमारे स्वयं के हाथ में है।

– नीलम सेठिया, उपाध्यक्ष
सेलम (अ.भा.ते.म.मं.)

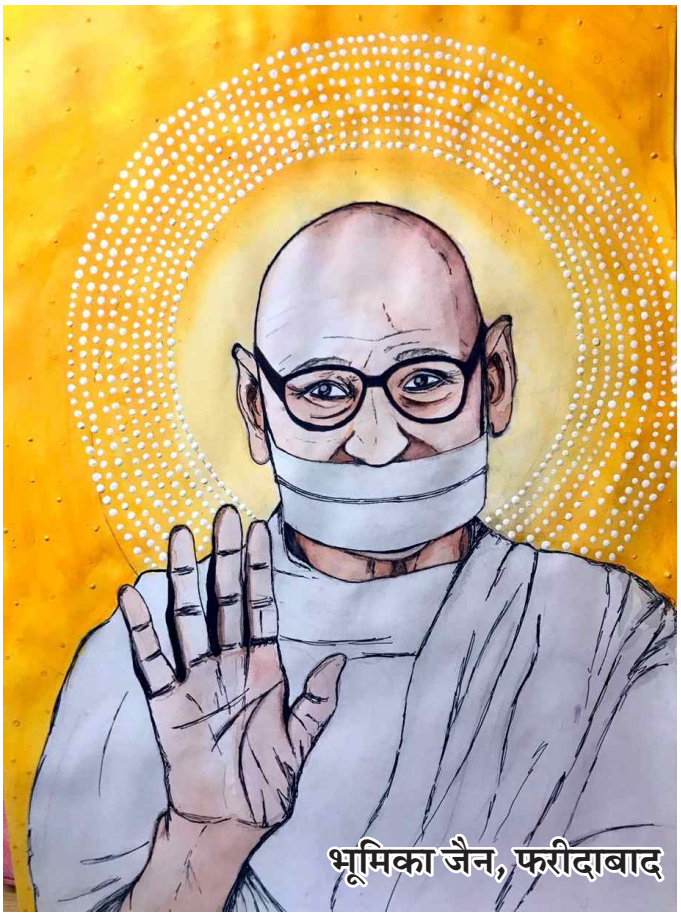

युग प्रधान आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की जन्म शताब्दी पर सादर समर्पित श्रद्धा सुमन। बीसवीं सदी के शिखर पुरुष युग प्रधान आचार्य का नाम है आचार्य महाप्रज्ञ। जिनकी पारंगत मेधा के दर्पण से योग, दर्शन, विज्ञान और मनोविज्ञान की अमृत धाराएं प्रवाहित हुई है। मेरी दृष्टि मेरी सृष्टि के ध्येय सूत्र से शक्ति की साधना कर अहिंसा और शांति से चेतना का उधर्वरोहन कर अपने घर में एकला चलो रे का शंखनाद फूंक कर्मवाद से घट-घट दीप जले के आह्वान से नया मानव नया विश्व की कल्पना को साकार करने वाले सिद्धयोगी, प्रेक्षाध्यान के अनुसंधाता का नाम है आचार्य महाप्रज्ञ। विचार को बदलना सीखे, समस्या को देखना सीखे के उदघोष से धर्म के सूत्र बताकर अर्हम के आभा मण्डल से मन को जीतने वाले जीवन विज्ञान के प्रयोक्ता का नाम है आचार्य महाप्रज्ञ। अनेकांत है तीसरा नेत्र से भेद में छिपे अभेद को गागर में सागर की तरह संबोधी महाग्रंथ के रचनाकार चित और मन से अमूर्त चिन्तन कर अभय की खोज करने वाले विरल महा मानव, विश्व शांति के उन्नायक, सुखी परिवार समृद्ध राष्ट्र का पैगाम देने वाले प्रज्ञा के महा सुमेरु महाप्रज्ञ को शत शत वंदन।

- सरिता डागा, उपाध्यक्ष

(अ.भा.ते.म.मं.)

नमन् आनन्दमय गुरु को आनन्दमय गुरु महाप्रज्ञ

आनन्द आत्मा की स्वभाविक अवस्था तथा आन्तरिक गुण है। सुख-दुःख पक्ष प्रतिपक्ष के रूप में परिवर्तित होते है। आनन्द आत्मा का अविभाज्य स्वरुप है। उसका प्रतिपक्ष नहीं है। किसी ने आचार्य महाप्रज्ञ जी से पूछा - इतन विशाल धर्मसंघ की अनुशासन करते हुए भी आप सदैव आनन्द से सरोबार दिखते है। इसका क्या राज है? सहज आनन्दमयी मुद्रा में उन्होंने कहा - ध्यान और अभ्यास के द्वारा मैंने आत्म स्वभाव को जाना है। आत्मा में जीना सीखा। अपनी पीयुष ग्रन्थी को सुखने नहीं दिया - यही है मेरी अष्टप्रहारी आनन्दमय जीवन का राज।

अपने योगी गुरु की इस सीख को अपनाकर हम भी अपने जीवन को आनन्दमय बनाए, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ.....

- रन्जू लुणिया, कोषाध्यक्ष

(अ.भा.ते.म.मं.)

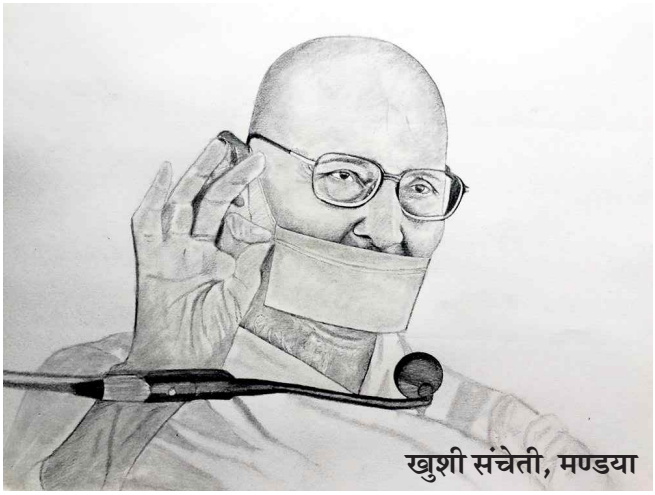

आचार्य श्री महाप्रज्ञ तेरापंथ धर्मसंघ के यशस्वी आचार्य ही नहीं थे अपितु विश्व क्षितिज के ऐसे महासूर्य थे जिन्होंने अपनी प्रज्ञा रश्मि से सम्रग विश्व को आलोकित किया। आपने प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान एवं साहित्य सर्जन जैसे आयाम देकर जन-जन को उपकृत किया। उनकी सारस्वत वाणी से निकला हर शब्द व्यक्ति के जीवन की समस्या का समाधायक बन जाता है। आचार्य महाप्रज्ञ जैसे महापुरुष कई सदियों के अन्तराल पर धरती पर अवतरित होते हैं। वे बरगद के वृक्ष की तरह सबके लिए आश्रयभूत एवं पीपल के वृक्ष की तरह प्राणवायु उत्सर्जित कर सबके लिए नवजीवन प्रदान है। सत्यबोध और आत्मशोध के तटों के बीच बहने वाली प्रज्ञा की पुनीत धारा का नाम है - महाप्रज्ञ। उनकी जन्मशताब्दी वर्ष पर उस महामानव को हृदय की अनन्त गहराईयों से शत्-शत् नमन।

- मधु देरासरिया, सहमंत्री

(अ.भा.ते.म.मं.)

जीवन में परिवर्तन पाकर, महाप्रज्ञ तुम बने महान।
नथमल को गुरु तुलसी ने जब दिया दिव्य वरदान।।
जीवन को नई दृष्टि मिली जब जीवन विज्ञान बताया।
प्रेक्षाध्यान के नव उपक्रम को गुरुवर ने हमें सिखाया।।
सोई प्रज्ञा चंचल मन की जिसको तुमने है जगाई।
मैं भी चलने को हुई आतुर जब कृपा आपकी पायी।।
घनघोर अंधेरी रात, चहुँ ओर निराशा थी छाई।
तब आकर गुरुवर तुमने, ज्योति किरण चमकाई।।
वंदनीय प्रभु तीर्थंकर ने आगम मणिरत्न का दिया हमें है हार।
संपादन कर आगम का गुरुवर दिया हमें उपहार।।
विश्व क्षितिज पर ज्योतिर्मय तारे सम चमक रहे हो।
मनुज जीवन के गूढ़ रहस्यों को अंतर्मन से समझ रहे हो।।
हे महाप्रज्ञ, हे महामानव, जब पाया अवदान तुम्हारा।
है देव दूत तेरी करुणा को, शत्-शत् बार प्रणाम हमारा।।

- नीतू ओस्तवाल, सहमंत्री
(अ.भा.ते.म.मं.)

प्रेक्षा पुरुष को शत शत नमन हमारा
प्रज्ञा पुरुष करें हम गुणगान तुम्हारा
लघु वय में कालू कर से, दीक्षित हो संयम धारा ,
युवाचर्या और आचार्य पद, पा भिक्षु शासन निखारा,
नैतिकता का बिगुल बजाकर किया जगत में उजियारा
प्रेक्षा ध्यान जीवन विज्ञान बना वरदान
विश्व मंच पर हम छाए इन नूतन अवदानों द्वारा।
जन्मशती के शुभ अवसर पर घर घर पहुँचे प्रेक्षा ध्यान हमारा।
हे! अनन्त उपकारी गुरुवर, स्वीकारो
श्रद्धाभरा नमन हमारा।।

- निधि सेखानी, प्रचार-प्रसार मंत्री
(अ.भा.ते.म.मं.)

पुरुषार्थ के प्रेरणा दीप, करुणा के महासागर, साधना के महासूर्य, ज्ञान की गंगा, समर्पण की संस्कृति के समवाय आचार्य महाप्रज्ञ का नाम विश्व शांति पर चमक रहा है। उन्होंने न केवल जिनशासन के भाल पर ज्योतिर्मय महादीप बनकर अपना आलोक बिखेरा अपितु अपनी अलौकिक प्रज्ञा के आलोक से समूचे संसार को आलोकित किया। अपने प्रज्ञा पराग से जन-जन को सुशोभित किया। अपने जीवन की प्रयोगशाला में विभिन्न प्रयोगों से गुजरते हुए संपूर्ण विश्व को जीने की कला का प्रशिक्षण दिया। उनके भीतर में ना केवल तेरापंथ का संपूर्ण मानव जाति का मंगल समाहित का। उन्होंने नारी जाति के लिए विकास के नए-नए आयाम खोलकर सदैव सिद्धि का वरदान दिया। ऐसे अनंत उपकारी गुरुवर युगप्रणेता, युगप्रचेता, युगनायक, युगनिर्माता, युगप्रधान आचार्य महाप्रज्ञ की जन्म शताब्दी के पुनीत अवसर पर श्रद्धा के सुरभित सुमनों से शत-शत नमन। हे अनन्त उपकारी गुरुवर! अधरों पर है एक ही नाम पवित्रता के पावन धाम महाप्रज्ञ तुम्हें प्रणाम।

- कुमुद कच्छारा, पूर्वाध्यक्ष
(अ.भा.ते.म.मं.)

आचार्य तुलसी के 'महाप्रज्ञ' बने अचार्य महाश्रमण के 'महात्मा' जिसने सागर के धरातल पर अपने पैरों को अंगद की भांति टिका कर सुमेरु के शिखरों को छुआ। जो प्रज्ञा, विनय, और विवेक की अद्भुत समन्विति थे। जो श्रद्धा और समर्पण के प्रतीक थे। गुरु तुलसी की कल्पना को जिन्होंने क्रियान्विति से साकार किया और तेरापंथ को विश्व के क्षितिज पर पहुंचा दिया। जिन्होंने अपना जीवन एक साधक के रूप में महावीर वाणी को समर्पित कर जैन योग की पुनर्स्थापना की और आगम की वाणी के भाष्यकार बने। ऐसे आध्यात्मिक, मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्व 21वीं शताब्दी के महान दार्शनिक आचार्य महाप्रज्ञ को जन्म शताब्दी के पावन अवसर पर भावभरा श्रद्धासिक्त नमन्।

- पुष्पा बैंगानी, कार्यसमिति सदस्य
(अ.भा.ते.म.मं.)

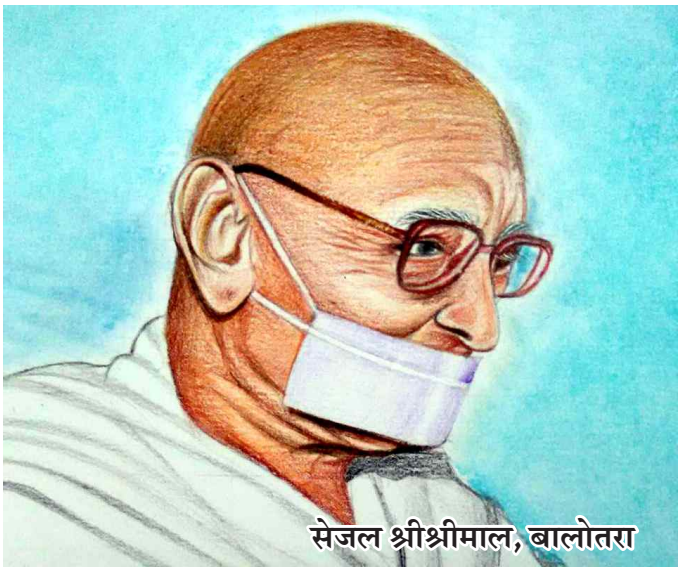
सेजल श्रीश्रीमाल, बालोतरा

दशम् अधिशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के प्रति श्र;ासुमन
युग दृष्टा महाप्रज्ञ तुम्हारी, है सूर्य से बढ़कर प्रभा अपार।
विपुल ऊर्जा के भंडार, निर्मल, निश्चल, निरंहार।।
नवयुग के हे! जन प्रभात, संघ रक्षा करते ज्यों मंदार।
दे दो ऐसी शक्ति हमको, खुल जाए प्रज्ञा के द्वारा।।
स्फटिक से उजले जन्म दिवस पर, चमक रहा है गण गिगनार।
महान विभूति के चरणों में, श्रद्धा भक्ति का चिन्मय उपहार।।

– रमण पटावरी, कन्यामंडल प्रभारी
(अ.भा.ते.म.मं.)

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के दशम् अधिशास्ता

धर्म चक्रवर्ती जिनशासन के देदीप्यमान नक्षत्र, विद्वदरत्न, युगदृष्टा, प्रजा सुमेरू, लोक महर्षि प्रज्ञा के अजस्त्र स्त्रोत, योग साधक, अनुत्तर योगी, मननशील व्यक्ति, युगसृष्टा, महा मनीषी, अमेय मेघा के धनी, साहित्यकार, अंतर्दृष्टि, अतुलनीय चिंतक, सत्स-संधित्सु, युगप्रवर्तक, महान संत, विशदमति, योग सम्राट, ज्ञानगुण भूषण, महान संत, विशदमति, योग सम्राट, भारतीय संस्कृति के विशिष्ट ज्ञाता, रचनामेधा सम्पन्न महामनव, अज्ञान-तिमिरनाशक, अध्यात्म के शिखर पुरूष, उच्च कोटि के दार्शनिक, युगप्रधान आचार्य, अहिंसा यात्रा के महापथिक, मानवता के कीर्तिस्तंभ।

अनेक गुणों के समुच्चय आचार्य महाप्रज्ञ के चरणों में श्रद्धायुक्त श्रद्धांजलि।

– सोनम बागरेचा, कार्यसमिति सदस्य
(अ.भा.ते.म.मं.)

मानवता के उदय अभ्युदय महाप्रज्ञ तुमको मेरा वंदन निष्काम,
जन्म शताब्दी पर प्रणम्य भावों से नतमस्तक श्रद्धासिक्त प्रणाम।

गुरु कालू द्वारा दीक्षित, तुलसी द्वारा शिक्षित हमारे दशम आचार्य महाप्रज्ञ जी तेरापंथ धर्म संघ के ही नहीं अपितु संपूर्ण समाज के धरोहर थे। आप द्वारा प्रदत आगम संपादन, अहिंसा यात्रा, जीवन विज्ञान व प्रेक्षा ध्यान आज की वर्तमान समस्याओं को समाप्त करने में सक्षम है। अब आवश्यकता है हम अपना अवलोकन कर अंतस की समीक्षा करें व उन्हें अपने जीवन में आत्मसात कर सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करें।

कालजयी कर्तृत्व तुम्हारा, शब्दों में कैसे बतलाएं?
मानवता के महामंगल की परम गाथा को शब्दों में कैसे समाएं?
सारस्वत प्रज्ञा के मालिक, रहते हरदम तत्त्वदर्शन की धुन में।
श्रद्धा भक्ति का गुलदस्ता अर्पित करती पूज्य चरण में।

– नमिता सिंधी, कार्यसमिति सदस्य
(अ.भा.ते.म.मं.)

नमन प्रज्ञ के शिखर को

तुम विश्व मंच पर उदित हुए बन जगजीवन के सूत्रधार।
पट पर पट उठा दिए मन से, कर नर चरित्र का नव उद्धार।।

श्री मैथिलीशरण गुप्त की उपरोक्त पंक्तियां आचार्य श्री महाप्रज्ञजी पर सार्थक प्रतीत हो रही है। स्वानुभूत स्फूर्त उनके अतुलनीय सिद्धांत पूर्णत: परमार्थ की भावना से ओतप्रोत थे। मानव का जीवन पथ प्रशस्त करने वाले उनके अवदान प्रकाश स्तंभ हैं।

अध्यात्म अनुस्यूत दर्शन, जीवनविज्ञान, प्रेक्षाध्यान, आगम अनुसंधान, आध्यात्म में विज्ञान का समावेश, विपुल साहित्य, अहिंसा यात्रा, हृदय परिवर्तन से अहिंसा की स्थापना, अनेकांत दृष्टि, सामाजिक, पारिवारिक समस्याओं का सम्यक् समाधान, युग निर्माण हेतु मौलिक चिंतन आदि मानवता के हितार्थ उनके अनगिनत अवदान प्रकाश स्तंभ हैं। बड़ा कठिन है उस महायोगी के महान व्यक्तित्व का आंकलन, जिन खोजां तिन पाइयां वाली बात है। 'निशेषम्' को जीवनसूत्र मानने वाले 'प्रज्ञापुरुष' का हमें साक्षात सान्निध्य मिला, इससे बड़ा सौभाग्य क्या होगा। शताब्दी वर्ष में।

''नमन् प्रज्ञा के शिखर को''

– मंजू भूतोड़िया, कार्यसमिति सदस्य
(अ.भा.ते.म.मं.)

परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञ के 100वें जन्मदिवस पर

''वंदन नमन''

ज्ञान के नवकोष थे तुम, एक सकल सुपरितोष थे तुम,
सत्य साधक धाम थे तुम, सहज ललित ललाम थे तुम।

सत्य की पहचान थै तुम, युग-युग के प्रधान थे तुम,
विसंगतियों से भरे युग मैं, सच्चाई के अनुसंधान थे तुम।।

पूज्य गुरूवर के पावन चरणों में, भावना के सुमन समर्पित हैं
उनके पावन पथ पर चलने को, ये सारा जीवन अर्पित है।

हर शब्द तुम्हारा सिद्धमंत्र था, हर साँस तुम्हारी गीता
जो तेरे पावन पथ पर चलता, परमानंद को प्राप्त करता।

हर ग्रन्थ मुख पर तेरे, अधरों पर भी अमृतवाणी
सादा सरल निर्मल जीवन था, जैसे गंगा माँ का पानी।

बढते कदम धरा पर तेरे, बने रहे जग के हितकारी,
मानवता के शीर्ष भाल पर, तुम रच गये कहानी न्यारी

धन्य-धन्य भाग्य हमारे, जो ऐसे गुरू की दृष्टि पाई,
गूँजे धरती आकाश, शत्-शत् वंदन की बजे शहनाई।

शत्-शत् नमन .....

- कल्पना बैद, कार्यसमिति सदस्य
(अ.भा.ते.म.मं.)

To shine like a Sun, one has to burn like a Sun-

साधना में स्वयं को तपा कर सूर्य सी तेजस्विता प्राप्त करने वाले प्रज्ञामहर्षि आचार्य महाप्रज्ञ वस्तुतः एक विचार थे, सशक्त और सकारात्मक विचार, जीवन की दशा और दिशा बदलने में सक्षम अमूल्य विचार । विराट मानवीय सत्ता और विश्व शांति में विश्वास रखने वाले वे एक ऐसे महापुरुष थे जिनके मानस में सिर्फ जैन नहीं, पूरा भारत, पूरा विश्व था। महाप्रज्ञ भारतीय संस्कृति के ज्योतिर्धर थे। जिन्होंने स्वयं अकिंचन रहकर भी आगम संपादन, प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान जैसे अवदानों से पूरी दुनिया को समृद्ध बनाया ।आपने जीवन में जो पाया, जो एकत्रित किया उसे अपनी 300 से अधिक पुस्तकों, प्रवचनों और अहिंसा यात्रा के माध्यम से जन-जन में वितरित कर दिया। उनके बहुआयामी, बहुफलकीय व्यक्तित्व का हर पहलू प्रेरणा देने वाला है। गति, प्रकाश और ऊर्जा के प्रतिरूप उनके सतत स्मरणीय स्वरूप को प्रणाम ।

- सुनीता जैन, कार्यसमिति सदस्य
(अ.भा.ते.म.मं.)

सिमरन बैंगानी
सूरत

नमन महाप्रज्ञ को

विचारों का प्रवाह थे ज्ञान का विज्ञान थे
वे शक्ति थे त्याग की, अनुशासन की मिसाल थे

मंथन उनका आगामी था, वचन उनका पथगामी था
था विश्वास उनमें जिनवाणी का, वो जिनवाणी के ध्याता थे
नेत्र उनके अहिंसात्मक, पग उनके रचनात्मक
युक्ति उनकी तथ्यात्मक

वे महाप्रज्ञ ही नहीं, तप के जीवंत महायज्ञ थे
वो ध्यान के आराधक थे, वे प्रमाण के पर्याय थे
नेत्र उनके महाज्ञाता थे, वे संत रूपी विधाता थे

नमन उनको मेरे भाव से, अंतर्मन के विश्वास से
मेरे धर्म मार्ग से, मेरे कर्म स्वभाव से ।।

- सुमन नाहटा, कार्यसमिति सदस्य
(अ.भा.ते.म.मं.)

महाप्रज्ञ के अवदान

महातपस्वी, ओजस्वी, महापुरुष महाप्रज्ञ महान
आत्म-विजेता, प्रेक्षा-प्रणेता, युग की खातिर एक अवदान
अविस्मरणीय कर्तृत्व था उनका, था व्यक्तित्व ज्यों वीतराग भगवान
उनकी वाणी में छुपा हुआ था, हर समस्या का समाधान
साहित्य, सृजन अद्वितीय था उनका, हर लेता जो मन-संताप
विश्व-विजयी वे महापुरुष थे, छोड़ी जग में अमिट छाप
आचार्य रूप में पद-प्रतिष्ठा, को निरन्तर बढ़ाया
तेरापंथ शासन का गौरव शिखर चढ़ाया
हर मानव ने नतमस्तक हो शीश झुकाया।
ऐसा गौरवशाली हमने नेता पाया
अहिंसा यात्रा को सफल बनाया
जीवन विज्ञान अवदान बनाकर, स्वर्णाक्षर में नाम लिखाया।
शीश नवाते गुरू गुण गाते, श्रावक बनकर हम इठलाते,
गुण गरिमा का गान करें हम, शब्दों की पिरोकर माला।
धन्य हो गया अब यह जीवन, पाकर धर्म संघ निराला।।

- विमला दुगड़, कार्यसमिति सदस्य
(अ.भा.ते.म.मं.)

सूक्ष्मता और सरलता महान व्यक्तियों के जीवन में साथ-साथ चलती है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ भी एक महान दार्शनिक होने के साथ-साथ सहज और सरल भाषा में गूढ़ से गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित कर देना उनकी सहज शैली थी। जो सबसे पहले एक योगी थे। उनकी महानता नैसर्गिक थी। उनका व्यक्तित्व बुद्धिबल, आत्मबल, भक्तिबल, कीर्तिबल और वाग्बल का विलक्षण समवाय था। दृढ़ इच्छाशक्ति, संकल्प शक्ति, पुरुषार्थ एवं पराक्रम के द्वारा उन्होंने उपलब्धियों के अनेक शिखर स्थापित कर दिए। उन्होंने संपूर्ण मानव जाति को 'प्रेक्षाध्यान' का गुरुमंत्र दिया।

ऐसे महान योगी पुरुष के चरणों में जन्म शताब्दी के पुनीत अवसर पर श्रद्धासिक्त भावांजलि अर्पित करती हूँ।

- विजयलक्ष्मी भूरा, कार्यसमिति सदस्य

(अ.भा.ते.म.मं.)

विश्व के महान साहित्यकार की अभिवंदना

मैं आचार्य महाप्रज्ञ को नमन करती हूं। आचार्य प्रवर ने अपनी पिक्स मेधा शक्ति के साथ साहित्य जगत की हर एक विधा का स्पर्श किया चाहे वह गद्य साहित्य में आगम संपादन का कार्य हो या फिर अकर्मण्यता, निराशा, तनाव, काल्पनिक भय से उद्वेलित मानस को औषधि प्रदान करने वाला उनका सुप्रभातम, गागर में सागर वाला कथा साहित्य हो। आचार्य प्रवर का तात्विक दार्शनिक साहित्य जीव-अजीव, कर्मवाद, जैन दर्शन मनन मीमांसा आदि सरल शब्दों में गूढ़ रहस्यों को उजागर करता है। महाकाव्य ऋषभायण में आपने धर्म, संस्कृति, इतिहास आदि को एक अभिनव रूप प्रदान किया।

हे जैन दर्शन के विश्वकोश! भक्तिपरक रहस्यवाद के नूतन कवि! हे! आशु प्रज्ञ! हे! उत्कृष्ट साहित्य सृजेता!, हे! सिद्ध सारस्वत जन्म शताब्दी वर्ष पर अजन्मे भावों की कोटि-कोटि श्रद्धायुत अभिवंदना अभिवंदना ....

- जयश्री जोगड़, कार्यसमिति सदस्य

(अ.भा.ते.म.मं.)

गुरुवर तुम्हें नमन्

नवोदित सूर्य की तेज रश्मियों को नमन्
उन तेज रश्मियों के समान चमकने वाले,
गुरुवर तुम्हें नमन्
सुहानी चांदनी सी शीतलता से सुरभि
महाप्रज्ञ तुम्हें नमन्
जीवन विज्ञान के जन्मदाता, प्रेक्षाध्यान के उद्गाता
आगम ज्ञाता तुम्हें नमन्
ले चले अहिंसा की मशाल, दिया ग्रसित मानवता को प्राण
मानवता के मसीहा तुम्हें नमन्
पग-पग पर चल कर दिया, जन-जन को नवसन्धान
गुरु तुलसी के पट्धर तुम्हें नमन्
धर्मग्रन्थ के महा प्रवर्तक, संस्कृत के विद्वान
ओ मेरे गुरु तुम्हें शत्-शत् नमन
मेरे गुरु महाप्रज्ञ महान, महाप्रज्ञ महान

- डॉ. नीना कावड़िया, कार्यसमिति सदस्य

(अ.भा.ते.म.मं.)

तिणाणं-तारयाणं को नमन

तीन लोक नौ खंड में, गुरु से बड़ा न कोय
गुरु की सच्ची शरण से ही, बेड़ा पार होय
घनघोर अंधेरे जीवन के, गुरुकृपा से दूर होय
अज्ञान मिटे तिमिर मिटे, जीवन ज्ञानमय होय
गुरु चरणों में सदा समर्पित, रहूँ बेफिक्र होय
महाप्रज्ञगुरुवे नमः रटते-रटते स्व-कल्याण होय

- प्रभा दूगड़, कार्यसमिति सदस्य

(अ.भा.ते.म.मं.)

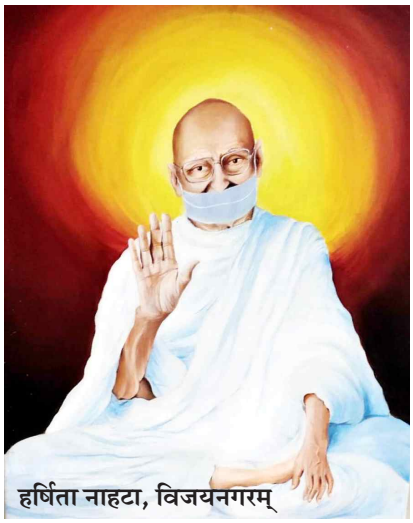
हर्षिता नाहटा, विजयनगरम्

तेरापंथ के दशम दिवाकर आचार्य श्री महाप्रज्ञ के जन्म शताब्दी वर्ष पर कोटि कोटि वंदन। महान योगी! प्रेक्षा प्रणेता या कहुं 'महामानव'। युगप्रधान, अहिंसा पथगामी इस अलौकिक पुरुष की महागाथा को सौ शब्दों में उतारना गागर में सागर भरने जैसा है। अज्ञ से महाप्रज्ञ बने महान संत ने अस्त व्यस्त जीवनशैली को व्यवस्थित करने हेतु जीवन विज्ञान का मूल मंत्र दिया तो स्वयं के अंदर झांकने के लिए प्रेक्षा ध्यान का सूत्र दिया।कालजयी इस महर्षि ने जैन आगमो का संपादन कर जिनवाणी को सहज बना दिया तो अपनी अनेक पुस्तकों से पूरे विश्व को अपने ज्ञान से आलोकित किया। मरूधर की माटी में जन्मा यह बालक गॉर्ड ऑफ ऑनर के अलंकरण से परम धाम को लक्षित हुआ । वंदन शत-शत वंदन।

- सीमा बैद, कार्यसमिति सदस्य
(अ.भा.ते.म.मं.)

विश्व क्षितिज पर कुछ ऐसे सूर्य सम तेजस्वी विशिष्ट व्यक्तित्व उदित होते है। जिनके प्रभामण्डल से सम्पूर्ण विश्व आलोकित हो उठता है, अपने पुरुषार्थ व विचार वैभव से वे समाज में अभिनव चेतना और जाग्रति का संचार करते हैं। उन विश्व विभूतियों की परंपरा में आचार्य महाप्रज्ञ जी का नाम प्रमुख है। आपके व्यक्तित्व में प्रज्ञा और योग का अनुपम समीकरण था। लघु से महान, तलहटी से शिखर, बालक नत्थू से आचार्य महाप्रज्ञ एवं शिष्य से गुरूपद तक पहुँचने की आपकी जीवन यात्रा अत्यंत विलक्षण थी। भगवान महावीर, आचार्य भिक्षु, आचार्य तुलसी के प्रकाश पुंज से प्रज्ज्वलित परम यशस्वी आचार्य श्री महाप्रज्ञ का शताब्दी वर्ष मनाना हर मानव के लिए गर्व एवं गौरव का विषय है।

- निर्मला चण्डालिया, कार्यसमिति सदस्य
(अ.भा.ते.म.मं.)

अभिवन्दना के इन स्वरों में एक स्वर मेरा भी

काल के भाल पर सृजन के स्वस्तिक उकेरने वाले सिद्ध पुरुष का नाम है- आचार्य महाप्रज्ञ। तेज व ओज के अनंत प्रवाही स्रोत का नाम है- आचार्य महाप्रज्ञ। पौरूष व पराक्रम से भरे अजेय कृतत्व का नाम है महाप्रज्ञ। प्रज्ञा के महासिन्धु अलबेले योगी व करूणा के महासागर है आचार्य महाप्रज्ञ। वे मौलिक चिन्तक, कवि लेखक व साहित्यकार थे। ऋषभायन के रचनाकार, विपुल साहित्य के सरस्वती पुत्र, आगम संपादन के कौशल विद्या वारिदि थे। अपनी मेघा व प्रखर प्रज्ञा से वे बालक नत्थू से नथमल अज्ञ से प्रज्ञ, प्रज्ञ से महाप्रज्ञ और महाप्रज्ञ से आचार्य महाप्रज्ञ बन गये।

प्रज्ञा के महासूर्य ने अपनी प्रज्ञा रश्मियों से धरा, अम्बर व सम्पूर्ण मानवता को आलौकित कर दिया। जीवन के नवें दशक में उजागर करने वाली आपकी अहिंसा यात्रा जन-जन के मन में पुलकन भर देती थी। इस शताब्दी वर्ष पर हम सबमें नूतन प्रज्ञा का संचार कर अध्यात्म का आलोक प्रदान करें।

मानवता के महासंत को शत-शत प्रणाम।

- गुलाब बोथरा, कार्यसमिति सदस्य
(अ.भा.ते.म.मं.)

आचार्य महाप्रज्ञजी की जन्म शताब्दी के अवसर पर

आचार्य महाप्रज्ञजी प्रज्ञा के शिखर व अध्यात्म जगत के देदीप्यमान महासूर्य थे। उन्होंने अपनी प्रज्ञा की रश्मियों से पूरे विश्व को आलोकित कर दिया। उनका व्यक्तित्व अध्यात्म और जीवन विज्ञान का समन्वय था। उन्होंने अपने जीवन में संकल्प लिया था कि वे कभी भी गुरु तुलसी को नाराज नहीं करेंगे। उनके इसी समर्पण भाव ने उन्हें नत्थू से नथमल, नथमल से महाप्रज्ञ बना दिया। उन्हें जैन न्याय का राधाकृष्णन आधुनिक भारत का विवेकानंद प्रभावक आचार्य सिद्धसेन, समन्तभद्र देवर्धिगणी एवं पाश्चात्य दार्शनिक कांट प्लेटो से उपमित किया। तेरापंथ की आचार्य परम्परा में दीर्घायुषी आचार्य के रूप में प्रसिद्ध है । जन्म सदी पर हर व्यक्ति संकल्प करें कि हम अपनी जीवन शैली को स्वस्थ बनायेंगे और योग साधना में प्रतिदिन समय का नियोजन करेंगे।

- मधु श्यामसुखा, कार्यसमिति सदस्य
(अ.भा.ते.म.मं.)

'ऐसे थे महात्मा महाप्रज्ञ'

विधा, विनय और विवेक का त्रिवेणी संगम है : आचार्य महाप्रज्ञ।
अंतहीन करूणा व अप्रतिम-अप्रमत जीवनचर्या का नाम है : आचार्य महाप्रज्ञ।
महान दार्शनिक, आशुकवि, प्रखरवक्ता और साहित्यकार थे : आचार्य महाप्रज्ञ।
अध्यात्म सृंस्कृति के पुरोधा व कुशलशास्ता थे : आचार्य महाप्रज्ञ।

'ऋषभ और महावीर' से लेकर 'भिक्षु विचार दर्शन' व 'तुलसी विचार दर्शन' के माध्यम से 'धर्मचक्र का प्रवर्तन' कर 'संबोध' की 'विजय यात्रा' की। 'महात्मा महाप्रज्ञ' 'प्रतिदिन' 'पाथेय' में 'आत्मा का दर्शन' एवं 'कर्मवाद' के द्वारा 'समाधि की खोज' की 'प्रस्तुति' करते। महात्मा महाप्रज्ञ फरमाते 'किसने कहा मन चंचल है'। हमारे में भी है अनन्त शक्ति का स्रोत। जो ' जीवन का अर्थ' 'रूपान्तरण की प्रक्रिया' बता कर 'सुबह का चिन्तन' 'अपने घर में' 'अवचेतन मन से सम्पर्क' कर 'ऊर्जा की यात्रा' करता है। 'जैन धर्म और दर्शन' एवं 'प्रेक्षाध्यान' 'अहिंसा के अछूते पहलु' से 'समाज व्यवस्था के सूत्र' 'कार्यकौशल के सूत्र', धर्म के सूत्र द्वारा ' नया मानव : नया विश्व' की परिकल्पना की। महात्मा महाप्रज्ञ ग्रन्थों से घिरे एक निर्ग्रन्थ 'संत' थे। आपकी संतता, आपकी निर्मलता को प्रणाम करते हुए सिर्फ यही कहना चाहुंगी कि-

।। श्री महाप्रज्ञ गुरुवे नमः।।

- भारती सेठिया, कार्यसमिति सदस्य
(अ.भा.ते.म.मं.)

तेरापंथ के दशमाधिशास्ता ने, मान बढ़ाया भैक्षव शासन का।
अनुशासित-मर्यादित जीवनशैली से, पाठ पढ़ाया कर्मठता का।
विशद, विराट, व्यक्तित्व जिनका, रंग लिए विविधताओं का।
महाप्रज्ञ के हर स्पंदन में, अनुगुंजन था गुरुवर श्री तुलसी का।

सहज समर्पण, कर निज विर्सजन, नत्थू से बने प्रज्ञ प्रभाकर तेजस्वी, ओजस्वी, भामंडल, ज्यों उदित होता दिव्य दिवाकर अमूर्त कल्पनाओं में रंग भरते, अवदानी साहित्य रचनाकर, आगम संपादन, जीवन विज्ञान संग प्रेक्षा ध्यान उतारा धरापर शांति संवाहक, बने जन कल्याणी, अहिंसा बिगुल बजाकर।

मृदुता, संग नयनो से बरसता करुणा निर्झर ज्यों शीतल चंदन शांति, संयम, श्रम की त्रिवेणी, किया जिनाज्ञा जीवन अर्पण कर्मठ कर्मयोगी महापुरूष तेरी वीतरागता को शत शत नमन जन्मशदी पर हे! महाप्रज्ञप्रवर, स्वीकारो मेरा भाव भरा वंदन।

- विद्या कुण्डलिया, कार्यसमिति सदस्य
(अ.भा.ते.म.मं.)

टमकोर की उस धरा को नमन,
बालूजी व तोलारामजी के शूरवीर को नमन,
नमन दशम युगप्रधान युगपुरुष को,
तेरापंथ के उस क्षितिज को नमन।

तुलसी गुरु की छत्रछाया में जिन्होंने व्यक्तित्व निखारा, गहनतम अध्यन व साधना से जीवन को प्रखारा। विनम्रता ओर विवेक से संघ को संवारा। मुनि नथमल से महाप्रज्ञ के सफर में कई रुप निखरे। युगप्रधान, जैन योग पुनरुद्धारक, विवेकानंद, जैनध्यान के कोलम्बस कहलाये। प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान के झंडे जन-जन तक फैलाये। असाधारण प्रतिभा, अलौकिक दृष्टि, समर्पणता, अदभुत लेखनी की सृजन चेतना से महान दार्शनिक, कवि व वक्ता बन तेरापंथ की आचार्य परम्परा को चार चाँद लगाये। धरा के उस महासूर्य को श्रद्धानित करूं शत-शत नमन।

- कांता डूंगरवाल, कार्यसमिति सदस्य
(अ.भा.ते.म.मं.)

प्रणम्य प्रणति

निर्मल स्वभाव, विनम्र बुद्धि, वीतरागी चरित्र और सूक्ष्मदर्शी ज्ञान से उद्‌भूत आचार्य महाप्रज्ञ योग, आध्यात्म, विज्ञान, कला और अन्तश्चैतन्य के शलाघनीय संगम थे। ज्ञान के निर्बध, अंतर-अनुशासनिक विनिमय और धर्मक्रान्ति के संवाहक आचार्य महाप्रज्ञ की सम्बोधि मनुष्य के अन्तःकरण की शुद्धि और आध्यात्मिक आस्तिकता की लौ जलाने को केन्द्रित हैं। मरुधरा के शुन्य अंचल में मंदाकिनी के स्त्रोत की तरह उभरने वाले आचार्य महाप्रज्ञ एक ऐसे श्लाघापुरूष जिनकी अंतर आत्मा से निकला प्रत्येक शब्द अनमोल वचन बन गया तथा मानवता को त्राण देने वाला अमोघ अस्त्र बन गया। व्यष्टि से लेकर समष्टि तक को व्यापक चिंतन देने वाली ऐसी विश्व आत्मा को श्रद्धासिक्त प्रणम्य प्रणति।।

- डा. वंदना बरड़िया, कार्यसमिति सदस्य
(अ.भा.ते.म.मं.)

प्रेक्षा की पावन ज्योति से, प्रज्ञा के नवदीप जलाये,
अहिंसा के संदेशों से वो, लाखों के जीवन को संवारे।।

आचार्य महाप्रज्ञ प्रज्ञा के परगामी महापुरुष थे। महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व में प्रेक्षा और योग का अनुपम समन्वय था। साहित्य जगत का एक चर्चित नाम- आचार्य महाप्रज्ञ।

जैन धर्म को जन धर्म में बदलने वाले सागर समान व्यक्तित्व को शब्दों में व्यक्त करना दुलर्भ है। उनके जीवन से जुड़े मूल्यों को जीवन का मूल आधार बना सके यही एक श्रद्धासिक्त श्रद्धांजलि होगी।

भारत रत्न, प्रज्ञा महर्षि, अध्यात्म योगी को शत-शत नमन।

- नीतू पटावरी, कार्यसमिति सदस्य
(अ.भा.ते.म.मं.)

श्रद्धा के सुमन

भिक्षु शासन को देते बहुत बधाएं,
महासूर्य से महाप्रज्ञ गणगुंबद बन आए।
बालू नंदन को हम आज खुब सराहें,
टमकोर के कण-कण में महाप्रज्ञ है समाये।
माथे पर लगी चोट तो कहा भाग्य तेरा खुल जाए,
योगीराज की सुन भविष्यवाणी मां का मन अति सुख पाए।
छोटी वय में दिक्षीत हो, नत्थु से मुनि नथमल बन गये,
हाथ थाम तुलसी का वो, शास्त्रों के महाज्ञानी बन गये।
किस किस उपमा से उपमित करें हम,
शीश झुका श्रद्धा सुमन अर्पित करें हम।।

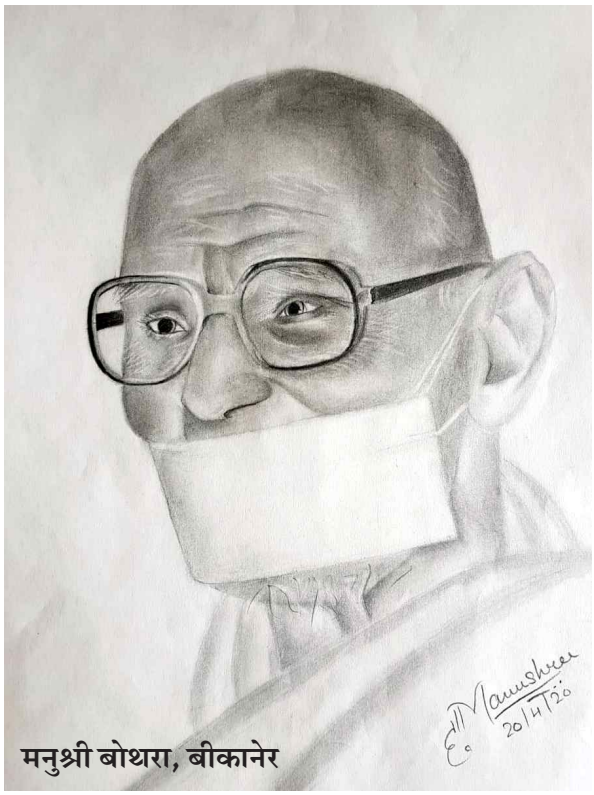

मनुश्री बोथरा, बीकानेर

- वंदना विनायकिया, कार्यसमिति सदस्य
(अ.भा.ते.म.मं.)

आस्था के ऊर्धवा काश प्रज्ञा के परम प्रकाश समता के सिद्धा अभ्यास। अंतर्मन में सोए ब्रह्मा को जगा कर किया जिन्होंने नए आध्यात्मिक वैज्ञानिक व्यक्तित्व का निर्माण, अंतर विष्णु को जगाने से मिला जिनके अनुसंधान को प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान का परित्राण, अहिंसा यात्रा के माध्यम से जिन्होंने दिया घायल मानवता को नया रूप, भरा उसमें नया प्राण अंतर मन में सोए शिव को जगा आचार्य महाप्रज्ञ बन जिन्होंने किया संपूर्ण विश्व का महाकल्याण जन्म शताब्दी वर्ष पर हार्दिक भावांजलि

- जयश्री वडाला, कार्यसमिति सदस्य
(अ.भा.ते.म.मं.)

तेरापंथ के दशमाधिशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ एक ऐसा व्यक्तित्व जो इस अस्तित्व मे अवतरित बुद्ध पुरूषों की श्रृंखला की एक महान कड़ी है।शताब्दियों मे कोई ऐसे बुद्ध पुरूष हमारे बीच होते है जो अपनी प्रज्ञा से पूर्ण धरा को आलोकमय करते है और अपनी देशनाओं से हमें धर्म का सच्चा मार्ग बताते है।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ एक साधक योगी संत साहित्यकार दार्शनिक विचारक, चिंतक, आगम शोधक, प्रशासक, लेखक, कवि, विभिन्न भाषाओं के ज्ञाता आदि अनेक मानवीय सर्वोच्च गुणों का किसी एक व्यक्तित्व मे समावेश निश्चित ही चमत्कार है। इसीलिये गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी ने उन्हें महाप्रज्ञ जैसे अलंकरण से अलंकृत किया। मेरा शत शत नमन प्रज्ञा पुरूष आचार्य श्री महाप्रज्ञ को।

युगीन चिंतन ने तुम्हें युग प्रधान बनाया। कोटि-कोटि श्रद्धा ने तुम्हें परम श्रद्धेय बनाया। समर्पित जिंदगी का यही तो सूत्र है। भगवन! तेरी दृष्टि ने इस सृष्टि का चमन खिलाया।

- संतोष बोथरा, कार्यसमिति सदस्य
(अ.भा.ते.म.मं.)

है प्रज्ञा पुरुष महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष पर शत्-शत् नमन। व्यक्तित्व विकास की कार्यशाला थी आपका जीवन, आप शुरू से ही उन्नति के शिखर पर आरूढ़ होकर रहे थे व अनुशासन की अग्नि में तपे हुए थे। आपने आचार्य तुलसी द्वारा उद्घोष निज पर शासन फिर अनुशासन को अपने जीवन में अपनाया, समर्पण, निष्ठा आपकी सफलता का रहस्य था। आपकी भगवान महावीर से लेकर आचार्य तुलसी के प्रति प्रगाढ़ समर्पण रहा आत्मविश्वास, संकल्पशक्ति व पुरुषार्थ इतना प्रबल रहा जिससे आपने आगम सम्पादन, जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान जैसे संघ को आयाम दिए। आपके विनय और प्रबल भाग्य को हमने देखा जिसका उदाहरण है आचार्य पदारोहण एक आचार्य के होते हुए भी आपको आचार्य पद पर आसीन किया गया। ऐसे महाप्रज्ञ को वन्दन अभिवन्दन।।

- सुधा नौलखा, कार्यसमिति सदस्य
(अ.भा.ते.म.मं.)

तेरापंथ धर्म संघ के दसमाधिशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ एक ऐसे महामानव थे जिन्होंने अपनी शिक्षा गुरु के चरणों में अपना सर्वस्व अर्पण कर गुरु से कहा कि आप जैसा बनाओगे वैसा बन जाऊंगा। वहीं दूसरी ओर महान शिक्षा गुरु गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी ने बालक नत्थू की पात्रता को देखते हुए एक रिस्ते पात्र में अपना सब कुछ उड़ेल दिया। अपने बुद्धि कौशल, पैनी दृष्टि तथा कठोर अनुशासन की छेनी से एक अनगढ़ पत्थर को प्रतिमा का रूप प्रदान कर जनमानस के मन मंदिर में प्रतिष्ठित कर दिया।

आपने एक धूल में पड़े हुए कंकड़ को तराश कर हीरा बनाकर उस रत्नमणि को तेरापंथ धर्मसंघ के मुकुट में सुशोभित कर दिया उस रत्न मणि से पूरा तेरापंथ धर्मसंघ आलोकित हुआ और आज भी हो रहा है। जिनके द्वारा दिए हुए अवदानों से पूरा मानव समाज उन अवदानो को अपनाकर अपने जीवन को सही मायने में कैसा जीना चाहिए, वह जीवन-विज्ञान व प्रेक्षाध्यान को अपनाकर स्वस्थ जीवन जी रहा है ।

– सरला श्रीमाल, कार्यसमिति सदस्य
(अ.भा.ते.म.मं.)

हे वसुधा श्री, हे ज्योतिपुंज, शत शत नमन। तेरापंथ के गणनांगण के महासूर्य आपका आलोक आज भी हमारा पथ आलौकित कर रहा है। बचपन से ही आपश्री में हम उम्र बच्चों से अलग जीवन दर्शन की झलक मिलती थी, आपका ज्ञान अनुशासन और सत्यशोध के प्रति जिज्ञासु प्रवृत्ति ने ही विकास के नए-नए उन्मेषों को आरोहित किया। आपकी गुरु भक्ति और समर्पण ने गुरु के हर चिंतन को आकार दिया। संस्कृत में आशुकवित्व आपकी दुर्लभ सिद्धि थी। कमल की तरह निर्लेप आचार्य महाप्रज्ञ अनेक नाम, उपनाम, सम्मान और पुरस्कारों के साथ इस दुनिया में रहे। आपके अमूल्य अवदान सदैव विश्व का कल्याण करते रहेंगे।

– अर्चना भण्डारी, कार्यसमिति सदस्य
(अ.भा.ते.म.मं.)

जीना हो तो पूरा जीना, मरना हो तो पूरा मरना
बहुत बड़ा कष्ट जगत में, आधा जीना आधा मरना

आचार्य महाप्रज्ञ जी की हर वाणी हर शब्द ने समग्र विश्व को आलोकित किया है, अनेक व्यक्तियों के जीवन की समस्या का समाधायक बना है।

मैं उन महान कवि, वक्ता, लेखक, प्रेक्षाप्रणेता, श्रुतधर, भाष्यकार, आशुकवि, तीर्थंकर तुल्य गुरुवर, साहित्यकार को उनकी जन्म शताब्दी पर सहस्त्रों बार नमन करती हूँ।

उन्होंने अपने प्रज्ञा पराग से जन-जन को सुशोभित किया है। उन्होंने बताया कि संयमित इंद्रयो के द्वारा ही आत्मा सुरक्षित रहेगी। उन्होंने विस्मृत ध्यान प्रणाली को "प्रेक्षाध्यान" के रूप में प्रस्तुत किया। प्रज्ञा व विनम्रता का अनोखा संगम थे आचार्य महाप्रज्ञ।

– सुशीला चौपड़ा, कार्यसमिति सदस्य
(अ.भा.ते.म.मं.)

महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष का पावन अवसर
महात्मा महाप्रज्ञ-प्रज्ञा पुरूष को कनक का नमन।
तर्ज : होठों से छू लो

प्रज्ञा पुरूष प्रभुवर! हम करते अभिनन्दन।
चरणों में अभ्यर्थन, लो भाव भरा वन्दन।।
जन्म शताब्दी गुरू की, खुशिया उमड़ाई है।
भक्तों के मानस की, बगिया विकसाई है।
श्रद्धा का थाल लिए, अर्पित करते चन्दन।।
अंकुर वट वृक्ष बना, उस अद्भूत क्षमता से।
वह बूंद बनी सागर, तुलसी की ममता से।
समता से बन पाए, हम शक्ति के स्पंन्दन।।
प्रभु के अनुदानों से, कितनों ने पार पाया।
तुम हो करूणा सागर, सुर तरु शीतल छाया।
आशीर्वर दो ऐसा, बन जाए निर्बन्धन।।

– कनक बैद, कार्यसमिति सदस्य
(अ.भा.ते.म.मं.)

अध्यात्म एवं दर्शन के शिखर पुरोधा – आचार्य महाप्रज्ञ!

ओजस्वी वाक् कला व शब्दों का चमत्कृत दर्शन की आप बेजोड़ कृति बन गए। सरलमना हृदय में गंभीर चिंतन व समय के सटीक प्रबंधन ने आपके जीवन में नये-नये आयामों का अनावरण कर दिया। आपकी साधना ने आपके शरीर के प्रत्येक रोम-रोम में प्रज्ञा के चक्षु खोल दिए। आपके प्रवचन में आपकी विनीत भावना व गुरु के प्रति समर्पण हमेशा परिलक्षित होता है। आज के युग में आप के द्वारा कहे व लिखे गए प्रत्येक शब्द व्यक्ति के जीवन की सफलता के रहस्य उद्घाटित करते हैं।

आपकी हर लेखनी का शब्द वर्तमान जीवन की सभी समस्याओं का स्टीक समाधान प्रस्तुत करता है। ध्यान की अनन्त गहराई में जाकर आपने जो जीवन व शरीर के रहस्यों का सटीक समाधान निकाला है, वह युगों-युगों तक मानव जाति के लिए कल्याणकारी रहेगा। आपका हर प्रवचन वर्तमान की समस्याओं पर होता जिसमें आपके सुझाव निर्पेक्ष भाव से रहते हैं। यह आपकी विषय पर गहरी पकड़ से ही संभव हो पाता था। आपके प्रति अनन्त-अनन्त अभिवन्दना ....

– हेमलता नाहटा, कार्यसमिति सदस्य
(अ.भा.ते.म.मं.)

आचार्य श्री महाप्रज्ञ को नत्थू से महाप्रज्ञ बनने में अष्टम् अधिशास्ता कालूगणी का असीम वात्सल्य और तुलसीगणी का अनुशासन योगभूत बना।उनकी अभूत पूर्व वाणी से उन्होंने जो बोला वही लिखा और वही जीवन जीया।

महाप्रज्ञजी के प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान और आगम सम्पादन जैसे अवदान आज वरदान बन रहे है।उनका एक प्रवचन जीवन की दिशा को बदल सकता है।

तेरापंथ महिला मंडल, सचीन, सूरत

महात्मा महाप्रज्ञ

युगनायक, युगप्रधान आचार्य महाप्रज्ञ जी के मंगलमयी प्रवचन और सदसाहित्य स्वाध्याय से लगा कि उन्होंने युग की नब्ज पकड़कर हमारे जैन आगमों को युगधारा में प्रवाहित कर युगीन समस्याओं को वैज्ञानिक संदर्भ के द्वारा युग की भाषा में समाहित किया है। आपका आध्यात्मिक- वैज्ञानिक व्यक्तित्व, सफल नेतृत्व और कुशल कर्तृत्व अविस्मरणीय है। आपके विविध अवदानों से सकल विश्व लाभान्वित हो रहा है। युगों युगों तक युगपुरुष का युग आभारी रहेगा।

तेरापंथ महिमा मंडल, भोटेबहाल, काठमांडू

21 वीं सदी के महासूर्य आचार्य महाप्रज्ञ जी युग दृष्टा, युग स्रष्टा, युग प्रचेता और युग पुरुष थे। अपना संपूर्ण जीवन मानवीय मूल्यों के पुनरुत्थान, विश्व शांति, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, आगम संपादन जैसे मानव कल्याणकारी कार्यों को समर्पित कर दिया।

आप एक मौलिक चिंतक, मूर्धन्य साहित्यकार महान दार्शनिक व मनीषी संत थे। आप गुरुता के उच्च शिखर पर आरूढ़ थे जहां से करुणा वात्सल्य सहृदयता का निर्झर प्रतिक्षण प्रवाहित होता था। ऐसे अलौकिक व्यक्तित्व, सृजनात्मक कर्तृत्व और अहिंसक नेतृत्व को प्रणाम।

तेरापंथ महिला मंडल, श्री डूंगरगढ़

राजस्थान टमकोर का संस्कारी चौरड़िया परिवार,1920, तोलारामजी बालूजी के घर, गोधुलि बेला में दिव्य शिशु का जन्म हुआ। मां के संस्कार,कालुगणी व तुलसी जैसे गुरू, अपने मौलिक चिंतन व दृढ़ विश्वास से अनेक अवदान देते हुए, बीसवीं सदी का महान संत, दसवां आचार्य, 90 वर्ष तक सेवा करते महाप्रयाण किया।

तेरापंथ महिला मंडल, दालकोला

इस काल चक्र में ऐसे अनेक महापुरुष हुए हैं, जिनका नाम इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्णक्षरों में अंकित है। उन्हीं महापुरुषों में विश्व विश्रुत नाम है - आचार्य श्री महाप्रज्ञ। जिनका नाम लेते ही हमारी आंखों के सामने एक सूक्ष्म प्रज्ञाधार, योगसाधक उच्च कोटि के तार्किक मनीषी, साहित्यकार और प्रभावशाली वक्ता का चेहरा नजर आता है। आचार्य महाप्रज्ञ जी का जीवन करुणा का सागर था तो साहित्य का विरल संसार भी।

तेरापंथ महिला मंडल, कालू

महामानव थे सच में इस युग के वो,
आगम मंथन कर दुर्लभ ज्ञान दिया ।
आत्मा का विशद विवेचन सरलतम,
प्रेक्षाध्यान और जीवनविज्ञान दिया
गुरु तुलसी के बन आज्ञाकारी शिष्य,
तेरापंथ संघ को मेरु सा ऊचाँन दिया
वंदन प्रज्ञापुरुष शारदेपुत्र महाप्रज्ञ को
साहित्य में स्थापित कीर्तिमान किया।

तेरापंथ महिमा मंडल, अंकलेश्वर-भरूच

महाप्रज्ञ को वंदन

मैंने अपने जीवन में महाप्रज्ञ जी के कई कई बार दर्शन किए और उनका प्रवचन भी सुना। उनका व्याख्यान सुनना उनके व्याख्यान में हमेशा एक स्थिरता सादगी उच्च भाव और दृढ़ निश्चय होता था। महाप्रज्ञ की आज भी कुछ किताब में पढ़ती हूँ, मैं सदैव महाप्रज्ञ जी के पद पर चलना चाहती हूँ, मैं सदैव एकाग्रता और दृढ़ निश्चय से अपने जीवन को आगे संयम के मार्ग पर ले जाऊं। ओम महाप्रज्ञ

तेरापंथ महिला मंडल, रतनगढ़

विराट व्यक्तित्व के धनी आचार्यश्री महाप्रज्ञ केवल तेरापंथ तक सीमित नहीं रहे, अध्यात्म योगी जन-जन के हृदय में बस गए। ब्रह्मतेज से दीप्त नयन, अप्रमत्त दिनचर्या, प्राणी मात्र के प्रति मैत्री और करुणा आपके जीवन की मौलिक विशेषताएं थी। प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान आपके अद्भुत अवदानों से संघ ही नहीं जैन व जैनेतर जगत सभी स्तब्ध रह गया।

आप की तेजस्विता, का एक भी गुण आ जाये तो हमारा जीवन पतित से पावन हो सकता है । शत-शत वंदन।

तेरापंथ महिला मंडल, जोधपुर

अध्यात्म के कल्पवृक्ष, प्रज्ञा के शिखर पुरुष, प्रेक्षा प्रणेता, आगम विज्ञेता, सूक्ष्मग्राही मेघा, सृजनात्मक प्रतिभा, विनम्रता, सजगता, समर्पण की मशाल, सरस्वती के सहिष्णु पुत्र विलक्षण आचार्य के विलक्षण शिष्य जिनका संपूर्ण जीवन इतिहास परत दर परत प्रेरणा देने वाला है।

आचार्य महाप्रज्ञ जी के व्यक्तित्व को क्या तोलेंगे बाट
आचार्य श्री तो गुणागार हैं, जन जन के सम्राट-जन-जन के सम्राट

तेरापंथ महिला मंडल, कांकरौली

विश्वशान्ति के दीप स्तंभ महाप्रज्ञजी तुलसी के आंगन में खिला वह फूल थे जिसकी खुशबू से सुहासित हुआ जग सारा। जीवन विज्ञान प्रेक्षाध्यान, अनमोल साहित्य सृजन, आगम ग्रंथों का संपादन, नैतिकता और धन संग्रह का संयम आदि अमृतमई देशना के द्वारा मानव कल्याण का मार्ग प्रशस्त करने वाले ज्ञान के सागर महाप्रज्ञजी के व्यक्तित्व को शब्दों की सीमा में नहीं बाँधा जा सकता है। ऐसे गुरुदेव महाप्रज्ञजी को शत-शत नमन।

तेरापंथ महिला मंडल, गजपुर

21वीं सदी को अध्यात्म विज्ञान की सदी बनाने के लिए अहर्निश प्रयत्नशील अध्यात्म योगी प्रज्ञा महर्षि का नाम है आचार्य महाप्रज्ञ क्या आपने आचार्य महाप्रज्ञ को जाना है? जिनके बहुआयामी व्यक्तित्व ने शैक्षणिक, सामाजिक क्षेत्र मे कीर्तिमान गढ़े है। इस युग के जाने पहचानने व्यक्तित्व है आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ।

मस्तिष्क को झकझोरने वाले आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के लेखन ने पूरे भूमंडल पर अगणित पाठको को बुद्धिजीवियों को आकर्षित किया ऐसे आचार्यश्री महाप्रज्ञजी को शत् शत् नमन ।'

तेरापंथ महिला मण्डल, औरंगाबाद

तेरापंथ के दशमाधिनायक आध्यात्मिक ऐश्वर्य संपन्न, करुणाशील, वीतरागपथ के अनुगामी, कल्पतरु सदृश दिव्यगुणों के धारक, कोलाहल पूर्ण कलिकाल में जगतव्यापी तनाव के नाशक, धर्म संघ में विविध विधाओं के कल्पतरू को अंकुरित, पल्लवित, पुष्पित करने वाले, गुरु इंगित पर पूर्ण समर्पित, अपने ज्ञान और प्रज्ञा से पूरे विश्व को आलोकित करने वाले, महासूर्य की रश्मियाँ युग युगांतर तक पथ दर्शन कराती रहेगी।

तेरापंथ महिला मंडल, विजयनगरम् (आंध्र प्रदेश)

वंदन ज्योतिपुंज गुरुवर बोधि से बने बुद्ध, अज्ञ से महाप्रज्ञ,
तुलसी महाविद्यालय अध्येता, जीवन दर्शन मर्मज्ञ।
वीतराग वाणी प्रणीत, संयम पथ उदगाता,
प्रेक्षाध्यान जीवन-विज्ञान है तारणहार त्राता।
अन्वेषक प्रयोगधर्मा, तप संयम विशिष्ठ,
निर्मल अंत:करण इन्द्रीयजयी, दिव्य वाणी इष्ट।
भाष्यकार, साहित्य-सृजक, बहुभाषाविद आशुकवि,
तीर्थंकर तुल्य गुरुवर, वन्दन ज्योतिपुंज रवि।

तेरापंथ महिला मण्डल, गुरुग्राम

महात्मा महाप्रज्ञ

अतिशयवर महात्मा महाप्रज्ञजी की जागृत अंतर्दृष्टि का स्पष्ट प्रमाण था नई दृष्टियों का साक्षात्कार। आपके द्वारा प्राप्त प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान, अहिंसा समवाय, अहिंसा यात्रा तथा स्मरणीय ज्ञानवर्धक साहित्य इन पंचरत्नमणि रूपी अवदानों में से कोई भी अवदान हो, पहले जीया गया फिर अनुभव सबके बीच बांटा गया। हमें भी इस अमूल्य देन को आत्मसात कर आत्मज्ञान के प्रकाश से मुक्ति मार्ग को प्रशस्त करना है। हर शब्द में समाहित हुए श्रद्धा के बीच को भीतर से सिंचन देकर कल्पवृक्ष बनाना है। यही होगी हमारा वास्तविक श्रद्धांजलि।

तेरापंथ महिला मंडल, रीछेड़

विनय, श्रद्धा, समर्पण, ऋजुता का साक्षात् प्रतिबिम्ब हैं, आचार्य महाप्रज्ञ का व्यक्तित्व। आपका हिन्दी, प्राकृत और संस्कृत भाषा पर अधिकार था और इन भाषाओं में आशु कविता रचना की अद्वितीय क्षमता थी। आगम संपादन का दुरूह कार्य कर आपने न केवल गण भंडार भरा अपितु जैन शासन को भी अमूल्य देन दी। आपके प्रयोगधर्मा अनुभवों से निसृत प्रेक्षाध्यान साधना जनमानस के लिए मानसिक संबल, स्वास्थ्य की कुंजी है।

प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान जैसे महनीय अवदान के लिए केवल तेरापंथ धर्मसंघ ही नहीं मानवता सदैव आपकी ऋणी रहेगी।

तेरापंथ महिला मंडल, टालीगंज

अंकिता श्रीश्रीमाल, हुबली

आधुनिक युग के विवेकानंद आचार्य महाप्रज्ञ ज्ञान और चतेना के भंडार थे। उनका संस्कृत, प्राकृत, हिंदी और अंग्रेजी का ज्ञान अतुल्य था। उन्होंने ही प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञानं और आगम संपादन जैसे आचार्य तुलसी के महान स्वप्नों को फलीभूत किया। आप महान रचनाकार, मंत्रविद, संगायक और प्रवचनकार थे।

ऐसे महान आचार्य को मेरा शत् शत् नमन।

तेरापंथ महिला मंडल, विशाखापट्टनम

आचार्य महाप्रज्ञ–हमारे दशमाधिशास्ता, यशस्वी गुरु के वर्चस्वी शिष्य, महावीर वाणी के भाष्यकार, आध्यात्मिक–वैज्ञानिक व्यक्तित्व का जीवट आदर्श, प्रज्ञा और पुरूषार्थ की समन्विति, धर्मवृद्धता और बालऋजुता का सम्मिश्रण, शब्दात्मा से अर्थात्मा तक का सफरनाम, प्रेज्ञा–महाध्यानी–महायोगी, स्वस्थ जीवन शैली के प्रयोक्ता–प्रवक्ता, प्राचीनता और नवीनता के सेतु, अनुभवों का अक्षयकोष, मूर्धन्य साहित्यकार, मौलिक चिंतन, महान् दार्शनिक को कोटिशः नमन्।।

तेरापंथ महिला मंडल, कूच विहार

आचार्य महाप्रज्ञ न केवल असाधारण क्षमतावान, आध्यात्मिक प्रज्ञा पुरुष थे अपितु उत्कृष्ट कोटि के महान दार्शनिक, आशु कवि एवं प्रबुद्ध प्रवचनकर्ता थे। अहिंसा, नैतिकता, शांति, जीवन विज्ञान और प्रेक्षाध्यान तो उनके रोम–रोम में समाया हुआ था। उनका पावन पवित्र आभामंडल आंतरिक चेतना को विकसित करने की सदैव प्रेरणा देता था। जन्म शताब्दी वर्ष पर यही भावांजलि अर्पित है हम सभी धर्म की मौलिकता को आचरण में लाएं।

तेरापंथ महिला मंडल, टी– दासर हल्ली, बेंगलुरु

जैन श्वेताम्बर सम्प्रदाय के दशम् आचार्यश्री महाप्रज्ञजी एक सफल मानवतावादी नेता, शान्ति दूत, दार्शनिक, लेखक, आशुकवि, प्रेक्षाध्यान पद्धति एवं जीवन विज्ञान के प्रयोक्ता थे। आचार्यश्री तुलसी ने उन्हें अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। आचार्य महाप्रज्ञ के ज्ञान और चेतना से जैन समाज का तेरापंथ तो लाभान्वित हुआ ही साथ ही संपूर्ण मानव जाति भी लाभान्वित हुई।

तेरापंथ महिला मंडल, जयगांव, भूटान

प्रज्ञा के महासूर्य को नारी शक्ति का शत्–शत् नमन। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अपने प्रभावी व्यक्तित्व एंव कुशल नेतृत्व से सुयोग्यता को सत्यापित किया है। न केवल तेरापंथ ओर जैन समाज में अपितु पूरे भारतीय प्रबुद्ध समाज में आपका नाम मौलिक चिंतन एवं महान दार्शनिक के रूप में सम्मान के साथ लिया जाता है। आपने अपने महान अवदानों से दर्शन अध्यात्म योग और भारतीय वांङ्मय की जो सेवा की है उसके लिए मानव जाति आपकी उपकृत है।

तेरापंथ महिला मण्डल, गौरीपुर

आचार्य महाप्रज्ञ जैन धर्म की श्वेताम्बर परम्परा के तेरापंथ धर्मसंघ के 10वें आचार्य हुए हैं, लेकिन वे किसी परिधि में बंधे नहीं मानव संत के रूप में विख्यात हुए।

समस्त मानव कल्याण हेतु धर्म, दर्शन, सिद्धांत, राजनीति, समाज व्यवस्था पर अपने मौलिक प्रवचनों एवं साहित्य सृजन द्वारा अहिंसक जीवन प्रणाली एवं अनेकांत की आराधना से जन–जन का कल्याण कर आज प्रकाश पुरुष के रूप में अवतरित है।

तेरापंथ महिला मंडल, राजविराज

।। ॐ श्री महाप्रज्ञ गुरुवे नमः ।।

हे महादीप, महाज्ञाता, आत्मज्ञान प्रदाता,
तुम्हारे प्रज्ञा के महासूर्य से ये लाखों दीप जलते रहेंगे।

हे महावृक्ष, महात्मा, प्रेक्षाध्यान प्रदाता,
तुम्हारे सहारे से ये लाखों फल सदा फलते रहेंगे।

हे महाप्राण, महाप्रज्ञ, जीवन-विज्ञान संघाता,
तुम्हारे बताए गए मार्ग पर ये चरण चलते रहेंगे, चलते रहेंगे।

आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी 'ज्ञान चेतना वर्ष' हमारी साधना, सत्य और आध्यात्म वृत्ति को निखारने वाला हो, यही अभ्यर्थना है, श्रद्धासिक्त भाव-वंदना है।

तेरापंथ महिला मण्डल, श्रीगंगानगर

अल्पज्ञ-महाप्रज्ञ-सर्वज्ञ

पवित्र चेतना का नाम था महाप्रज्ञ। बचपन में मिला संबोधन अल्पज्ञ। तुलसी चरणों में ज्ञानार्जन महायज्ञ, आत्मप्रेक्षा ने बनाया आत्मज्ञ। नवीन प्राचीन ग्रंथों के मर्मज्ञ, जीवन विज्ञान विशेषज्ञ। आगम अवगाहन कर बने आगमज्ञ, समयानुकूल निर्णय लेने वाले समयज्ञ। आपके अवदानों का अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल है कृतज्ञ।

तेरापंथ महिला मंडल, उत्तर हावड़ा

आचार्यश्री महाप्रज्ञ महान दार्शनिक, आशुकवि प्रखर वक्ता और महान् साहित्यकार थे। आपके व्यक्तित्व में अनके विशेषताएं एक साथ प्रस्फुटित है। अहिंसा की व्याख्या करते हुए भगवान महावीर, भक्ति की ज्ञान गंगा को प्रवाहित करते हुए आचार्य मानतुंग एवं आगमों के सारभूत तथ्यों के संग्रह में आप साक्षात् उमास्वाति थे।

शताधिक ग्रंथों की रचना कर गण के भंडार को भरने वाले अपने आचार्य हेमचन्द्र थे। इस प्रकार आपके अनुपम व्यक्तित्व को शब्दों में बांधना कठिन है।

तेरापंथ महिला मण्डल, चूरू

दस वर्ष की अल्पायु में दीक्षा स्वीकार कर 80 वर्ष तक तेरापंथ धर्म संघ को आपने अपूर्व सेवा तथा प्रभास्वर से आलौकित करने वाले हमारे दसवें आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी थे। आपने 300 से अधिक ग्रंथ को आपकी लेखनी से संवारा। आगम का संपादन "प्रेक्षाध्यान पद्धति" का आविष्कार "जीवन-विज्ञान" कार्यक्रम अहिंसा समवाय मंच की प्रस्तुति आपकी अविस्मरणीय देन है। बाल नामकरण नथमल से महाप्रज्ञ और महाप्रज्ञ से युग प्रधान का सफर दिर्गदगंत तक जनमानस में आपकी अमिट छाप रखेगा।

तेरापंथ महिला मण्डल, पटनासिटी

महाप्रज्ञ वो नाम है,
जिसने बढ़ाया जैन धर्म का मान है।
महाप्रज्ञ वो नाम है,
जिसने बढ़ाया श्रावकों का ज्ञान है।
महाप्रज्ञ वो नाम है,
जिसने साधु-साध्वियों को दिलाया सम्मान है
महाप्रज्ञ वो नाम है,
जिसने सूरज, चांद, सितारों में
लिखवाया अपना नाम है

तेरापंथ महिला मण्डल, हाँसी, हिसार

तेरापंथ के दसवें आचार्य, वि. सं. 1920 को टमकोर के चोरड़िया परिवार में जन्म हुआ।

माता-बालुजी, पिता तोलाराम जी, जन्मनाम-नथमल। 10 वर्ष की आयु में माता के साथ सरदारशहर में वि.सं. 1959 में कालुगणी श्री से दीक्षा ली। संस्कृत भाषा के सफल आशुकवि थे, विद्वानों के लिए एक विश्वकवि है। वि.सं. 2034 गंगाशहर में महाप्रज्ञ की उपाधि मिली।

राष्ट्रकवि रामधारीसिंह ने दूसरे शब्दों में विवेकानन्द कहा।
महाप्रयाण - 9 मई 2010 सरदारशहर।

तेरापंथ महिला मण्डल, माणसा (गुजरात)

आचार्य महाप्रज्ञ जी ने आगम संपादन, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अणुव्रत, आदि के लिए महत्वपूर्ण सेवाएं तेरापंथ धर्मसंघ को दी। आचार्य महाप्रज्ञ जी का जीवन अहिंसा व करूणा से भी ओत प्रोत था। सूरत चातुर्मास में राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम से गुरूदेव ने कहा था कि आपने बहुत सी मिसाइलों का निर्माण किया है। क्या कभी अहिंसा की मिसाइल का निर्माण करने का विचार आया, आचार्य महाप्रज्ञजी के उक्त विचारों से डॉ. कलाम बहुत प्रभावित हुए। जीवन के 9वें दशक में भी आप तत्वज्ञान पर आधारित प्रवचन सुनाते थे आप द्वारा लिखित पुस्तकों से जीवन जीने की कला का पता चलता है।

तेरापंथ महिला मंडल जीन्द, हरियाणा

अध्यात्म जगत के महासूर्य परम पूज्य प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञ एक विरल व्यक्तित्व, जो मानव जाति के लिए एक अवदान है। जिन्होंने अपनी प्रज्ञा की रश्मियों से पूरी मानवता को एक अद्‌भुत अद्वितीय आलोक प्रदान किया। चारों ओर छाए हुए अंधकार को दूर किया। जनमानस के मन में श्रद्धा की एक अमिट छाप छोड़ी। आज के इस तनाव भरे वातावरण में साधना और समता का विकास किस प्रकार किया जाए इसकी जानकारी हम सबको प्रदान की। आपकी कृति आपके अवदान युगों-युगों तक अमर रहेंगे।

उस महामानव को कोटि-कोटि प्रणाम!

तेरापंथ महिला मंडल, सोलापुर

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का जन्म शुभ बेला, शुभ घड़ी व शुभ नक्षत्र में खुले आकाश के नीचे धरती पर हुआ। जिस प्रकार आकाश व्यापक, विशाल और असीम है, उसी प्रकार आपके विचार, आचार, व्यवहार, संस्कार व्यापक और विशाल हैं। आपने अपने अप्रतिम ज्ञान से केवल जैन धर्म को ही नहीं अपितु पूरी मानव जाति को उपकृत किया है। आप अलौकिक चेतना के धनी, युगदृष्टा, युगसृष्टा, युगपुरुष, विचारक दार्शनिक थे। आपके जन्म शताब्दी वर्ष के पावन अवसर पर श्रद्धासिक्त कोटिशः वंदन, अभिनंदन!

तेरापंथ महिला मंडल, आसींद

मुदिता डाकलिया, गंगाशहर

महामनीषी, महायोगी, प्रकाशपुंज, प्रज्ञापुरुष को नमन्। आपका जीवन समर्पण, निस्पृहता, संकल्पशक्ति, दृढ़ आत्मविश्वास व श्रमशीलता जैसे गुणों का समवाय था। नत्थु से महात्मा महाप्रज्ञ के सफर आरोहण में ये हेतुभूत बनें। आध्यात्मिक वैज्ञानिक के साथ वर्तमान के विवेकानन्द, प्रेक्षाध्यान, जीवनविज्ञान प्रणेता, आगम भाष्यकार, दार्शनिकता, साहित्य सृजनता, प्रखर वक्तृत्व कला आदि अवदान उद्‌बोधक व चिरस्थायी है। जो सदियों तक मानवमात्र का मार्गप्रशस्त करते रहेंगे।

तेरापंथ महिला मंडल, ईरोड़

'आत्मा मेरा ईश्वर है त्याग मेरी प्रार्थना है मैत्री मेरी शक्ति है अहिंसा मेरा धर्म है' इन शब्दों में अपने भावात्मक व्यक्तित्व का परिचय देने वाले आचार्य महाप्रज्ञ आत्म एवं लोकमंगल के लिए समर्पित संत थे। पुरुषार्थ के धनी, अध्यात्म प्रहरी, महान दार्शनिक, विचारक एवं गहन चिंतक, आगम रहस्य के अंत मर्मज्ञ, वैश्विक धर्मों के धर्म दूत, प्रेक्षा प्रणेता, जीवन विज्ञान दाता, करुणा के रत्नाकर आचार्य महाप्रज्ञ इस धरणि के शिखर रहे हैं।

तेरापंथ महिला मंडल, सूरत

प्रज्ञा पुंज हे महाप्रज्ञ, स्वीकृत हो मेरी वंदना।

तुलसी विद्यालय में पाई, शिक्षा ये बेजोड़,
आपकी प्रज्ञा की किरणें, चमकें चारों ओर।

महावीर – भिक्षु की वाणी पर पूरा अधिकार,
प्रेक्षाध्यान की लौ जलाकर मिटा दिया अंधकार।

कठिन विषय को सरल बनाकर, देते आप उपदेश,
आपके प्रवचन में उतरा पल-पल समता का संदेश।।

तेरापंथ महिला मण्डल, वाराणसी

।। ॐ श्री महाप्रज्ञ गुरुवे नमः।।

महात्मा महाप्रज्ञ –

एक महान आत्मा, जो थी स्वयं परमात्मा जीवन-ज्योति जलाकर, दिखलाया सबको रास्ता, किया कल्याण स्वयं का, तारा तेरापंथ कभी नहीं भूलेगा मानवता उस महात्मा संत को।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ
अचरज में सब पड़ गए,
महाप्रज्ञ सा पा आचार्य।
उनके दिशा-निर्देशों को,
किया संघ ने शिरोधार्य।
दशम अनुशास्ता बने,
अनुपम एक अवदान।
उनकी गुण-गाथा करूं
शत-शत कोटि प्रणाम।।

तेरापंथ महिला मण्डल, शिलौंग

कुछ महापुरुष ऐसे होते हैं जिनका कृर्तत्व और अनुदान ही मानवता का मार्गदर्शन करता है। ऐसे थे आचार्य महाप्रज्ञ उन्होंने धर्म संघ को अनेक अवदान दिए। अध्यात्म, जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान का गूढ़ अध्ययन कर प्रेरणा रूप अवदान दिया।

महात्मा के रूप में वे वस्तुतः महान थे। खाद्य संयम, सुनियोजित, जीवन चर्चा आदि के महान मनीषी थे।

तेरापंथ महिला मण्डल, खुश्की बाग

मानव नहीं महामानव हो आप
प्रज्ञ नहीं महाप्रज्ञ हो आप
नवयुग के विवेकानंद हो आप
तेरापंथ धर्म संघ के सरताज हो
अहिंसा अणुव्रत से हर मानव को सजाया
नैतिक मूल्यों के संस्कार से सब को जगाया
आज वह मानवता का मसीहा हो गया
महाप्रज्ञ तुम सत्य स्वरूपी हो

तेरापंथ महिला मण्डल, हासन

अहिंसा सत्य ब्रह्मचर्य था
जिनके जीवन का मूल आधार।
साधना की बदौलत से हुई
उनकी जयकार।

14 जून 1920 तक नथमल से महाप्रज्ञ युवाचार्य और फिर अचार्य श्री महाप्रज्ञ बन जाना उनका स्वाभाविक था। अपने अतुल्य ज्ञान की बदौलत से इनको देश के राजनेताओं ने इष्ट देव की उपाधि दी। समाज कल्याण का सम्मान भी किए। अपने गहन ज्ञान के लिए कई बार दूरदर्शिता दृष्टि एवं प्रज्ञा से सबको प्रभावित किया।

तेरापंथ महिला मण्डल, बारडोली

बीसवीं सदी के विश्व पटल पर जिनका नाम श्रद्धा और गौरव के साथ लिया जाता है-वे हैं महात्मा महाप्रज्ञ। विनम्रता, सरलता, तेजस्विता, मृदुभाषिता, हृदय परिवर्तन में विश्वास, आपके व्यक्तित्व कृर्तत्व में प्रकाशित है। आपका पवित्र जीवन पारदर्शी व्यक्तित्व और उदार चरित्र हर किसी को अपनत्व के घेरे में बांध लेता है।

प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, जैनयोग पुनरोद्धारक, अध्यात्मिक चेतना का जागरण, जैन वाङमय का सम्पादन। आपने शिक्षा के क्षेत्र में कोई पहलू अछूता नहीं छोड़ा। बीसवीं सदी के युग चिंतक, महान साहित्य सर्जक, महान विचारक कहूं या आज के विवेकानंद कहूं तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी पर अंतर हृदय से भावांजलि

तेरापंथ महिला मण्डल, सायरा

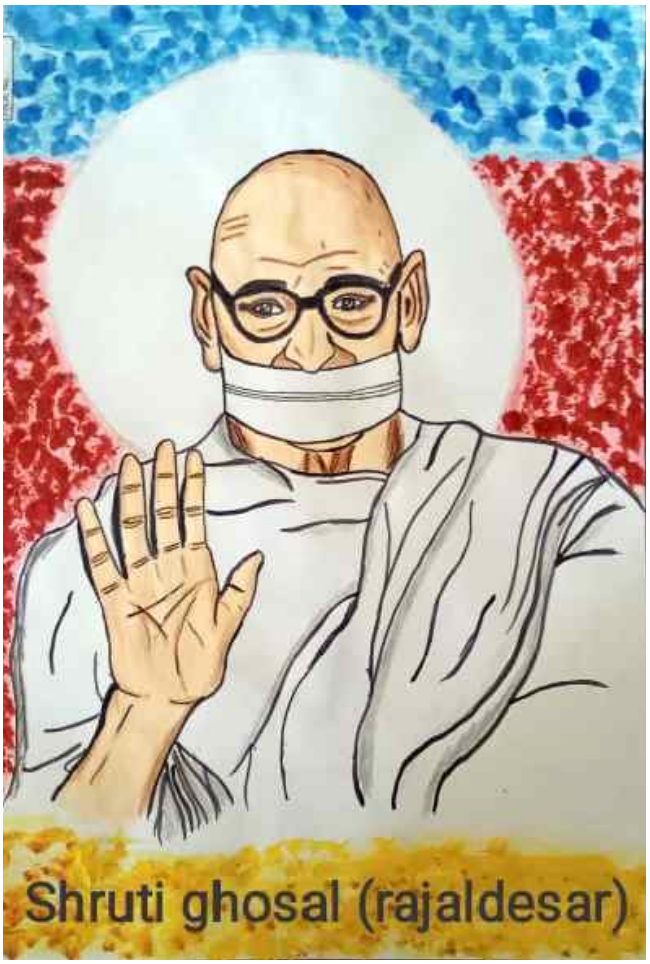

'महाप्रज्ञ'

आत्मा मेरा ईश्वर है, त्याग मेरी प्रार्थना,
मेत्री मेरी भक्ति है, संयम मेरी शक्ति है,

अहिंसा मेरा धर्म है, इन शब्दों में अपना परिचय देने वाले विश्व के महान संत का नाम आचार्यश्री महाप्रज्ञ। उनकी उदारता, समन्वय दृष्टि ने उन्हें पूरे विश्व का गुरु बना दिया, ऐसे थे-जैन ध्यान के कोलम्बस, आज के विवेकानंद, अहिंसा के अग्रदूत, विज्ञान व अध्यात्म समन्यवक, शांति व सद्भावना के प्रवर्तक यूगप्रचेता, युगप्रणेता, गणाधिपति के सुयोग्य उत्तराधिकारी आचार्य श्रीमहाप्रज्ञ। नमन है इस विभूति को हमारा...

तेरापंथ महिला मंडल, सिलीगुड़ी

'आचार्य महाप्रज्ञ'

अनेकांत में एकांत खोज ले, वे धर्म मार्ग दिखलाते हैं! साधक बनकर साधन त्यागे, भव से पार लगाते हैं! जिनकी चरण धूल से जीवन सुधरे, जिनकी वाणी से जग संभले, जो ज्ञान का दीप जलाते हैं, निराश में आश जगाते हैं! अपने सत्कर्मो के चंदन से धर्म की फुलवारी महकाते हैं, ऐसे मर्यादित महामानव ही महाप्रज्ञ कहलाते हैं- महाप्रज्ञ कहलाते हैं।

तेरापंथ महिला मंडल, लाडनूँ (राज.)

आचार्य महाप्रज्ञ जी की जन्म शताब्दी पर विचार

अपनी प्रज्ञा की पावन आभा से युगपथ दर्शन करने वाले महान दार्शनिक, आधुनिक युग के विवेकानंद, युगप्रधान, धर्मचक्रवर्ती, प्रेक्षाध्यान अनुसंधाता, जीवन विज्ञान प्रदाता, साहित्य सृजनकार, सरस प्रवचनकार, आगम संपादक, विनम्र शिष्य और विलक्षण गुरू, योगी संत अध्यात्म जगत के शिखर पुरुष, आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की जन्म शताब्दी पर कटक महिला मंडल की ओर से वंदना एवं भावभरी विनयांजलि।

तेरापंथ महिला मण्डल, कटक

'महामना महाप्रज्ञ - मेरे आराध्य'

विद्या व साधना के संगम-महाप्रज्ञ
मात्र एक व्यक्ति नहीं अपितु एक समग्र संस्था है।
'भारत के दूसरे विवेकानंद'- अनंत ज्ञान का भंडार ही नहीं अपितु असीम ऊर्जा का स्रोत भी है।
'प्रज्ञा के पुरोधा' ने वर्तमान को संवारकर शुभ भविष्य का शिलान्यास किया।
'प्रेक्षा ध्यान' के रूप में अप्राप्त को प्राप्त करने तथा प्राप्त की सतत् सुरक्षा का अवदान दिया।
'अहिंसा यात्रा' के द्वारा-अहिंसक चेतना जागृत कर, हिंसा की आग में झुलसती मानवता को
त्राण दिया।

तेरापंथ महिला मंडल, साउथ कोलकाता

महाप्रज्ञ कैसे थे, महाप्रज्ञ कौन थे, यह सब जानते हैं।

लेकिन महाप्रज्ञ क्या थे?अगर यह किसी ने समझ लिया तो उसके जीवन की बहुत सी समस्याओं का समाधान स्वत: हो जाएगा!

महाप्रज्ञ वह महानायक थे। जिनका हर शब्द सत्य से परिभाषित था!

महाप्रज्ञ वह प्राण थे जो प्रेक्षाध्यान द्वारा लोगों में संजीवनी फूंक देते थे!

महाप्रज्ञ अपने युग का एक विराट व्यक्तित्व था, जो इतिहास, वर्तमान और भविष्य की ऐसी निधि है, जो युगों युगों तक सुरक्षित रखी जाएगी!

तेरापंथ महिला मण्डल, कैनूर

जय महाप्रज्ञ बालूनन्दन करते हैं आपका अभिनन्दन।
ऐसे गुरुवर को पाकर हम, धन्य हुए शत्-शत् वन्दन।।
नव कल्पना के सर्जक तुम
नव ऊर्जा के आराधक तुम
आगम विद्या के साधक तुम
जीवन-विज्ञान के वरदक तुम
तुम प्रेक्षा-प्रणेता हो, जिनशासन की शान हो,
तेरे अवदानों को बिखराएं, तेरे आयामों पर चल पाएं।
बस इतनी सी है दिल की आरजू।

तेरापंथ महिला मण्डल, इचलकरंजी

अध्यात्म जगत के शिखर पुरुष आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी अनेक विशेषताओं के समवाय थे। प्रबल पुरुषार्थ अटल संकल्प शक्ति, अखंड ध्येय-निष्ठा, अटूट श्रद्धा और समर्पण ने उन्हें सफलता के शिखर पर पहुंचाया। अप्रमतता, जागरूकता, इंद्रिय संयमितता, ध्यान साधना के द्वारा अपनी प्रज्ञा का जागरण किया। वे महान दार्शनिक कुशल प्रवचनकार, साहित्यकार मौलिक चिंतक, आगम-संपादक, जैनयोग पुनरूद्धारक, संस्कृत व प्राकृत के विद्वान थे। उनके अवदानों के लिए मानव जाति उनकी ऋणी रहेगी। अनेकों उपाधियों से सजते रहे, पर उनकी संतता सत्यम, शिवम दीप्ति रही।

ऐसे अलौकिक पुरुष को शत्-शत् वंदन....

तेरापंथ महिला मंडल, साउथ हावड़ा

तेरापंथ संघ के दशम् अधिशास्ता, युगप्रधान, प्रेक्षा-प्रणेता, जैन-योग पुनरूद्धारक, संस्कृत, प्राकृत के प्रकाण्ड विद्वान व आशु कवि, जीवन-विज्ञान के अविष्कारक आचार्य महाप्रज्ञ का जन्म टमकोर गांव में आषाढ़ कृष्णा त्रयोदशी को हुआ। परिवर्तित साहित्य संपदा व विपुल साहित्य सृजन के कारण आप में विवेकानंद की छवि के दर्शन होते थे।

तेरापंथ महिला मण्डल, कोटा

तेरापंथ धर्मसंघ के दसवें आचार्य महाप्रज्ञ, प्रज्ञापुरुष, महाप्रज्ञ, युगप्रधान आदि अनके उपाधि से अलंकृत हुए।

आप एक महान संत होने के साथ-साथ दार्शनिक, लेखक एवं वक्ता भी थे। वे दिव्य आत्म के साथ रहस्य विद्या के भी ज्ञाता थे। आपने अहिंसा यात्रा की शुरूआत की थी। आप आगम सम्पादन कार्य के प्रधान निर्देशक, संपादक और विवेचक थे। प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान आपके द्वारा दिए गए महत्वपूर्ण अवदान हैं और इससे सम्पूर्ण समाज मानव जाति लाभान्वित हुई है।

तेरापंथ महिला मंडल, हनुमन्तनगर (बैंगलूर)

विश्व के महान दर्शनिक, कर्मयोगी, ध्यान प्रदाता आचार्य महाप्रज्ञ इस धरा पर इन्सान के रूप में भगवान थे। उनके सम्पूर्ण जीवन नैतिकता और कर्त्तव्य के पथ पर आरूढ़ होकर मानवता को समर्पित कर दिया। "योगी बने या न बने मगर उपयोगी अवश्य बने" उनकी यह पंक्तियाँ सभी में एक नया साहस, विश्वास व हौंसला भर देती है।

ऐसे युगपुरूष वंदन, अभिनन्दन.....

तेरापंथ महिला मंडल, लिम्बायत

भारतवर्ष के महान दार्शनिक तेरापंथ धर्मसंघ के दशमाचार्य महाप्रज्ञ की जन्म शताब्दी का वर्ष है। वर्तमान वि. सं. 2077 आपने अल्पायु में दीक्षित होकर जैनागमों का गहन अध्ययन किया। साथ ही अनेकों समकालीन धर्मों के रहस्यों को भी आत्मसात किया। उससे निष्पन्न आपके अवदान विश्व को मिले। आज के परिपेक्ष्य में केवल तीन का उल्लेख- • प्रेक्षाध्यान • दीर्घ श्वास • अपने घर भीतर आएं, हम सदा सुखी बन जाएं।

कोरोना के काल में धू-धू जल रहे विश्व के लिए संयम के संदेश वाहक बन रहे हैं।

तेरापंथ महिला मंडल, सरदारशहर (चुरू)

आध्यात्म जगत के शिखर पुरुष, प्रेक्षा प्रणेता विज्ञान के बिना धर्म लबाड़ा है यह सिद्ध कर दिखाने वाले तेरापंथ धर्मसंघ के १०वें आचार्य महाप्रज्ञजी आज बने है जन-जन के लिए महाप्रज्ञ। चौरड़िया कुल में जन्म ले अपनी जन्मदात्री के साथ दस वर्ष की आयु में संयम पथ धार टमकोर को पून्यान्वित किया। पूज्य कालूगणी एवं तुलसीगणी को गुरु दक्षिणा में भेंट किया मनोविज्ञान, ज्योतिष, आयुर्वेद, जैन आगम, बौद्ध एवं वैदिक ग्रंथों व प्राचीन शास्त्रों का उपहार अपने शिक्षा गुरु एवं आचार्य द्वारा आचार्य पद पाने का अद्भूत सौभाग्य एवं इतिहास रचा।

तेरापंथ महिला मण्डल, बहरामपुर

हे महाप्रज्ञ! महामानव! मस्तिष्क-मणिधारी माँ के मूर्धन्य तनय! आप सरस्वती के साक्षात पर्याय है। जैन धर्म के दिवाकर, प्रेक्षा ध्यान, जीवन विज्ञान के जनक, अहिंसा के सकल पुजारी, टमकोर के ध्रुव तारे, महावीर का अवतार, भिक्षु शासन का श्रृंगार, हे पतित पावन गंगा की धार, मंत्रों से मोहित मंत्राचार, हे सरल आगम सूत्रधार, हे प्रज्ञा जगत के मसीहा! आपने जो धर्म शिलालेख लिखा उसके हर लफ्ज में देदीप्यमान दीपक की लो जलती है। उस ज्योत से संपूर्ण भूमंडल ज्योतित हो रहा है।

तेरापंथ महिला मण्डल, उधना

महाप्रज्ञ गुरूदेव! ऋजुता मृदुता, सरल हृदयता, गुरु समर्पण वृत्ति का समावेश।

मानवता के मसीहा, अध्यात्म सुमेरू जिनका हर सृजन विलक्षण, प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान द्वारा नूतन उल्लास का संचार करके शांति, संतुलन का पथ प्रशस्त किया।

जीवन की हर राह को सुगम बनाने वाले प्रज्ञापुरुष आपका बारम्बार अभिनंदन, वंदन।।

तेरापंथ महिला मण्डल, फारबिसगंज

आचार्य महाप्रज्ञ एक व्यक्ति थे पर उनके रूप अनेक थे। कभी वे आचार्य भिक्षु के विचारों को युगीन भाषा में प्रस्तुति देते नजर आते तो कभी आचार्य तुलसी के भाष्यकार बनकर मुखर होते तो कभी उनका दार्शनिक रूप सामने आता।

कभी वह महान साहित्यकार के रूप में उभरते। कभी संस्कृत भाषा में उनका आशुकवित्व मुखरित होता तो कभी वे हिंदी भाषा में वाग्मी संत बन जाते कभी वे कुशल अध्यात्म की भूमिका का निर्वाह करते। आपका हृदय बच्चों में बच्चों सा युवाओं में युवा सा प्रौढ़ों में प्रौढ़ वृद्धों में वृद्ध बन जाता यह आपके महाप्रज्ञता की विशिष्ट पहचान थी।

तेरापंथ महिला मंडल, विजयनगर (बैंगलोर)

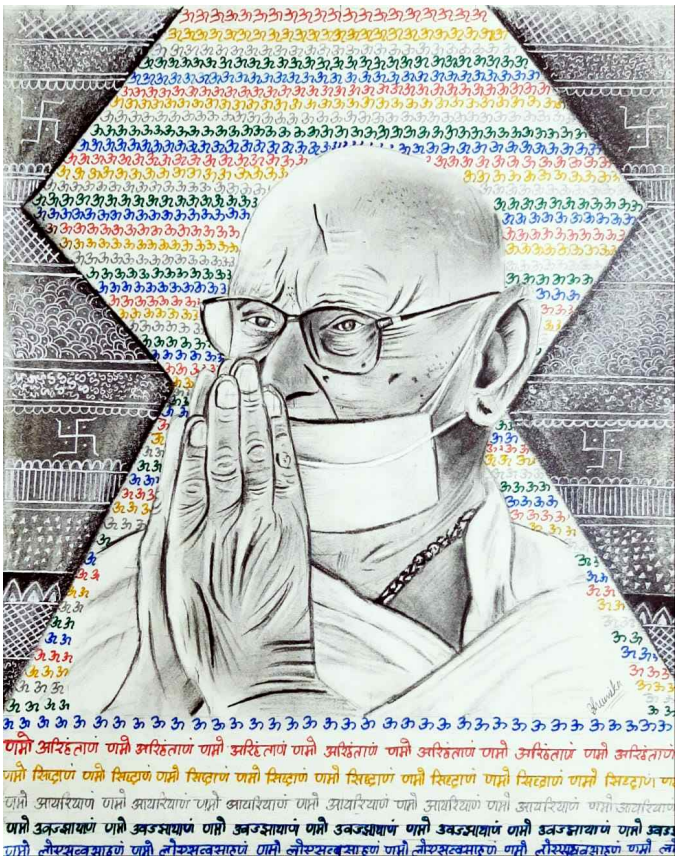

Bhumika Chhajed, Kathmandu

ॐ श्री महाप्रज्ञ गुरुवै नमः

'सांस सांस सुमिरन कर जो मन अरिहंत हुआ है,
मानवता के माथे का चंदन एक संत हुआ है।
दिव्य ज्योति का जहां हमेशा ज्ञान यज्ञ होता है,
जो जीवन का अर्थ समझ ले महाप्रज्ञ होता है।'

उपरोक्त पंक्तियाँ इंगित करती है कि जिसने जीवन के अस्तित्व को इसके शाश्वत स्वरूप को समझ लिया वह महाप्रज्ञ बन सकता है।

आज यह लिखते हुए अत्यंत गौरव की अनुभूति हो रही है कि आपका मस्तिष्क ग्रेमैटर पता नहीं कितनी High Quality का था कि उसकी हर बनावट और बुनावट में रमणीयता के वे गुलाब महकते थे, जो ढूंढो तो अरबों खरबों में भी नहीं मिलेंगे।

युग के फलक पर स्वास्तिक उकेरने वाले आगम रुपी गंगा के अवतरित भगीरथ युग प्रधान आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी को शत-शत नमन, महिला समाज का श्रद्धासिक्त प्रणमन।

तेरापंथ महिला मंडल, भीलवाड़ा (राज.)

महामनीषी, मौलिक चिन्तक, प्रेज्ञाध्यानी अन्वेष्ज्ञक,
परम सौभाग्य हमारे संघ का, मिले महाप्रज्ञ के साधक।।

सदा ही अज्ञात की खोज करने वाला अबोध नाथू माँ बालूजी, आचार्य कालूगणी व विद्यागुरु तुलसी का सान्निध्य पाकर महाप्रज्ञ बन गया। प्राकृत व संस्कृत भाषा पर प्रभुत्व कर जैन दर्शन व साहित्य का नया क्षितिज दिया। विलुप्त जैन साधना पद्धति का संधान कर प्रेक्षाध्यान व जीवन विज्ञान का प्रणयन किया जो कि समस्त मानवीय चेतना के लिए प्राणदायक तत्व है। वास्तव में ''महाप्रज्ञ: पूज्यो जिनपति सरूपों गुरुवर:''।

तेरापंथ महिला मण्डल, सिलचर

आचार्य महाप्रज्ञ भारतीय ऋषि परंपरा के उज्जवल नक्षत्र थे, उच्च कोटि के दार्शनिक, मनीषी-साहित्यकार, अनेकांतवादी तथा समन्यवादी दृष्टिकोण, अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान अभिनव अभियानों के द्वारा न केवल भारतवर्ष में बल्कि पूरे विश्व में एक दृष्टि और मूल्यबोध और अहिंसा पथ के महापथिक थे। जिनकी प्रज्ञा तथा वैज्ञानिक कोच ने आध्यात्मिक सांस्कृतिक, नैतिक, सामाजिक और शैक्षणिक क्षेत्रों में एक क्रांति पैदा की।

।। ॐ श्री महाप्रज्ञ गुरुवे नम: ।।

तेरापंथ महिला मण्डल, हॉस्पेट

एक महासाधक एक दार्शनिक योगी, संत महात्मा, लेखक कवि, टमकोर की छोटी सी धरा पर उतरा एक महा संत जिसे कालांतर में युगपुरुष महाप्रज्ञ के नाम से जाना गया ।

आपके पुनीत अंत: प्रज्ञा गहनतम तत्वों को जानने में निपुण थे, आपका पवित्र संभाषण, आपकी प्रभावशाली वाणी जन समूह में शांति उत्पन्न करती थी। आपका पवित्र हृदय निर्मल करुणा भाव से परिपूर्ण था आप गण आकाश में चमकते हुए सूर्य थे। आपने विज्ञ जनों के जटिल प्रश्नों के उत्तर सहजता और सरलता से दिए थे। सत्य आपका व्रत था श्रम आपको प्रिय था।

महाप्रज्ञ को भाव भरा वंदन।

तेरापंथ महिला मंडल, बिलासिपारा आसाम

- बल्लूजी और नथमल संयम पथ पर बढ़ने के लिए हुए उद्यत।
- कालूगणी से दीक्षा ग्रहण की, विद्या गुरु तुलसी सा पाया रूप।
- न्याय, व्याकरण, कोष, मनोविज्ञान, ज्योतिष, आयुर्वेद दर्शन में पारंगत।
- संस्कृत के सफर आशुकवि, दूसरे विवेकानंद की उपमा मिली और महाप्रज्ञ की उपाधि से अलंकृत।
- प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान का किया अविष्कार।
- व्यक्ति विकृति दूर हटाकर, आध्यात्मिक ऊर्जा से हुआ सैकड़ों का उद्धार।
- महान श्रद्धा, कवि, वक्ता, लेखक और महान साहित्यकार।
- बुद्धि प्रज्ञा विनय समर्पण प्रेक्षाप्रणेता, दसवें अचार्य आपको वंदन बारंबार ।

तेरापंथ महिला मंडल, डूंगरी

जैनयोग के पुनरुद्धारक, गद्य, पद्य और निबंध लेखन के महारथी, जीवन-विज्ञान की परिकल्पना सार्थक करनेवाले, ज्ञान, दर्शन, चारित्र का निर्झर है महाप्रज्ञ। आशुकवित्व में जिन्हें सरस्वती का वरद्हस्त प्राप्त था, युग को त्राण देनेवाले, प्रेक्षाप्रणेता शरद्चन्द्र समश्वेत विद्या और संवेदना का समावेश है। उस नि:शब्द के शब्द को श्रद्धासिक्त नमन।

तेरापंथ महिला मण्डल
आर.आर. नगर, बैंगलौर

परम श्रद्धेय आचार्य श्री महाप्रज्ञ एक बहुआयामी और विराट व्यक्तित्व के धनी थे।

एक ऐसे 'सूर्य' थे जिन्होंने कितनों को ज्ञान का आलोक बांटा। एक 'महाग्रंथ' के दसवें अध्याय थे, जो गरिमा के साथ आलोकित होकर संपन्न हो गए, ऐसे 'शशि' जिन्होंने सबको शीतलता प्रदान की, ऐसे महासागर जिसके चिंतन में गांभीर्य था। ऐसे 'गंधहस्त' जिसके यूथ में विविध रूप में सेवा देने वाले व्यक्ति थे।

हम उनकी महानता, उनके उपकारों और उनके अवदानों की प्रति प्रणत हैं।

तेरापंथ महिला मंडल, चलथान

सुसंस्कृति की पुण्याई ने प्रज्ञा-पुरुष बनाया शांत सौम्य ओजस मुख में जीवन का सार समाया। प्रेक्षाध्यान जीवन विज्ञान जिसने हमको समझाया जीवन के गूढ़ रहस्यों से अवगत हमें कराया। जिसके चिंतन बिंदु से अध्यात्म सिंधु लहराया। ज्ञानी, ध्यानी, योगी, साधक संत पुरुष हे महाप्रज्ञ। शांति-दूत बनकर तुमने अध्यात्म बाग महकाया।

तेरापंथ महिला मंडल, सैंथिया

- आचार्य महाप्रज्ञ स्वयं एक विचार थे। वे संस्कृत के आशुकवि, अध्यात्म योगी, उच्चकोटि के लेखक, आगमों के प्रशस्त व्याख्याकार थे।
- दस वर्ष की आयु में दीक्षा ग्रहण की, महाप्रज्ञ अलंकरण उपाधि मिली, बने संघ के युवाचार्य।
- श्री तुलसी ने दिया आचार्य पद का अनूठा अवदान। धर्मसंघ में जोड़ा विकास महोत्सव का एक नया आयाम।
- जीवन विज्ञान प्रशिक्षण का अभिनव ज्ञान दिया, प्रेक्षाध्यान आज पूरे विश्व के लिए जीवन का वरदान बना है।
- विद्वान संत प्रज्ञापुरुष दशमाचर्य को शत्-शत् नमन

तेरापंथ महिला मण्डल, देवगढ़

आचार्य महाप्रज्ञ अपने घर में धार्मिक प्रकृति वाली माता को देखकर बचपन में धार्मिक चेतना उदबुद्ध हुई उनकी मेधा विविध विषयों का ज्ञान प्राप्त करने में सूक्ष्म हुई, दर्शन व्याकरण कोष, मनोविज्ञान, जीवन विज्ञान आदि, कोरोना वायरस का ज्ञान उनको कितने सालों पहले हो चुका था, राष्ट्र कवि रामधारीसिंह के शब्दों में वे दूसरे विवेकानन्द थे, इति आदि आदि।

तेरापंथ महिला मण्डल, राशर

महाप्रज्ञ जी कहते हैं, धार्मिक आदमी वह होता है जिसमें गुस्सा और अहंकार न हो। उनका कहना है ज्ञानी या अज्ञानी आदमी को समझाया जा सकता है। लेकिन अहंकारी आदमी को संत भी नहीं समझा सकते, उसे समय समझाता है। अहंकार और गुस्से से बदले की भावना जन्म लेती है और आदमी धर्म के रास्ते से भटक जाता है।

तेरापंथ महिला मण्डल, बालाकोट

Nidhi mandoter Ahmedabad

भावांजलि! प्रज्ञा के महासूर्य को शत-शत नमन। आचार्य महाप्रज्ञजी उदार दृष्टिकोण और विशाल मानस के धनी थे। प्रेक्षाध्यान के द्वारा उन्होंने प्रज्ञा की ऐसी रोशनी जगाई जिससे उनके विवेक का नेत्र जागृत हो गया और अध्यात्म की साधना में अग्रसर होकर प्रेक्षाध्यान के सिद्ध पुरूष बन गए।

तेरापंथ महिला मंडल, राजलदेसर

'शताब्दी वर्ष' आचार्य महाप्रज्ञ को नमन

नथमल बने नाथ, तेरापंथ के दसवें सरताज! महाप्रज्ञ! महाप्रज्ञ अतिन्द्रिय चेतना के धनी थे, महाप्रज्ञ! महाप्रज्ञा के धनी थे, प्रज्ञा शब्द उनके रूप में था, अनेक अवदानों में प्रज्ञा प्रज्ज्वलित हुई, उनकी लेखनी इतिहास का सागर है, पढ़ो तो आपकी अतिन्द्रिय चेतना जग जाए, भिक्षु विचार दर्शन, श्रमण-महावीर, संबोधि ज्ञान का सागर है।

उस अध्यात्म 'योगी' महाप्रज्ञ का क्या कहना- जैसा आहार वैसा व्यवहार, रहना भीतर जीना बाहर अवदानों की बोछार, प्रेक्षाध्यान से जन-जन का उपकार, ऐसे विश्व संत को सो-सो नमन! आज शताब्दी वर्ष पर हृदय से भावांजलि!

तेरापंथ महिला मण्डल, भुवनेश्वर

महाप्रज्ञ मेरे हृदयकार, तेरापंथ शासन सरताज
गुरु तुलसी से एकाकार, ऋतम्भरा प्रज्ञा अंगीकार
'संबोधि' के रचनाकार, आचारांग के भाष्यकार
'आत्मा भिन्न शरीर भिन्न' के सूत्रधार
आशु कविता में धुंआधार, 'प्रेक्षाध्यान' सृजनहार
'जीवन विज्ञान' मौलिक अवदान, मानवता के तुम प्रतिमान
सकल विश्व तुमको करता प्रणाम्

तेरापंथ महिला मण्डल, खारूपेटिया

आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के चरणों में समर्पित - यादगार छंद

नथमल गुणवान बुद्धिमान ज्ञानवान,
जिनशासन की शान आगमों का सार है
संस्कृत हिंदी अंग्रेजी राजस्थानी मारवाड़ी,
प्राकृत भाषाओं पर पूर्ण अधिकार है।
शारदा का वर गुरुवर श्रेष्ठ कविवर,
लेखनी प्रखर क्रांतिकारी काव्यकार है।
आप ध्यान में महान 'तेरापंथ' के हैं त्राण,
नतमस्तक जहान दिव्य अवतार है।।

तेरापंथ महिला मंडल, उदयपुर

आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी जन्म शताब्दी वर्ष पर समर्पित---

आचार्य श्री महाप्रज्ञजी की जीवन शैली का हर पहलू दिव्यता और भव्यता से भरपूर है। उनकी चर्चा, वार्ता, परिसंवाद और प्रवचन का लक्ष्य होता था जीवन को बेहतर बनाना, विधायक सोच के साथ जीना, शान्त संतुलित जीवन का आनंद लेना, पूज्य प्रवर का अनुदान है लाइफ, केरियर, और टाइम मैनेजमेंट का प्रयोग और प्रशिक्षण।

तेरापंथ महिला मण्डल, ब्यावर (राज.)

महाप्रज्ञ : पुज्यो जिनपति स्वरूपो गुरुवरः

महाप्रज्ञ अष्टकम का यह एक वाक्य उनके व्यक्तित्व की पूरी व्याख्या कर देता है। इस पंचम कलिकाल में अगर कहीं तीर्थंकर का स्वरूप दिखाई पड़ता है, तो वह है आचार्य महाप्रज्ञ में। उनकी अद्भुत प्रतिभा, एकाग्रता, निर्लेपता, आभा, विनम्रता व्यक्तित्व को अचंभित कर देते हैं। एक ऐसे विशिष्ट विद्वान, दार्शनिक, कवि, साहित्यकार, चिंतक, वक्ता जिन्होंने जीवन में आश्चर्यजनक उपलब्धियां प्राप्त की। ऐसे महापुरुष को शत-शत नमन।

तेरापंथ महिला मंडल, पूर्वांचल कोलकाता

प्रेक्षाध्यान के आविष्कारक आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का जीवन योग, ध्यान, पुरूषार्थ, विनय एवं समर्पण की अद्भुत गाथा है। आचार्य श्री की प्रेक्षाध्यान पद्धति से अनगिनत लोगों को शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक स्वास्थ्य लाभ मिल रहा हैं। आगम सम्पादन के क्षेत्र में आचार्य श्री ने स्वर्णिम योगदान दिया है। जिनशासन की निस्वार्थ सेवा करने वाले महापुरुष को शत्-शत् नमन् ।

तेरापंथ महिला मण्डल, कोयम्बतूर

'शताब्दी वर्ष - महाप्रज्ञ गौरव गाथा'

अद्भूत, विलक्षण प्रतिभावान था, वह बालक जन्म-जात,
माँ बालु से पाई सस्कारों की सौगात ।
अबोध शिशु ने अनजाने ही, जाने ज्ञात अज्ञात,
स्मृत रही देह तात की, अति विस्मय कारी बात ।
जागृत चेतना, चित एकाग्रता की प्रलम्ब की आराधना ,
दिया विश्व को दिव्य प्रसाद, प्रेक्षाध्यान की साधना।
चिन्तक, लेखक, कुशल व्याख्याता आगम के अनुपम संधाता,
विपुल साहित्य दिया संघ को तेरापंथ के भाग्य विधाता।

तेरापंथ महिला मंडल, सिवाकासी

खुले आकाश में जन्म लिया,
ग्रहों से सीधा सम्पर्क किया,
दस वर्ष की वय में सन्यासी बन,
कालू, तुलसी का शिष्यत्व लिया।
ज्ञान गंगा जल्दी ही बहने लगी,
नित नये नये मुकाम छुए,
आगम सम्पादन, प्रेक्षाध्यान जैसे
नित नये अवदान दिये।
तेरापंथ के बने आचार्य,
प्रकाण्ड पंडित ज्यूं प्रसिद्ध भये,
अमर रहो हे महाप्रज्ञ,
हर युग तेरी ये गाथा कहे।

तेरापंथ महिला मंडल, कानपुर (उत्तर प्रदेश)

अणुव्रत अनुशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाप्रज्ञ इस युग के ऐसे जाने माने व्यक्तित्व के धनी हैं। जिनके बहुआयामी व्यक्तित्व के शैक्षणिक, सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में कीर्तिमान गढ़ा है। उन्होंने अपने गहन ज्ञान से, दूर दृष्टि से एवं प्रज्ञा से पूरे विश्व को आलौकित किया है।

प्रज्ञापुरुष आचार्य महाप्रज्ञ युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी के सक्षम उत्तराधिकारी थे। आचार्यश्री महाप्रज्ञ कुशल प्रवचनकार होने के साथ-साथ महान लेखक, महान श्रुतधर और महान साहित्यकार थे।

तेरापंथ महिला मंडल बैंगोमुण्डा, उड़ीसा

महाप्रज्ञजी ने जैन आगमो का सम्पादन और विवेचन कर आचार्य तुलसी के सपनो को साकार बनाया। महाप्रज्ञजी के प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान और आगम सम्पादन जैसे अवदान आज वरदान बन रहे है। उनका एक प्रवचन जीवन की दिशा को बदल सकता है।

पवित्र आभामंडल, करुणाशील मानस, पियूषमणी वाणी और परोपकार परायण जीवन शैली से वे विश्ववंदनीय बन गए।

तेरांपथ महिला मंडल सचीन, सूरत

तेरापंथ के 10वें महासूर्य ''आचार्यश्री महाप्रज्ञ'' में विद्या और साधना का अद्‌भुत समावेश था। प्रारंभ में अल्पज्ञ थे पर मुनि तुलसी के अथक प्रयासों से अपनी स्मृति अल्पप्रज्ञा का जागरण किया। उनकी विनम्रता तथा समर्पण बेजोड़ थी। उन्होंने मानव जाति को ''प्रेज्ञाध्यान'' तथा ''जीवन विज्ञान'' जैसे अनुपम उपहार दिया। उनके प्रेरणादायी प्रवचन अनायास साहित्य का रूप लेने लगे। सम्पूर्ण मानव जाति उनके अवदानों का ऋणी रहेगी।

तेरापंथ महिला मंडल, बाली-बलूर

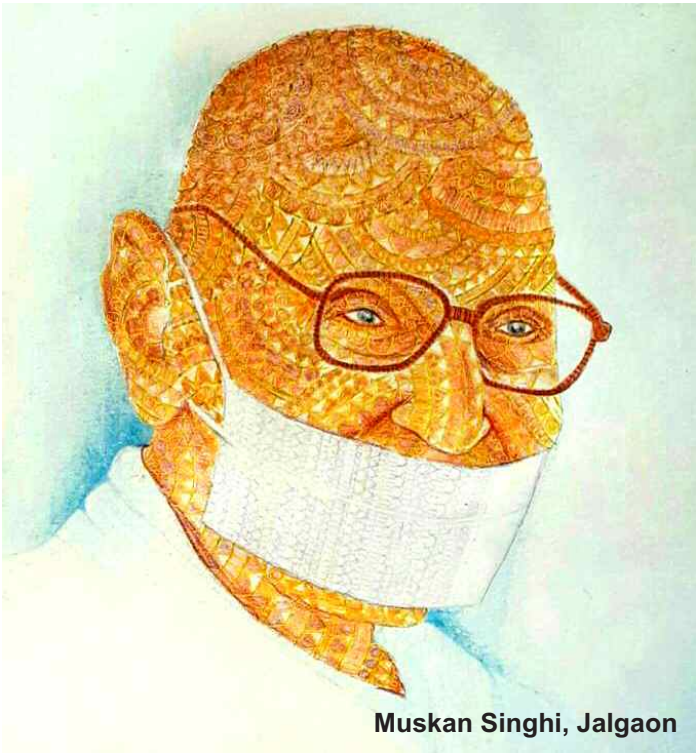

Muskan Singhi, Jalgaon

महात्मा, महासूर्य एवं महानयोगी ने अपने चिंतन से किया मानव जाति का उत्थान। आशु कवि ने सृजन किया कालजयी कृतियों का एवं करके आगम सम्पादन अर्हतवाणी से जन-जन को अवगत कराया, ऋणी हुआ सकल समाज। प्रेक्षाध्यान, जीवनविज्ञान का अभ्युदय कर, शांति मिसाईल की प्रेरणा देने वाले लोक महर्षि ने विश्वशांति के लिए अहिंसा यात्रा का आगाज किया। सरस्वती पुत्र महाप्रज्ञ धर्मचक्रवर्ती के रूप में हमारे बीच सदैव विद्यमान रहेंगे।

तेरापंथ महिला मंडल विराटनगर, नेपाल

आत्मा को परमात्मा बनाता है, धर्म और धर्म का बोध मिलता है सत्संग से, गुरु भगवंतों से। आपके सत्संग से जाना कि महात्मा महाप्रज्ञ के प्रवचन उनकी अनुभूतियों का गुंथन है, साधना का मंथन है। जिसे अनेक बार सुनकर भी हम अभी भी प्यासे ही हैं। क्योंकि आपकी वाणी में गहराई थी, सच्चाई थी, ऊँचाई थी एवं मधुराई थी।

आज पूरे विश्व में कारोना महामारी छूटकारा पाने के लिए प्रेक्षाध्यान सबसे उत्तम है, योग उत्तम है, ध्यान उत्तम है, क्योंकि ऊर्जा के मूल में गुरु है, गुरु ही विष्णु, ब्रह्म और महेश है।

तेरापंथ महिला मंडल, बंगाईगांव (दक्षिण)

कर्ता और कृति का संबंध चिर परिचित है। पर जब यह संबंध रूह में रच -बस जाये और अनहद आस्था, असीम वात्सल्य, अथाह समर्पण की डगर चुन लें, तो उस अभेद्य और अकाट्य आध्यात्मिक रिश्तों की डोर इतिहास के कैनवस पर जो चित्र उकेरता है, तुलसी और महाप्रज्ञ ।

दार्शनिक चिंतन, बुद्धि वैभव की अपूर्व प्रतिभा, नव-उन्मेष की मेधा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, विकास के शलाका पुरुष, प्रज्ञा, आशु कवित्व का दूसरा नाम है महाप्रज्ञ। अपने मखमली हाथों में प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान की जादुई कलश थामकर, मानवता को मुस्कान देने, इंसान की सूरत में अवतरित भगवान है महाप्रज्ञ।

तेरापंथ महिला मंडल, कांटाबाजी

आत्मा-महात्मा-परमात्मा

आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी इन तीनों ही अवस्थाओं पर आरोहण करने वाले विशिष्ट महापुरुष थे। आत्म ज्ञान और जीवन विज्ञान का समन्वय करके उन्होनें योग के साथ प्रयोग को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया। अपने दार्शनिक चिंतन को जन-उपयोगी भाषा में प्रस्तुत कर उन्होंने विश्व को नई राह प्रदान की ।

तेरापंथ महिला मण्डल, गंगाशहर

तेरापंथ के दशम् अधिशास्ता महात्मा महाप्रज्ञ

लोकमहर्षि महाप्रज्ञ थे, गुरू तुलसी के शिष्य महान।
तोला-बालु-नंद थे, दर्शन और अध्यात्म जगत की शान।।
ओजस्वी वक्ता, उत्कृष्ट लेखक, संस्कृत-प्राकृत -विद्वान।
आगम-मंथन-संपादन से, गण का खूब बढ़ाया मान।।

विश्व संत-महामनीषी-युगप्रधान आचार्य महाप्रज्ञ ''महावीर'' से आत्मसाधक, ''भिक्षु'' से सत्यशोधक, ''जय'' से नवोन्मेषक थे। सिद्धपुरूष ने आत्मबल से तिन्नाणं-तारयाणं को चरितार्थ करने वाली असीम अर्हताओं का विकास किया तथा अपनी निर्मल अन्त:प्रज्ञा से प्रेक्षाध्यान, जीवनविज्ञान, अहिंसायात्रा, अहिंसा समवाय आदि लोकोपकारी अवदान दिये।

हे करूणासागर ! तुम्हें प्रणाम !!

तेरापंथ महिला मण्डल, फरीदाबाद

जैन दर्शन के महासूर्य तेरापंथ के
दशमाचार्य 'महाप्रज्ञ' ने गुरु- शिष्य दोनों परंपराओं
को एक साथ जीवंत किया। एक वैरागी होकर
वात्सल्य इतना, हर समागत उनका हो गया ।
आगम- मंथन, प्रेक्षा ध्यान, जीवन विज्ञान आदि
अवदान द्वारा उन्होंने धर्म के युगीन समस्या के
समाधायक स्वरूप को प्रतिस्थापित किया जिससे
भावी पीढ़ियां सदैव आलोकित रहेगी।
कोटिश: नमन।

तेरापंथ महिला मंडल, इंदौर

दार्शनिक जगत के उज्वल नक्षत्र आचार्य श्री महाप्रज्ञ कोई व्यक्ति नहीं, विराट चेतना थे। उन्होंने अहिंसा यात्रा के माध्यम से विश्व को हिंसा मुक्त बनाने की नई राह दिखाई। प्रेक्षाध्यान के द्वारा एक ओर जनता की सोई चेतना को जागृत किया तो दूसरी तरफ जीवन विज्ञान के द्वारा शिक्षा जगत को नई दृष्टि प्रदान की। उन्होंने जैन आगमों को सम्पादित कर आधुनिक स्वरूप में प्रस्तुत करने का कठिन कार्य किया। युगीन समस्याओं के समाधान के संदर्भ में विलक्षण महापुरुष महाप्रज्ञजी द्वारा प्रस्तुत विचार इतने मैलिक, सटीक और समसामयिक हैं कि यदि प्रत्येक व्यक्ति यह संकल्प ले कि वह महीने में सिर्फ एक दिन महाप्रज्ञ जी के विचारों का मनन करेगा, तो निश्चित ही युग-युगांतर का सपना साकार हो उठेगा।

तेरापंथ महिला मण्डल, गुवाहाटी

अनुत्तर श्रद्धा, अद्वितीय समर्पण, अद्भुत विवेक, अनन्तहीन करूणा, सकारात्मक दृष्टिकोण, सत्य के प्रयोग धनी अन्वेषक और अध्यात्म के राह के ऊर्जावान पथिक इन सबके समुच्चय का नाम है - आचार्य महाप्रज्ञ

- अहिंसा यात्रा द्वारा एक लाख कि.मी. की पदयात्रा।
- 300 ग्रन्थों की रचना ।
- ''इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय एकता'' पुरस्कार से अलंकृत ।

आज उनका स्थूल शरीर जरूर अन्तर्धान हो गया, मगर उनका यश शरीर तो हमेशा शाश्वत रहेगा और हमें प्रेरित करता रहेगा ।

तेरापंथ महिला मण्डल, बीकानेर

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी से हमने सीखा और जाना है कि जैसा हम सोचते है वैसा ही घटित होता है। मेरा मन स्वस्थ होगा तो मेरा शरीर भी स्वस्थ रहेगा। मैं सोचने लगी हूँ की मैं दुसरों के प्रति अपने भाव अच्छे रखूंगी तो निश्चित ही दूसरों के भाव भी मेरे प्रति अच्छे बनेंगे। आहार का हमारे शरीर एवं मन पर गहरा प्रभाव रहता है जैसा हम भोजन करेंगे उसकी परिणीति भी वैसी होगी। हम भोजन ऐसा करे जिससे हमारा शरीर एवं मन दोनों स्वस्थ हो। मैं सादगी पूर्ण भोजन को महत्व देती हूं जिससे धर्म ध्यान बिना आलस्य के अच्छा होता है।

तेरापंथ महिला मंडल, रतलाम मध्यप्रदेश

अध्यात्म जगत के महासूर्य, परम दार्शनिक महामनस्वी
उत्कृष्ट चिंतन और विचारक, उच्च कोटि के ध्यानी तपस्वी।
अहिंसा के अथक पुजारी, भय मुक्त था मानस तेरा
दीर्घ अहिंसा यात्रा कर कितनों को दिया नया सवेरा
आत्मा का यह प्रखर प्रचेता, प्रेक्षाध्यान के नव नचिकेता।
प्रज्ञा का आलोक उजारा, हिंसा से इस युग को उबारा ।।
आगम वेत्ता बोधिदाता, सत्यशोध के संधाता ।
शांति प्रदाता, मंत्र विज्ञाता, जनजीवन के निर्माता।
महावंदन उस महाप्रज्ञजी को.....

तेरापंथ महिला मंडल, राजसमंद

अध्यात्म जगत के महा सूर्य का करते हम अभिनंदन
समय शिलाओं पर अंकित है तेरा जीवन दर्शन।
अथाह ज्ञान के अमृत सागर, शिखर पुरुष अभिनंदन।
जिन शासन की विरल विभूति, करते शत शत वंदन।
महामानव की आत्मकथा का, कैसे करें हम अंकन।
ज्ञान चेतना वर्ष मनाए, संघ सेवा और समर्पण।

तेरापंथ महिला मंडल, अमराईवाड़ी ओढव

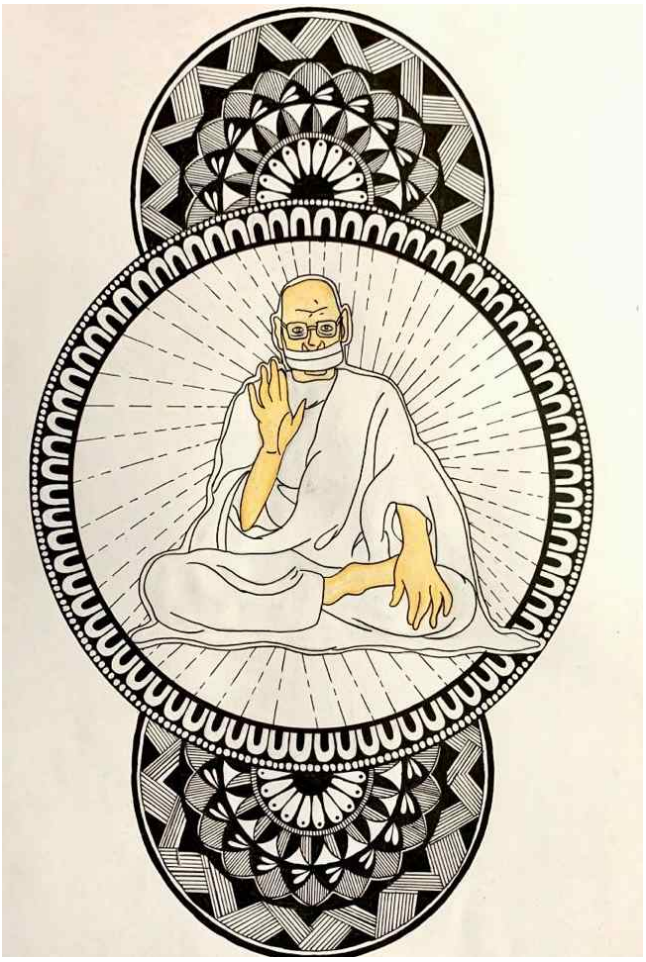

Saloni Bothra Faridabad

ज्ञान का आलोक बांटने वाले महासूर्य! प्राणीमात्र पर अनुकंपा बरसाने वाले महामेघ!

तनाव मुक्ति की शीतलता प्रदान करने वाले शशि! तेरापंथ धर्मसंघ के दशम सरताज आचार्य महाप्रज्ञ! जो तुमने बांटा शाश्वत सत्य हमको, उस चिरंतन सत्य को कोई मिटा न पाये। युगों-युगों तक उस आलोक पथ पर हम डटे रहेंगे। कदम हमारे बढे चलेंगे, बढ़े चलेंगे ।

तेरापंथ महिला मंडल, हैदराबाद

मेरे महाप्रज्ञ गुरुवर महान,
दिया सबको प्रेक्षाध्यान का ज्ञान,
स्वयं है संस्कृत और प्राकृत की खान,
पूरे विश्व को कराया अहिंसा, और मैत्री का अमृतपान,
मेरे महाप्रज्ञ गुरुवर महान।।

तेरापंथ महिला मंडल, नाथद्वारा

दसवें गणपति, ज्ञान की अकूट रसधार है
आध्यत्म विज्ञान के समन्वय के सूत्रधार है
विनम्रता, दृढ़ता, कोमलता का अकल्पित संगम
महात्मा महाप्रज्ञ, लाखों के तारणहार है।

वो चिदानंद स्वरूप का विलोम है
उनके लिए कर्म जैसे पिघलता मोम है
साधना ने छुआ है चेतना शिखर
पाचवें आरे में महाप्रज्ञ ही अर्हम- ओम है

तेरापंथ महिला मण्डल, क्षेत्र पर्वत पाटिया

आज हम अखिलेश का अभिनंदन करते हैं,
प्रज्ञा के परिवेश श्री महाप्रज्ञ को नमन करते हैं।
भिक्षु के संदेश को शत्-शत् वंदन करते हैं,
तुलसी पटधारी प्रज्ञा पुरुष अवतारी को स्मरण करते हैं

कालू तुलसी जिनके भाग्य विधाता
जन-जन मानस के विज्ञाता
महाप्रज्ञ, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, जीवन निर्माता
साहित्य-निर्माण कला में विशिष्ट ख्याता
ज्योतिपुंज, चमकते सूर्य, प्रज्ञापुरुष को नमन करें।

तेरापंथ महिला मंडल, गांधीधाम (कच्छ)

आचार्य महाप्रज्ञ जिनकी प्रज्ञा उनके नाम के साथ ही जग चुकी थी। आचार्य महाप्रज्ञ की प्रज्ञा रश्मियां आज भी जन-जन को प्रकाशित कर रही हैं। लोगों को भौतिक सुख की मृगतृष्णा में देखा अपरिग्रह का मंत्र बताया। सत्य, अहिंसा, क्षमादान का मार्ग दिखाकर जैन धर्म का मान बढ़ाया। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने अहिंसा यात्रा के माध्यम से जन-जन तक अहिंसक चेतना का जागरण, ध्यान योग की परम्परा का पुनःउधार एवं नैतिक मूल्यों का विकास कर हमें अनेक नये-नये आयाम दिए।

तेरापंथ महिला मंडल, लुधियाना

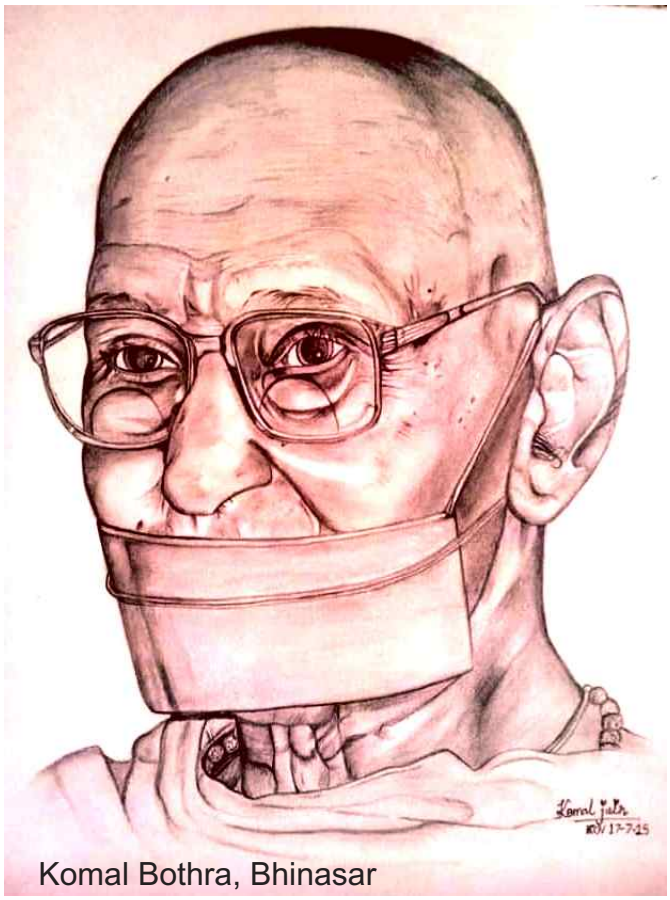
Komal Bothra, Bhinasar

महात्मा महाप्रज्ञ

जीवन उसी का सार्थक होता है, जो पुष्प बन दुनिया को मुक्त-हाथों पराग लुटाता है। महापुरुष बनते हैं अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बल से। वर्तमान युग के विवेकानंद, साहित्यकार एवम् कवि आदि उपमाओं से अलंकृत आचार्य श्री तुलसी के दिव्य शिष्य, युवाचार्य श्री महाश्रमण को धर्मसंघ की बागडोर थमाने वाले विश्व के महामनीषी, प्रेक्षाध्यान एवं जीवन - विज्ञान के पुरोधा, अहिंसा समवाय के सूत्रधार, विश्व शांति प्रयास हेतु तेरापंथ धर्मसंघ सदैव गौरवान्वित है।

तेरापंथ महिला मण्डल, केलवा

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी विलक्षण महापुरूष थे आपके स्वभाव में झरने सी निर्मलता, शिशु सी सरलता सरस्वती सी प्रतिभा, परमहंस सी निर्मलता, महार्षियों सी आभा, एकलव्य सी एकाग्रता, गौतम सी विनम्रता के दर्शन होते तो दूसरी और जैन विद्वान, दार्शनिक, कवि, साहित्यकार, चिन्तक, प्रयोक्ता के रूप में सामने आते। आचार्य महाप्रज्ञजी के असीम व्यक्तित्व को उपनामों में बांधना सामर्थ्य से परे है।

तेरापंथ महिला मण्डल, जयसिंहपुर

।। श्री महाप्रज्ञ गुरूवे नमः ।।

वह जन्मा खुले आसमान में, आकाश सा व्यक्तित्व बनाने के लिए अज्ञ से प्रज्ञ, प्रज्ञ से महाप्रज्ञ?

हिन्दी, संस्कृत, प्रकृत भाषा पर जिनका प्रभुत्व था, जो भारतीय ऋषि परंम्परा और अध्यात्म जगत के महामनीषी और मानवता के मसीहा थे। आपकी विद्वता शिखर को चुमती है। आपने प्रायोगिक प्रयोगों से ऊर्जा जागरण की एक प्रक्रिया का जन्म हुआ। यह प्रेक्षाध्यान से प्रसिद्ध हुआ।

सचमुच आचार्यश्री के व्यक्तित्व के अनेक रूप है। एक रूप योगी और ध्यानी का, एक रूप मुनि और मनस्वी का, एक रूप मौलिक साहित्य का सृष्टा और अन्वेषक का। अशान्त विश्व को तुमने शान्ति का वर दिया।

हे विश्वमैत्री के पोषक। जन्मशती पर शत् शत् नमन।।

तेरापंथ महिला मण्डल, सफाले

इंगियार संपहने, गुरुणमुववायकारए' आगामोक्त गुण।

आचार्य महाप्रज्ञजी में प्रत्यक्ष देखे जा सकते थे। आप महायोगी वीतराग साधक होने के साथ एक प्रख्यात गम्भीर और चिन्तनपूर्वक साहित्य के सृजनकर्ता थे। प्रबल आत्म-विश्वास, अनुशासन, पुरुषार्थ से ''आपने जगाई गण में, आत्मा के दर्शन की नवचेतना। प्रेक्षा साधना से करनी है अपने मन की एषणा। इन्हें ''जैन योग पुनरूद्धारक'' अलंकरण भी प्रदान किया।

तेरापंथ महिला मण्डल, लुनकरणसर

आचार्यश्री महाप्रज्ञ (14 जून 1920 - 09 मई 2010) तेरापंथ के 10वें आचार्य थे। मां बालूजी के साथ 10 वर्ष की आयु मे दीक्षा ली। वे एक संत, योगी, आध्यात्मिक, दार्शनिक, अधिनायक, लेखक, वक्ता, आशु कवि, 'प्रेक्षाध्यान' के अनुसंधाता और आधुनिक 'विवेकानंद' थे। दर्शन, न्याय, व्याकरण कोष, मनोविज्ञान, आयुर्वेद आदि विषय उनकी प्रज्ञा से अछूते नहीं रहे।

आचार्य तुलसी ने उन्हें अग्रगण्य, निकाय-सचिव महाप्रज्ञ, युवाचार्य और अपनी विधमानता में आचार्य नियुक्त किया।

ऐसे 'प्रज्ञा पुरुष' को शत-शत वंदन।

तेरापंथ महिला मण्डल, मध्य कोलकाता

प्रज्ञा के शिखर पुरूष आचार्य महाप्रज्ञ को वन्दन! छोटे से गांव टमकोर में जन्में इस बालक ने कालू कर से दीक्षा, तुलसी कर से शिक्षा लेकर अपनी प्रज्ञा का विकास किया। उनके द्वारा दिये गये अवदान सम्पूर्ण मानव जाति के विकास में साधक है। ऐसे प्रज्ञा पुरुष को सदियों तक जमाना याद करेगा।

महाप्रज्ञ गुरुवर पाकर, हमने अपने भाग्य सराये।
प्रेक्षाध्यान प्रयोगों से, अन्तर की कलियां विकसाये।।

तेरापंथ महिला मण्डल, मनेन्द्रगढ़

''प्रज्ञा के प्रतिबोधक : आचार्यश्री महाप्रज्ञजी''

आचार्य महाप्रज्ञ बहुमुखी प्रतिभा के धनी और बहुआयामी व्यक्तित्व के स्वामी थे। उनकी प्रज्ञा के शिखर आरोहण को नापना असंभव है, तो उनकी गहराई का अंदाज लगाना नामुमकिन।

वे धर्मसंघ के प्रति अपनी बेजोड़ दायित्वशीलता का परिचय देने वाले जैन धर्म के एक प्रभावक आचार्य थे। एक जैन आचार्य किस प्रकार भगवान महावीर के कालजयी संदेश ''अहिंसा परमो धर्म'' को ऐसे प्रतिष्ठित किया था जिसका जीवंत रूप है 'अहिंसा यात्रा'।

तेजस्वी, वर्चस्वी, यशस्वी, अहिंसा के प्रेरक, अध्यात्म के शिखर पुरुष, सहज, सरल, व्यवहार के धनी करूणा की भावना ऐसे प्रज्ञा पुरुष को 'जन्म शताब्दी' वर्ष पर कोटिशः नमन।

तेरापंथ महिला मण्डल, औरंगाबाद

विद्वता हो जिनमें उन्हें विज्ञ कहते हैं।
प्रखर बुद्धिमता हो जिनमें उन्हें प्रज्ञ कहते हैं।।
जिनमें हो इन समस्तगुणों का ओज
उन महामहिम को आचार्यश्री महाप्रज्ञ कहते हैं।।

आपने अपने जीवन को अविराम गति से जीया। आपके जीवन में आई अनेक कठिनाइयों के बावजूद आप शुभ्रभावों से चलते रहे। आपने लिखा भी है-

वह हारे जिसका मन हारे, वह जीते जो मन को मारे।
चलना है चलते रहना है, चलने से ही बल मिलता है।
रूकना झुकना ही मरना है, मरने का मतलब मिटना है।।

ऐसे गतिमान मनोयोगी को शत्-शत् वंदन।

तेरापंथ महिला मण्डल, चित्तौड़गढ़

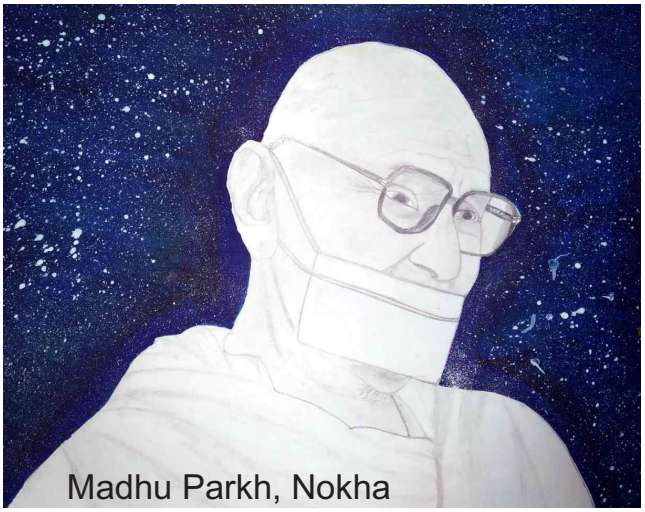
Madhu Parkh, Nokha

मां बालूजी के लाल-दुलारे, श्री तोलारामजी के प्यारे।
चौरड़िया कुल के गौरव, ग्राम टमकोर के उजियारे।।
दस वर्ष की अवस्था में, संयम पथ अपनाए।
कालू कर से बने संयमी, तुलसी सा गुरु पाये।।
हिन्दी, प्राकृत, संस्कृत के आशुकवि कहलाए।
प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान का सार गहराए।।
नत्थु, नथमल, महाप्रज्ञ, युगप्रधान बने।
हे! तेरापंथ के दसवें अधिशास्ता,
आपकी हम जय-जयकार करें।।

तेरापंथ महिला मंडल, विजयवाड़ा

जन्म शताब्दी श्री महाप्रज्ञ की, नूतन संदेशा लाई।
ज्ञान सरोवर गुरुवर का, सुरभि भू नभ में छाई।
पुलकित है दशों दिशाएं, खुशियां अनहद छाई।
'ओम श्री महाप्रज्ञ गुरुवे नमः', मंत्र जपो सुखदाई।
तेरे अवदानों से, जीवन बगिया विकसाई।
आज आपके जन्म शताब्दी पे, महिला मंडल बांटे खूब बधाई।

तेरापंथ महिला मंडल, हुबली

काल के भाल पर स्वास्तिक उकेरने वाले सिद्ध पुरुष का नाम है आचार्य महाप्रज्ञ। उनमें भगवान महावीर की समता, बुद्ध की करुणा, ईसा मसीह का प्रेम, भिक्षु की वाणी, जयाचार्य की स्थिरता, महात्मा गांधी का शरीर व आचार्य तुलसी की आत्मा थी। अध्यात्म जगत के उज्ज्वल नक्षत्र युगप्रधान आचार्य श्री महाप्रज्ञ को तेरापंथ महिला मंडल, धोइन्दा की ओर से असीम, अनन्त, अंतहीन प्रणिपात।

तेरापंथ महिला मंडल, धोइन्दा

प्रेक्षाध्यान के थे वो साधक,
सत्य, अहिंसा के आराधक।
जीवन विज्ञान का दिया अवदान,
नमन तुम्हें है युग प्रधान।

तेरापंथ धर्मसंघ के दशमाधिशास्ता, ज्ञान के ज्योतिपुंज, प्रखर व्यक्तित्व के घनी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ का अवतरण केवल तेरापंथ धर्मसंघ के लिए ही नहीं अपितु अखिल विश्व के लिए वरदान स्वरूप हुआ था। उनकी अलौकिक प्रतिभा के कारण तेरापंथ धर्मसंघ ने उन्हें 'युगप्रधान' का अलंकरण दिया। प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान अहिंसा समभाव के रूप में उन्होंने जो हमे अमूल्य उपहार दिये हैं वे युगों-युगों तक हमारे पथप्रदर्शक रहेंगे।

तेरापंथ महिला मण्डल, निर्मली

आचार्य महाप्रज्ञ एक प्रखर चिंतक, अंतरदृष्टा, अध्यात्म की राह के ऊर्जावान पथिक है।अगम संपादन इनका एक कालजयी अवदान है। जैन योग के पुनरुद्धारक, प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान के आविष्कारक इस युगपुरुष ने पूरे जनमानस को प्रभावित किया। अहिंसा यात्रा के प्रेणता महाप्रज्ञ धर्मशाशन के लिए हमेशा एक अवदान रहेंगे।

तेरापंथ महिला मंडल, ग्वालियर

विनम्रता और प्रज्ञा का अनोखा संगम : आचार्यश्री महाप्रज्ञ

अज्ञ से विज्ञ, विज्ञ से प्रज्ञ, प्रज्ञ से महाप्रज्ञ और महाप्रज्ञ से तेरापंथ के दशम् अनुशास्ता बने, आचार्यश्री महाप्रज्ञजी।

अहिंसा रूपी महात्मा गांधी, साहित्य जगत के विवेकानंद, जैनदर्शन के आचार्य सिद्धसेन रूपी व्यक्तित्व में, जितनी प्रज्ञाशीलता थी, उतनी ही विनम्रता! विनम्रता और प्रज्ञा का अनोखा संगम थे- आचार्य महाप्रज्ञ।

विनय समर्पण प्रज्ञा के सरगम थे महाप्रज्ञ, पुस्तक, पोथी नहीं पूरे आगम थे महाप्रज्ञ।

तेरापंथ महिला मंडल, पिंपरी चिंचवड़

श्रद्धा-पुष्प, आस्था-अक्षत, समर्पण के चन्दन से
ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप के प्रखरसूर्य को वन्दन
दशवैकालिक-आचारांगसूत्र, उत्तराध्ययन आगम के ज्ञाता
स्याद्वाद् प्रज्ञाता, जीवन विज्ञान प्रेक्षाध्यान प्रदाता
हे! लोक महर्षि जैन योग पुनरुद्धारक, हे! संस्कृत के महाज्ञाता
जिन शासन के मुकुट-मणि करूणानिधान दशमाचार्य अनुशास्ता
प्रखर प्रवचनकार महात्मा महाप्रज्ञ के श्रीचरणों
में श्रद्धासिक्त वंदन-शत-शत वंदन।

तेरापंथ महिला मंडल, जयपुर सी-स्कीम

''आचार्यश्री महाप्रज्ञ'' के प्रति अपने भावों की अभिव्यक्ति

प्रज्ञा पुरुष महाप्रज्ञ की आलौकिक-अत्तिन्दिय चेतना को कोटीशः नमन। उनका लक्ष्य था- बीज रूप में थोड़ा सा संकेत पाकर पुरे विस्तार के साथ उसे प्रस्तुति देना। वे एक कुशल-प्रवचनकार महान दार्शनिक, कवि, लेखक, वक्ता, साहित्यकार थे। मानव सेवा के कार्य में अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान के साथ-साथ अनेकों सम्मान व पुरूषकार प्राप्तकर्त्ता थे।

तेरापंथ महिला मंडल, गुलाबबाग

आचार्यश्री महाप्रज्ञ बहुत ही करूणामयी, सहज और सरल प्रवृति के थे। आधुनिक युग में पनप रही समस्याओं को वो जान जाते थे। जीवन शैली में धर्म की उपयोगिता क्या है, वह समझाते थे। महाप्रज्ञजी कुशल नेतृत्व के धनी थे इसलिए पूरा विश्व उनसे प्रभावित था, तभी उनको धर्मगुरु की उपाधि दी गई। महाप्रज्ञ जी त्रिनेत्र वाले थे। उन्होंने अहिंसा और प्रेक्षाध्यान के माध्यम से व्यक्ति के शरीर में छुपी हुई आध्यात्मिक प्रवृति को जागृत किया। आत्मा के प्रवेश के द्वार खोले।

तेरापंथ महिला मंडल, पचपदरा

जो कर गया शून्य से सर्जन वही महाप्रज्ञ का समर्पण, नम्रता, गुरुभक्ति की मिशाल था वो, जो आया ध्यान और विज्ञान जीवन में सिखाने को भिन्न ये देह और आत्मा, भेद विज्ञान बताने को परमज्ञानी, अहम, कुछ ना था सर्वज्ञों के जैसा या जो था भगवान इस युग का वही महाप्रज्ञ था।

अध्यक्ष, तेरापंथ महिला मंडल, दुर्ग भिलाई

कीर्ति प्रणत चरणो मे सारस्वत धरी ।
महान दार्शनिक ओजस्वी वक्ता, तुम हो आशुकवि।
पल पल प्रसन्नता, वह चिर बसंत
निज आत्मलीन, वह प्रवर सन्त।
नयनों में करुणा अमृत का,
वह शान्त श्वेत निर्मल उज्ज्वल ।
अन्तस में सम्पूर्ण अर्हता, कर कमलों में सारे ग्रंथ ।
सृजन्य चेतना के सिरमौर मनीषी,
करते हैं हम तुम्हें वन्दन ।
धन्य हुई यह वसुंधरा तुमसे, धन्य हो गया तेरापंथ।

तेरापंथ महिला मंडल, सिरसा (हरियाणा)

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का जीवन दर्शन

तेरापंथ के यशस्वी, आगम मनीषी, प्रखर वक्ता अध्यात्म जगत के उज्जवल नक्षत्र दशवें आचार्यप्रवर श्री महाप्रज्ञ को शत्-शत् नमन अभिनन्दन। अणुव्रत, जीवन विज्ञान एवं प्रेक्षाध्यान के प्रभावी क्रियान्वयन से आपने अहिंसक चेतना के जागरण, नैतिक मूल्यों के विकास तथा नशा मुक्ति का शंखनाद कर मानव जीवन की दिशा और दशा बदलने का जो महान कार्य किया, युगों-युगों तक मार्गदर्शन एवं प्रेरणा का माध्यम रहेगा। अध्यात्म ज्योत को प्रज्जवलित करने वाले ऐसे महामनीषी, दार्शनिक आचार्यश्री महाप्रज्ञजी को आधुनिक विवेकानन्द के रूप में पाकर पूरा धर्म संघ गौरवान्वित है।

तेरापंथ महिला मंडल, बोईसर

आत्म-चिन्तन अध्यात्मवाद का प्रमुख अंग। आचार्य महाप्रज्ञ एक आत्म चिन्तक थे। वह महान् योगी, संत, साहित्यकार, प्रवचनकार और दार्शनिक थे। करूणा के सागर और विनम्रता की प्रतिमूर्ति थे। समर्पण का अर्थ समझना हो तो आचार्य महाप्रज्ञ का अपने गुरू आचार्य तुलसी के प्रति जो भाव थे उनको समझ लें।

अध्यक्ष, तेरापंथ महिला मंडल, कालीकट

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जैन शासन के महान आचार्य हुए। उन्होंने जैन आगमों का आधुनिक दृष्टि से संपादन करके जैन शासन की खूब सेवा की। वे आचार्य भिक्षु और आचार्य तुलसी के प्रतिकृति समान थे। आज आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की गणना विश्व में एक उच्च कोटि के कवि लेखक एवं तत्व चिंतकों में थी। उनके द्वारा प्रेक्षाध्यान और जीवन-विज्ञान मानव जाति के लिए अमूल्य भेंट थी। बीजापुर शाखा मंडल हृदय की असीम आस्था से पूज्य गुरुवर को शत-शत श्रद्धांजलि अर्पित करता है तथा बारम्बार वंदन नमन करता है।

तेरापंथ महिला मंडल, बीजापुर

।। श्री महाप्रज्ञ गुरवे नमः।।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ हमारे परमेश्वर परमपिता एक महत साधक का योगी थे। उन्होंने जीवनभर कठोर श्रम कर अध्यात्म का ऐसा खजाना देकर गए जिससे आज का व्यक्ति कलात्मक जी रहा। आप जगत के विद्वान पंडित और प्रखर दार्शनिक, आशुकवि, मधुर वक्ता और उच्चकोटि के लेखक हैं। आचार्य महाप्रज्ञ के एक-एक प्रवचन में इतना सार है, जिसको सुनकर व्यक्ति पूरे दिन ऊर्जा से लबालब रहता है। उन्होंने कभी स्कूल का दरवाजा नहीं देखा। क्या विलक्षण शान से जगत में प्रवेश किया, उनके साहित्य में हमें हर मर्म की दवा मिलती है।

तेरापंथ महिला मंडल, पटना जंक्शन

तेरापंथ के दशम् अधिशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी महान दार्शनिक एवं मौलिक चिंतक थे। उन्होंने अपने जीवन में यही बताया आत्मा मेरा ईश्वर है। त्याग मेरी प्रार्थना है, मैत्री मेरी भक्ति है तथा संयम मेरी शक्ति है। अहिंसा मेरा धर्म है, इन शब्दों में अपने भावात्मक व्यक्तित्व का परिचय देने वाले अध्यात्म योगी आचार्यश्री महाप्रज्ञ आत्म-मंगल एवं लोकमंगल के लिए समर्पित संत थे।

इसी बात से यही लिखना चाहूंगी कि मैंने आचार्यश्री महाप्रज्ञ को समझा और जाना भी है।

तेरापंथ महिला मण्डल, टापरा

आचार्य महाप्रज्ञ का लक्ष्य था, मुझे अच्छा साधु बनना है, जिनशासन व भिक्षु शासन की सेवा में लगना है, मैं आचार्य तुलसी के पास रहा, उन्होंने जो कुछ करना था किया, इतना किया की पंडित दलसुख भाई मालवणिया जितनी बार आते कहते, आचार्य तुलसी और युवाचार्य महाप्रज्ञ गुरु शिष्य का ऐसा संबंध पन्द्रह सौ वर्षों में कहीं रहा है, हमें खोजना पड़ेगा। तुलसी से सब कुछ मिला और मैं अपने लक्ष्य तक पहुंच गया।

तेरापंथ महिला मण्डल, जसोल

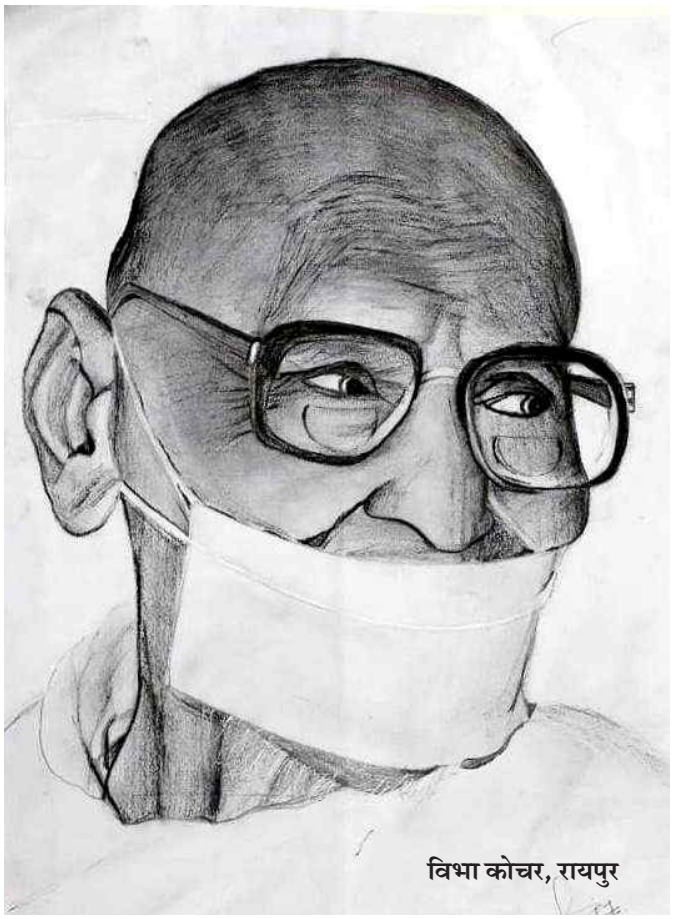

विभा कोचर, रायपुर

करें अभिवंदना नए जन्म की

आओ करें अभिवंदना।।
महातपस्वी आचार्य महाप्रज्ञ की,
तोला, बालु कुल में जनमें मानव देह की
संसार से संन्यस्त पावन चेतना की,
आचार्य समंदाओं से संपन्न
एक महान साधक आचार्य महाप्रज्ञ की! आओ .....

शब्दों का अक्षय कोश भले न उतरे कलम से
पर संयम की शुरूवात अवश्य करें
ताकि महत्वाकांक्षाओं को विराम मिल सके, आओ.....

भावों में पवित्रता रही और कर्म में जागरूकता रही ऐसे थे आचार्य महाप्रज्ञजी। जन्म शताब्दी वर्ष पर आपको बहुत-बहुत श्रद्धाजंली अर्पित करती हूँ।

तेरापंथ महिला मंडल, सिंधनूर

महाप्रज्ञ किसी व्यक्ति का नाम नहीं, पद नहीं, उपाधि नहीं और अलंकरण भी नहीं, यह तो प्रज्ञा और पुरुषार्थ की प्रयोगशाला है, श्रद्धा और समर्पण की संस्कृति है, आशीष और अनुग्रह की फलश्रुति है, व्यक्तित्व निर्माण की रचनात्मक शैली है। सत्य की स्वस्थ प्रस्तुति है। यह वह सफर है जिधर से भी गुजरा उजाला बांटता हुआ आगे बढ़ता गया। अत: महाप्रज्ञ नाम नहीं साधना है। सच तो यह है कि जब से गुरू तुलसी ने अपने हाथों सन्त नत्थु के भाग्य और पुरूषार्थ का इतिवृत रचना शुरू किया सृजन का वह हर पल महाप्रज्ञ के नए जन्म का शुभमुहूर्त बन गया।

तेरापंथ महिला मण्डल, अहमदाबाद

जन्मदिवस मन भाया
महाप्रज्ञ की जन्म शताब्दी जियरा यह तुलसाया
तोला बालु के आंगन में खुशियों का धन वरसा।
विष्णुगढ़ की पुष्पधरा में देखो सुरतरू सरसा।
हर्षित-पुलकित है! जन सारे पुत्र अनुठा पाया।।

जननी सह शिशुवय में पाई गुरु कालू से दीक्षा।
ज्ञानयोग में बढ़े निरंतर पा तुलसी से शिक्षा।
जीवन का निर्माण शुभंकर, सिर पर सुख का साया

आपका पवित्र हृदय निर्मल करूणाभाव से परिपूर्ण है।
आपके नेत्रों से अमृत के जैसा वात्सल्य प्रवाहित होता है।
ऐसे महाप्रज्ञ भगवान आपके चरणों में समर्पित श्रद्धामय सम्मान।।

तेरापंथ महिला मण्डल, जालना

भारतीय ऋषि मनीषा के महाशिखर जैन तेरापंथ के कीर्तिधर युगप्रधान आचार्य महाप्रज्ञ अनन्त में लीन है पर जैन योग पुनरुद्धारक, भारतीय दर्शनों के व्याख्याता, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान के प्रवर्तक-प्रयोक्ता उद्भव विद्वान, संस्कृत के आशुकवि अहिंसा ही नहीं अपरिग्रह परमोधर्मः के उद्घोषक, जैनागम वाचना निर्देशक, साहित्य शिल्पी-प्रवक्ता, आज के विवेकानन्द के रूप में स्मृति पटल पर शादियों तक रहेंगे।

तेरापंथ महिला मण्डल, बीरगंज

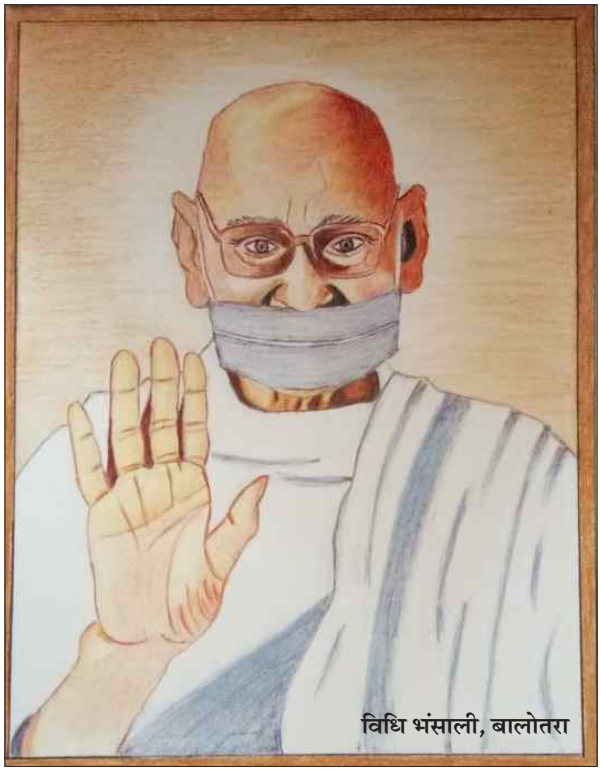

विधि भंसाली, बालोतरा

आचार्य श्री महाप्रज्ञ के जन्म शताब्दी के पावन अवसर पर

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी एक व्यक्ति नहीं दर्शन थे, प्रज्ञा पुरुष थे, आशुकवि, साहित्यकार, और संस्कृत के प्रकांड प्रवचन कार थे। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी को आज का विवेकानंद, जैनयोग का कोलंबस कहा जाता है। प्रेक्षा ध्यान पद्धति, जीवन विज्ञान की परिकल्पना करने वाले आचार्य शोध पूर्ण आगम संपादन, व्यष्टि और समष्टि को त्राण और प्राण देने में समर्थ ये अवदान उनकी अलौकिक अतींद्रिय चेतना के साक्षात्कार प्रतीक है।

तेरापंथ महिला मंडल, जलगाँव

अथाह ज्ञान से परिपोषित आचार्य महाप्रज्ञ का दिव्य सौंदर्य उनके चेहरे में झलकता था। उनके तेजस्वी चेतन ने 'जीव-रचना' और 'जीवन- विज्ञान' के रहस्यों का सार खींचकर उनको ओजस्वी वाणी दी। गुरु तुलसी के शतत प्रशिक्षण और संरक्षण में विकसित इस 'महातपस्वी' ने प्राचीनतम आगम-सूत्रों को सुगम भाषा मे संपादित किया। जैन धर्म से जुड़ी विस्मृत ध्यान प्रणाली को 'प्रेक्षा ध्यान' के रूप में जन कल्याण हेतु प्रस्तुत किया। ऐसे महापुरुष को ढेकीयाजुली तेरापंथ महिला मंडल का शत्-शत् नमन।

तेरापंथ महिला मंडल, ढेकीयाजुली

आप अज्ञ से विज्ञ और प्रज्ञ बने,
फिर प्रज्ञ से महाप्रज्ञ बने।
तुलसी का अभिमान बने,
तुम महाप्रज्ञ मतिमान बने।।
बस एक अरज श्री चरण धूलि में है कि
महाप्रज्ञ हैं महासमंदर,
मैं क्या उनकी महिमा गाऊं
प्रभु बस ऐसा आर्शीवर दो,
मैं भी महाप्रज्ञ बन जाऊं।।

तेरापंथ महिला मण्डल, बालोतरा

तुम चंद्रमा के समान शीतल थे और शांत थे,
कमनीय कमल के समान निर्लिप्त व कांत थे।
यह मन की ललक है, तुम्हें शब्दों में बांधना।,
तुम तो यथार्थ में वचनातीत नितांत थे।
तुम आकाश के समान विशाल और विराट थे,
तुम आध्यात्मिक जगत में ओजस्वी सम्राट थे।
कुछ भी कहें अलख अगोचर है तुम्हारा "व्यक्तित्व"।
जन-जन को हरा कर देने वाले नभ्राट थे।।
तुम्हें आता था गागर में सागर भरना,
तुम्हें आता था आवृत्त को उजागर करना,
तुम्हारे करिश्मों को कोई और छोर नहीं,
तुम्हें आता था हलाहल को अमृत करना।।
आज जन्म शताब्दी अवसर पर तुम्हारी
ज्ञान रश्मि को नमन, ध्यान रश्मि को नमन, योग रश्मि को नमन।।

तेरापंथ महिला मंडल, दिल्ली

प्रेक्षा-प्रणेता

भारत के विवेकानंद, युगप्रधान प्रज्ञावान आचार्य महाप्रज्ञ एक ऐसे प्रासून है, जिनकी महक उनकी कविताओं और साहित्य में ही नहीं अपितु ध्यान, योग, दर्शन, संस्कृति, जीवन शैली, व्याकरण, शिक्षा व अगम संपादन में भी प्रस्फुटित हुई है। ऋषभायण के रचनाकार, अणुव्रत आंदोलन के अहम कर्त्ता, लेखक, वक्ता, दार्शनिक, विविध भाषाओं के ज्ञानी से संपूर्ण मानव जाति लाभान्वित हुई।

तेरापंथ महिला मण्डल, पालघर

तेरापंथ के दशम् आचार्य, अहिंसा पथ के महापथिक भारतीय ऋषि परम्परा में उज्जवल नक्षत्र आचार्य श्री महाप्रज्ञ एक बहुआयामी व्यक्तित्व जो एक साथ महान दर्शनिक एवं चिंतक, महान संत, प्रेक्षाध्यान प्रणेता, उत्कृष्ट कोटि के साहित्यकार संवेदनशील कवि, प्रखरवक्ता एवं अपने गुरु के प्रति पूर्ण समर्पित थे। प्रेक्षाध्यान विधि को पुनर्जीवित करने वाले आचार्य महाप्रज्ञ जी को अनेक बुद्धिजीवियों के जैन ध्यान का कोलम्बस कहा है और रामधारी सिंह दिनकर जी ने दूसरा विवेकानन्द।

तेरापंथ महिला मंडल, मालदा

आचार्य महाप्रज्ञ तेरापंथ धर्मसंघ के दसवें आचार्य बने। बहुत कम समय में आपने जो विलक्षणता प्राप्त की। वह मानवीय चेतना का जीवंत दस्तावेज है। महाप्रज्ञ जी के व्यक्तित्व के अनेक रूप, एक रूप - योगी, ध्यानी, लेखक, चिन्तक मनस्वी का। दूसरा रूप - विनम्र अनुशासित, समर्पित शिष्य का। आपने आचार्य भिक्षु और आचार्य तुलसी के भाष्यकार के रूप में ख्याति प्राप्त की। आप संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान, आशु कवि, वक्ता एवं दार्शनिक के रूप में विख्यात हुए।

तेरापंथ महिला मण्डल, राऊरकेला

आचार्य महाप्रज्ञ की जन्म शताब्दी का सुंदर अवसर आया, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अगम संपादन, अहिंसा समवाय का विचार से जन-जन के नस-नस में उत्साह जगाया। व्यक्तित्व निर्माण एवं शांति में जीवन जीने की कला से, वरदान बन गए ये अवदान। मसीहा बनकर इस धरती पर कर गए जनमानस का कल्याण। तुमने जो आदेश दिखाएं, उस पथ पर हम बढ़ते जाएं। सहज, समर्पण कर चरणों में, श्रद्धा का उपहार चढ़ाएं, श्रद्धा का उपहार चढ़ाए।।

तेरापंथ महिला मंडल, इस्लामपुर (पश्चिम बंगाल)

मेरे जीवन को प्रभावित किया आपकी एक सूत्र, मैं हूं अपने भाग्य का निर्माता। व्यक्ति का जीवन विकास का मार्ग है जीवन के इस विकास मार्ग में लाखों के जीवन को आलोकित करने वाले उस दिव्य महापुरुष को श्रद्धानत वंदन। समुद्र की एक बूंद का असर समुद्र पर नहीं लेकिन उस प्यासे को पड़ेगा उसी प्रकार आपका एक सूत्र मेरे जीवन का अमूल्य सूत्र होगा।

तेरापंथ महिला मण्डल, रायपुर (छत्तीसगढ़)

आचार्य महाप्रज्ञ जी महान व्यक्ति, असाधारण प्रतिभा के धनी थे। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी जीवन-विज्ञान, प्रेक्षाध्यान, आभा मंडल, कर्मवाद, महावीर का अर्थशास्त्र, आहार आदि के साहित्य से नए आयाम प्रदान किए महाप्रज्ञजी ने प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान से मानव जाति की सुसुप्त शक्तियों को जागृत किया। महाप्रज्ञ जी ने जीवन जीने की कला सिखाई जिनकी अनासक्ति, विनम्रता, सहजता वर्तमान सुविधावादी, भोगवादी तथा युवा मानस को प्रबल चुनौती है।

तेरापंथ महिला मंडल, चिरवली

अध्यात्म जगत के महासूर्य, तेरापंथ के दशम अधिशास्ता का अवतरण टमकोर धरा पर विशिष्ट लक्ष्य की सम्पूर्ति हेतु ही हुआ था। इस मौलिक साहित्य सृष्टा और अन्वेषक का सम्पूर्ण जीवन श्रद्धा और समर्पण का दस्तावेज रहा है। अनगिनत गुणों से परिपूर्ण ये असीम व्यक्तित्व तेरापंथ के लिए ही नहीं अपितु पूरी मानवता के लिए अमृतमयी अवदानों का स्रोत रहा है।

आत्मा के सानिध्य में आनंदित रहने वाले इस आत्मवेत्ता की स्तुति निरन्तर सम्यक् ऊर्जा और स्फूर्ति संचरित करती रहेगी।

तेरापंथ महिला मंडल, नोएडा

परम श्रद्धेय आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का जन्म टमकोर ग्राम में वि. सं. 1977 को हुआ। आपने दीक्षा सरदारशहर में वि. सं. 1987 स्वीकार की। वि. सं. 2050 में आप आचार्य बने। आप महान दार्शनिक संत हैं। आपको ''जैन ध्यान योग का कोलम्बस'' कहा गया। सन् 2001 में आपने अहिंसा यात्रा शुरू की। माँ बालूजी के कहने पर महाप्रज्ञ जी ने दो गीतिकाएं लिखी -

1. चैत्य पुरुष जग जाए
2. देव दो हस्तावलंबन

सन् 2010 में महाप्रज्ञ जी इस दुनिया को अलविदा कह गए उन्हें एक पंक्ति से दर्शाए तो वे ऐसे थे।

''पुनीतान्तः प्रज्ञा गहनतम - तत्वेषु निपुण''

तेरापंथ महिला मण्डल, जबलपुर

अध्यात्म के महासूर्य चन्द्रमा के समान धवल। जिसने अपनी प्रज्ञा से बिखेरा आलोक जन-जन को दिया नया दर्शन, नया चिंतन जैसे प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अहिंसा समवाय। आपकी तेजस्विता अंधकार और बुराईयों को विनष्ट करने वाली है। तुलसी करामत से बने महाप्रज्ञ अनमोल।

साधक जिसका परिचय है साधना जिसकी पहचान है, ये तेरापंथ की शान वीर महावीर के समान है।

तेरापंथ महिला मंडल, चिकमंगलूर

महान दर्शनिक, महामनीषी, प्रबल मेधा शक्ति एवं उदार व्यक्तित्व के धनी आचार्य महाप्रज्ञ इस विश्व की अनमोल धरोहर थे।

धर्म, संस्कृति, कला, साहित्य, इतिहास एवं जीवन मूल्यों के विकास में समर्पित अपने जीवनकाल में साहित्य सृष्टा, युगपुरुष ने आगम संपादन, आचरण भाष्य लेखन के अतिरिक्त लगभग 300 ऐसे ग्रंथों की रचना की जो सदैव हमारे लिए प्रेरणा स्त्रोत रहेंगे। आध्यात्म के उस ज्योतिपुंज को हमारा शत्-शत् नमन।

तेरापंथ महिला मंडल, हिन्दमोटर (प. बंगाल)

ज्ञान व अध्यात्म के विलक्षण व्यक्तित्व, दशम आचार्य, साहित्यकार, युग प्रधान, धर्म चक्रवर्ती, पंडित, ध्यान योगी, चिंतक, प्रभुत्व गतिशील विचारक, आज के विवेकानंद भी वही तो वैज्ञानिकों के समक्ष ढाई हजार वर्ष पूर्व महावीर के विचारों की वैज्ञानिकता सिद्ध करने वाले अनूठे व्यक्तित्व के धनी।

वे किसी धर्म विशेष के नहीं मानव धर्म के विराट स्वरूप थे। वह एक ऐसा बीज थे, जो आचार्य तुलसी के सान्निध्य में पल्लवित हुए और एक विशाल वटवृक्ष बन गए। जिसका लगा हर फल अनूठा, अनुपम, विरल व मीठा होता था। जिसको भी उसका स्वाद मिल जाता वह अपना जीवन सार्थक बना लेता है।

तेरापंथ महिला मंडल, जयपुर शहर

प्रज्ञा के सुमेरू आचार्य महाप्रज्ञ का उदय एक नये आलोक की सृष्टि कहा जा सकता है। जिन्होंने अपने आराध्य गुरु आचार्यश्री तुलसी के पावन सान्निध्य में रहकर अज्ञ से प्रज्ञ और प्रज्ञ से महाप्रज्ञ बनकर बौद्धिक जगत को आकृष्ट किया है। महाप्रज्ञ का गहन चिंतन वैज्ञानिक एवं दार्शनिक दृष्टिकोण का था। अपनी अध्यात्म चेतना की रश्मियों से लोगों के अंतःकरण को आलोकित किया। प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान से पूरी मानव जाति लाभांवित हो रही है। महनीय अवदान से।

तेरापंथ महिला मण्डल, कूचबिहार

राजस्थान के एक छोटे कस्बे में जन्मे अकिंचन मुनि नथमल की यात्रा आकिंचन्य से जा पहुंची अतिन्द्रिय ज्ञान के छोर तक। करूणामय, वात्सल्यमय, पावन आभा-मंडल, 300 से अधिक ग्रंथ प्रणयेता, अन्वेषक, गहरे स्वाध्याय के समुद्र में पैठ कर प्रेक्षाध्यान तथा जीवन-विज्ञान जैसे अनमोल रत्नों को पाना, तीसरे नेत्र का विकास, शब्दातीत व्यक्तित्व। 'जैन न्याय का राधाकृष्णन', 'आचार्य सिद्धसेन', 'विवेकानन्द', कालजयी महर्षि, आचार्य महाप्रज्ञ को शत्-शत् नमन्।

तेरापंथ महिला मंडल, नाभा, पंजाब

''महात्मा महाप्रज्ञ''

निधि, सिद्धि, लब्धि, उपलब्धि और प्रसिद्धि का समवाय है 'महात्मा महाप्रज्ञ' ओजस्वी वक्तृत्व, तेजस्वी व्यक्तित्व और कर्मठ कर्त्तव्य की त्रिवेणी समाहित थी महात्मा महाप्रज्ञ में। धर्मसंघ के अधिष्ठाता होने से पूर्व महाप्रज्ञ एक महान् योगी और अन्तस की गहराई में उतरे महान् प्रेक्षाध्यान साधक थे। अतीन्द्रिय शक्तियों की जागृति उनके योगी व महात्मा होने के स्वयंभू साक्ष्य थे। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड आचार्य महाप्रज्ञ में समाहित था। सूर्य की तेजस्विता, चांद की निर्मलता, धरती की उदारता, पवन की गति जैसी सारी विशेषताएं एक ही व्यक्तित्व में समाहित थी। उनकी वाणी युग की वाणी थी, उनका चिंतन युग का चिंतन था, उनका साहित्य युग का साहित्य है। ऐसे युगपुरूष को सहस्त्रों बार नमन।

तेरापंथ महिला मण्डल, नौगांव

स्वभागत नम्रता, एकांतप्रियता, आत्मतल्लीनता, स्वाध्यायशीलता आदि गुणों से सुशोभित आचार्य महाप्रज्ञ का माउंटेन व्यक्तित्व 5D's से निर्मित था-

Dedication

Down to Earth

Depth

Dignity

Decision Maker

उन्होंने अपनी स्थितप्रज्ञा के दर्पण में श्वांस-दर्शन, शरीर-दर्शन, न्याय-दर्शन, विचार-दर्शन, आगम-दर्शन, योग-विज्ञान मनोविज्ञान आदि का साक्षात्कार किया।

तेरापंथ महिला मण्डल, मदुरई

ज्ञान ज्योति आचार्य श्री महाप्रज्ञ अक्षर पुरुष थे। उनका व्यक्तित्व, बुद्धिबल, आत्मबल, भक्तिबल, कीर्तिबल, और वाग्बल का विलक्षण समवाय था। उन्होने अनेक मौलिक ग्रंथों का प्रणयन कर सरस्वती के भंडार को समृद्ध बनाया। दृढ़ इच्छाशक्ति, निर्विकल्प संकल्प, धृति और पराक्रम के द्वारा सिद्धियों के अनेक शिखर स्थापित करने वाले महान आचार्य को शत शत वन्दन।

तेरापंथ महिला मण्डल, भिवाणी

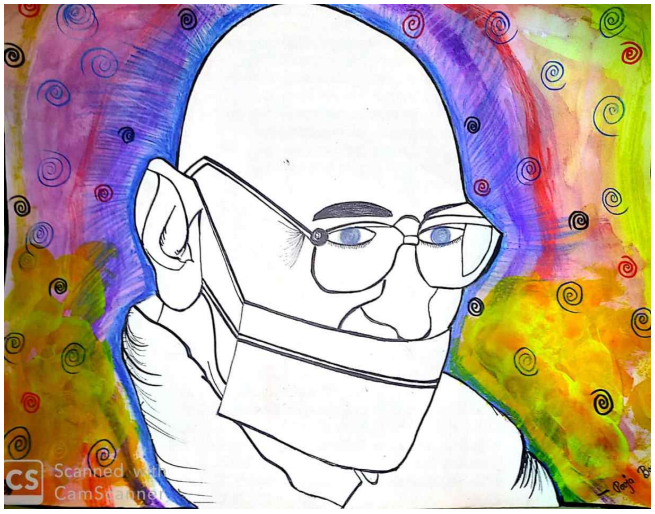

Pooja Bafna Ahmedabad

आचार्यश्री महाप्रज्ञ मानवतावादी नेता, आध्यात्मिक गुरू और शांति के राजदूत थे। वे एक उच्च आदरणीय संतयोगी, दार्शनिक, लेखक, संचालक कवि थे। महाप्रज्ञ के जीवन में चार सूत्र थे - आधि, व्याधि, उपाधि और समाधि। वे दुनिया को अणुबम से अणुव्रत (अहिंसा) की और ले जाने वाले विरल महामानव थे। वे वैश्विक कल्याण का विचार करने वाले महाचिंतक थे। उन्हीं के पास ज्ञान का ऐसा स्त्रोत था जो अकेले असंख्य व्यक्तियों की प्यास बुझाने की क्षमता रखते थे। वे समय की नब्ज पकड़ने वाले दिव्य संत थे।

तेरापंथ महिला मंडल, नागपुर

विश्व के रंगमंच पर एक ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं होगा, जिसके जीवन में तारतम्य न हो। जिसे उदय और अनुदय का अनुभव न हो। जिसने सुख-दु:ख का स्पर्श न किया हो। आचार्य इन अवस्थाओं से गुजरने वाले व्यक्ति हैं। जिन्होंने इन सब अवस्थाओं को समभाव से छुआ और अपने गतिशीलता को बनाये रखा है। आपकी विद्वता शिखर को चुमती है। आपने संस्कृत भाषा के विशाल साहित्य भंडार का पारायण कर लिया। एक बार कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर आचार्यश्री से कहा आपको इसलिए महान मानता हूँ कि आपने हमें नथमल के एक रूप में विवेकानंद दिया।

तेरापंथ महिला मंडल, मंडोत

आचार्य तुलसी के शब्दों में 'अज्ञ से महाप्रज्ञ' बनने वाले संत मुनि नथमल जी का जन्म टमकोर में 14 जून 1920 को हुआ। आप तेरापंथ धर्मसंघ के दसवें अधिशास्ता बनें। आपकी सारस्वत वाणी से निकाला हर शब्द साहित्य बन जाता था। शोध विद्वानों के लिए तो आचार्य महाप्रज्ञ एक विश्व कोष थे। ऐसा कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा।

तेरापंथ महिला मंडल, बडोदरा, गुजरात

प्रज्ञ के अक्षय सागर - आचार्य महाप्रज्ञ

संयम सौरभ साधना, जिनको करे प्रणाम।
त्याग तपस्या प्रज्ञा का, महाप्रज्ञ है नाम।।

आचार्य महाप्रज्ञ एक महान दार्शनिक विश्वविख्यात चिंतक एवं विचारक थे। आपका अहं से अनछुआ व्यक्तित्व स्फटिक के समान पारदर्शी एवं स्वच्छ था। अतिन्द्रिय ज्ञान संपन्न जैसे महापुरुष शताब्दियों बाद अवतरित होते हैं। सहज सरल भाषा में गूढ़ से गूढ़ ग्रांथियो को खोलकर रखदेना उनकी सहज शैली थी इसलिए वे सरस्वती के वरदपुत्र कहलायें। उनकी विश्व को प्रेज्ञाध्यान की देन एक संजीवनी बूटी के रूप में है इसलिए वे प्रेक्षा के शिखर पुरुष कहलाये। अभिवंदना के इन स्वरों में एक स्वर हमारा मिलाते हैं।

तेरापंथ महिला मंडल, गांधीनगर, बैंगलूरू

सरल, सौम्य, शीतल, शरतचंद्र सम थे तुम उज्जवल।
रजत रेख से, रत्न विशद ,तड़ित से तुम प्रज्जवल।
वारीधि से गंभीर, धीर, धरणी सी सौरभ।
तुम बन पाए युग प्रधान तेरापंथ के गुरु गौरव।
प्रेक्षा ध्यान, जीवन विज्ञान, योग दर्शन का नवनीत।
तेरा अथक परिश्रम प्रभु,
जन जन के जीवन की जीत ।
हे शांतिदूत, हे विश्व विभूत, महाप्रज्ञ, हे संत नरेश ।
अग्रदूत थे अद्भुत, आशु कवि, हे योगी, हे अनिमेष।
चलते फिरते विश्वविद्यालय, साहित्यकार, संस्कृत सम्राट।
विवेकानंद, विभुवर, वरदायी, वीतराग सम विभूषित पाट।।

तेरापंथ महिला मंडल, तिरुपुर

कंकर से शंकर बनने का नाम है- महाप्रज्ञ

विनय एवं वात्सल्य की परकाष्टा का नाम है- महाप्रज्ञ

निश्चलता के निर्मल झरने का नाम है- महाप्रज्ञ

प्रेक्षा ध्यान जीवन विज्ञान की देन का नाम है- महाप्रज्ञ

मन को जीतने की कला का नाम है- महाप्रज्ञ

शांति और सौम्यता की प्रतिमूर्ती का नाम है- महाप्रज्ञ

महान साहित्य सर्जक-आद्यात्म के उज्ज्वल नक्षत्र का नाम है-महाप्रज्ञ

चंचलता से महात्मा बनने का नाम है - महाप्रज्ञ

तेरापंथ महिला मण्डल, मैसूर, कर्नाटक

सूक्ष्मता और सरलता महान व्यक्तियों के जीवन में साथ-साथ चलती है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी भी एक महान दर्शनिक होने के साथ-साथ सहज और सरल भाषा में गूढ़ से गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित कर देना उनकी सहज शैली थी। वो सबसे पहले एक योगी थे। उनकी महानता नैसर्गिक थी। उनका व्यक्तित्व बुद्धिबल, आत्मबल, भक्तिबल, कीर्तिबल और वाग्बल का विलक्षण समवाय था। दृढ़ इच्छाशक्ति, संकल्प शक्ति, पुरुषार्थ एवं पराक्रम के द्वारा उन्होंने उपलब्धियों के अनेक शिखर स्थापित कर दिए। उन्होंने संपूर्ण मानवजाति को 'प्रेज्ञाध्यान' का गुरुमंत्र दिया।

ऐसे महान योगी पुरुष के चरणों में जन्म शताब्दी के पुनीत अवसर का श्रद्धासिक्त भावांजलि अर्पित करती हूँ।

तेरापंथ महिला मंडल,

प्रेरणा प्रवर आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी को समर्पित अंतः स्वर

अपनी अगणित आलोक रश्मियों से कण-कण को उर्जामय बनाने वाले प्रखर उर्जा-पुंज 'आचार्य महाप्रज्ञ' संतता की दिव्य-सुवास और चिंतन की दूधिया चांदनी से विश्व चेतना को शीतलता प्रदान करने वाले प्रज्ञा महर्षि 'आचार्य महाप्रज्ञ'।

21वीं सदी को आध्यात्म-विज्ञान की सदी बनाने के लिए अहर्निश प्रयत्नशील आध्यात्मयोगी 'आचार्य महाप्रज्ञ'। ऐसे पुण्यशाली-प्रभावशाली नाम को मेरा प्रणाम।

तेरापंथ महिला मंडल, पाली

बीज की तरह रहे, वटवृक्ष बन गए

एक साधारण व्यक्ति किसी असाधारण विभूति के बारे में क्या कह सकता है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी सदा समर्पित आत्मा का नाम है, जिनकी आत्मा में सदा आचार्य तुलसी ही तरंगित रहे है। आचार्यश्री तुलसी के ही प्रतिबिम्ब को हम आचार्यश्री महाप्रज्ञ कहते हैं।

शिशु नथमल, मुनि नथमल, मुनि महाप्रज्ञ युवाचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य महाप्रज्ञ यो कदम दर कदम विकास पथ पर आरोहण करने वाले तेरापंथ धर्मसंघ के दसवें आचार्यश्री महाप्रज्ञ थे। वे संयम और सादगी के शिखर पर आरूढ़ होकर भी विनम्र थे।

मंत्री, तेरापंथ महिला मण्डल, अंबाजोगाई

आचार्य महाप्रज्ञ मेरे जीवन के निर्माता, तेरापंथ के दशमाधिशास्ता, प्रज्ञा के उत्तुंग शिखर, श्री ह्री धी के मंत्रदाता, साहित्य आकाश के सुधांशु, आचार्य तुलसी के भाष्यकार, सरस्वती के वरद पुत्र, जैन योग के पुनरुद्धारक, आधुनिक विवेकानंद, आगम रहस्य के उदगाता, विश्व भारती के उन्नायक, धर्म चक्रवर्ती स्थिर योगी, महावीर के महापथिक, अप्रतिम विनय, अद्वितीय समर्पण, अद्‌भुत विवेक जैसी अनंत विशिष्टताओं के समुच्चय, प्रेक्षाध्यान-जीवन विज्ञान एवं अहिंसा यात्रा प्रणेता, चिंतन में सागर की गहराई, जीवन के वर्तन में हिमगिरी सी ऊंचाई, ऐसे प्रज्ञा पुरुष को हम स्वयं की प्रज्ञा जगा कर जन्म शताब्दी वर्ष पर उपहार भेंट करें। यही शुभभावना।

तेरापंथ महिला मंडल, मुंबई

प्रज्ञापुरुष आचार्य महाप्रज्ञ तेरापंथ धर्मसंघ के दशम् अधिशास्ता। जन्म टमकोर, बुद्धि विनय और समर्पण उनकी विशिष्टता थी। दर्शन, न्याय, व्याकरण ज्योतिष आयुर्वेद, संस्कृत भाषा के विद्वान, अशुकवि और दूसरे विवेकानन्द है। प्रबुद्ध वक्ता, श्रुतधर जिनके द्वारा जैन आगमों, भिक्षुवाणी पर सम्पादन हुआ है। प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान के महान् अनुसंघाता प्रयोक्ता है।

तेरापंथ महिला मंडल, चित्रदुर्ग

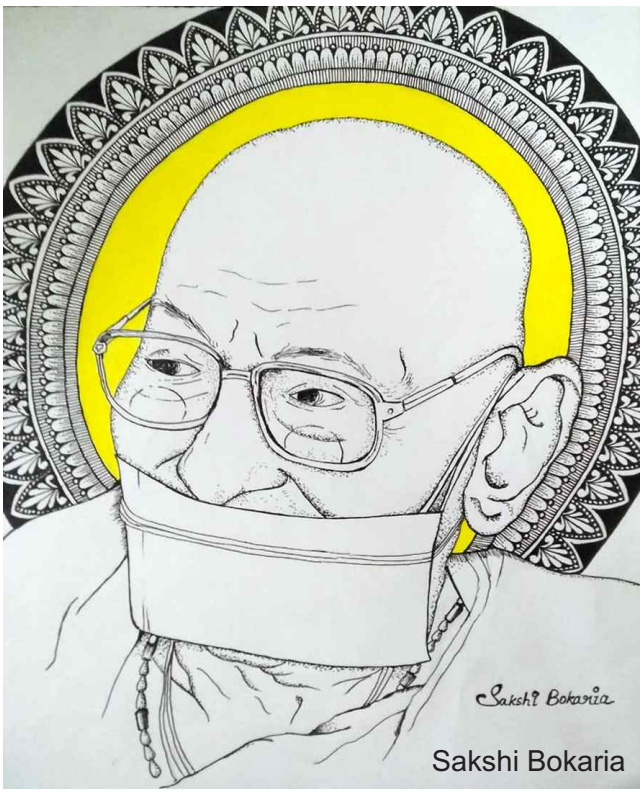

Sakshi Bokaria

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी तेरापंथ धर्मसंघ के दसवें अधिशास्ता थे पर वे पूरे मानव जाति के महान पथदर्शक थे। उन्होंने जो जिया वहीं मान जाती को दिया। वे महान दर्शनिक थे उनका जीवन स्वयं दर्शन था। महावीर की वाणी एक-एक शब्द उनके जीवन में परिलक्षित था। महाप्रज्ञ नाम महाप्रज्ञ से जुड़कर गौरवान्वित हो गया सार्थक हो गया। वे व्यक्ति नहीं स्वयं एक संस्कृति थे। उन्होंने जो अवदान दिए उसका जो प्रायोगिक रूप दिया वह त्रैकालिक सिद्ध है। युगों-युगों तक समस्याओं के समाधान का उपाय है।

तेरापंथ महिला मंडल, गदग

प्रेरणा महादीप की जाज्वल्यमान शिक्षा के सर्वाच्च जीवन मूल्यों को साक्षात् जीने वाले व्यक्तित्व का नाम है "आचार्य महाप्रज्ञ"। नत्थू से नथमल, नथमल से महाप्रज्ञ, महाप्रज्ञ से आचार्य महाप्रज्ञ, संस्कृत के आशुकवि, प्राकृत के मर्मज्ञ, आत्म चिंतन के शिखर पुरुष, अहिंसा, अनेकान्त अपरिग्रह के निर्मल वाहक, योग और ध्यान के विश्व-कोष, प्रलम्ब साधना के अत्तुंग शिखर, अध्यात्म वेत्ता, मूर्धन्य साहित्यकार आचार्यश्री महाप्रज्ञ को कोटि-कोटि नमन।

अध्यक्ष, तेरापंथ महिला मण्डल, वापी

10 वर्ष की अल्पायु में नत्थू से मुनि नथमल बने। आप प्रज्ञा सम्पन्न थे, आप विविध व्यक्तित्व के धनी थे, आपका एक रूप योगी और ध्यानी का तो दूसरा रूप मुनि और मनस्वी का, एक गुरु और अनुशास्ता का तो एक रूप मौलिक साहित्य सृष्टा और अन्वेषक का। आपका संपूर्ण जीवन श्रद्धा और समर्पण का दस्तावेज रहा। शत शत नमन उस प्रज्ञा पुरुष को।

तेरापंथ महिला मण्डल, धुबडी (आसाम)

आचार्य श्री महाप्रज्ञजी से हमने सीखा और जाना है कि जैसा हम सोचते है वैसा ही घटित होता है। मेरा मन स्वस्थ होगा तो मेरा शरीर भी स्वस्थ रहेगा। मैं सोचने लगी हूँ कि मैं दूसरों के प्रति अपने भाव अच्छे रखूंगी तो निश्चित ही दूसरों के भाव भी मेरे प्रति अच्छे बनेंगे।

आहार का हमारे शरीर एवं मन पर गहरा प्रभाव रहता है जैसा हम भोजन करेंगे उसकी परिणीति भी वैसी होगी। हम भोजन ऐसा करे जिससे हमारा शरीर एवं मन दोनों स्वस्थ हो। जिससे धर्म ध्यान बिना आलस्य के अच्छा होता रहे।

तेरापंथ महिला मंडल, रतलाम, मध्यप्रदेश

"अपनी कलम से"

हे शत्-शत् नमन अनुपम व्यक्तित्व के धनी आचार्य महाप्रज्ञ तेरापंथ संघ को चरम सीमा पर ले जाने वाला व्यक्तित्व था। जिसका हर पल, हर क्षण धर्मसंघ के विकास, प्रेक्षाध्यान विकास, पुस्तक लेखन व नारी उत्थान में लगा रहा। समाज, धर्म, नारी उत्थान, राजनीति को नई दिशा देने वाले थे। संस्कृत भाषा के पंडित, आगम के ज्ञाता थे। आपको अनेकानेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। युगपुरुष महाप्रज्ञ हमारी जुबानी, वो विलक्षण अद्भुत व्यक्तित्व प्रेक्षाध्यान प्रणेता तेरापंथ, को दी नई दिशा। शत्-शत् वंदन।।

तेरापंथ महिला मंडल, बीदासर

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल
के तत्वावधान में
लॉकडाउन के दौरान हुए कार्यों की गति-प्रगति रिपोर्ट

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल ने उस समय ठोस सकारात्मक कदम उठाए जब कोरोना विश्व महामारी के कारण भारत ही नहीं अपितु विश्व भी लोकडाउन से थम गया। एक अनजाने भय एवं सन्नाटें की स्थिति में हर एक मन विचलित, अशांत हो रहा था ऐसे समय में स्वस्थ संतुलित चेतना बनी रहे, अवसाद के घेरों में हमारा मन घिर न जाए, उसी के लिए अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल के अनुभवी उन्नत चिंतन, और गुरुकृपा से अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल की 450 शाखाओं की 60,000 महिलाओं ने जप, तप, स्वाध्याय, ध्यान आदि उपक्रम शुरू कर सभी को चित्त समाधि हेतु सफल सार्थक प्रयास किया।

- 20 राज्यों के 200 क्षेत्रों में ज्ञान चेतना वर्ष के उपलब्ध में अखंड आयंबिल अनुष्ठान संयोजिका– प्रभा दुगड़ के अंतर्गत अब तक प्राप्त आंकडों के अनुसार–

  जनवरी – 2599 आयंबिल

  फरवरी – 1467 आयंबिल

  मार्च – 1647 आयंबिल

  अप्रेल – 1414 आयंबिल

  कुल – 7127 आयंबिल

इस कड़ी में सर्वप्रथम जब भारत में लोकडाउन घोषित हुआ, उसी दिन से जप तप का अजस्र क्रम
प्रारम्भ हो गया।

- 22 मार्च 2020 को भारत एवं नेपाल में जप सहित 204 शाखा मंडलों द्वारा 42197 सामायिक।
- 22 मार्च से 22 अप्रैल तक हुए जाप की सूची इस प्रकार है–

  क्षेत्र – 94

  नमस्कार महामंत्र

  महिलाओं की संख्या – 9481

  कुल घंटे – 60534

  चइता भारहं वासं

  महिलाओं की संख्या – 13442

  कुल घंटे – 50789

  ऊँ भिक्षु

  महिलाओं की संख्या – 11954

  कुल घंटे – 60924

  ऊँ भिक्षु (सवा लाख) – संख्या – 847

  ऊँ श्री महाप्रज्ञ गुरवे नमः

  महिलाओं की संख्या – 5397

  कुल घंटे – 66930

  सवा लाख – 1484 बहनें

  अन्य जाप

  महिलाओं की संख्या – 182426

  कुल घंटे – 93038

- लॉकडाउन समय में देशभर के कुल 73 स्थानों से प्राप्त 10 प्रत्याख्यान तपस्चर्या का संक्षिप्त विवरण

  1. नवकारसी – 36234
  2. पोरसी – 12019
  3. दो पोरसी – 1639
  4. एकासन – 2866
  5. एकलठाणा – 9295
  6. नीवीं – 1750
  7. आयंबिल – 2420
  8. उपवास – 3748
  9. अभिग्रह – 2232
  10. चरम प्रत्याख्यान – 2596
  11. संपूर्ण दस प्रत्याख्यान संभागी – 60015

- आधुनिक तकनीक का सही समय पर सही उपयोग, दूरियां भी बन गई नजदीकियां – Zoom Virual Meetings. प्रचार–प्रसार मंत्री श्रीमती निधि सेखानी व सह प्रचार–प्रसार मंत्री श्रीमती सोनम बागरेचा के द्वारा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा बैद की अध्यक्षता में 12.04.2020 को ट्रस्ट बोर्ड एवं कार्यसमिति की द्वितीय बैठक परिसम्पन्न हुई।

  राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा बैद एवं महामंत्री श्रीमती तरूणा बोहरा द्वारा 21 राज्यों के 270 शाखा मण्डल की एवं 600 पदाधिकारी (संगठन यात्रा) की सार–संभाल ZVM द्वारा की गई।

  विशेष ज्ञातव्य अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल के इतिहास में प्रथम बार 13 दिन सुबह–शाम दोनों समय अनवरत ऑनलाईन मीटिंग्स का दौर चला।

- **प्रतियोगिताओं के माध्यम से चला स्वाध्याय का क्रम :**

1. दिनांक : 04.04.2020

   सोलह सतियां व्हाट्सप प्रतियोगिता

   संयोजिका : श्रीमती नीलम सेठिया (वरिष्ठ उपाध्यक्ष), श्रीमती निधि सेखानी (प्रचार प्रसार मंत्री)

   संभागी : 207 शाखा मण्डल, 2960 प्रतियोगी, अभातेमम पदाधिकारी 25

2. दिनांक : 06.04.2020

   भगवान महावीर को समर्पित भक्तिमय स्वरांजलि

   संयोजिका : श्रीमती निधि सेखानी

   संभागी : 200 महिलाएं, 70 कन्याएं, अभातेमम पदाधिकारी 30

3. दिनांक : 06.04.2020

   'महावीर को जाने' मोबाईल एप्प पर क्विज

   संयोजिका : श्रीमती जयश्री जोगड़

   संभागी : 271 शाखा मण्डल, संभागी 3625

4. दिनांक : 19.04.2020

महिला समाज का गौरव तेरापंथ की विरल 8 साध्वी प्रमुखा जीवनवृत्त

संयोजिका : श्रीमती निर्मला चंडालिया, श्रीमती संतोष बोथरा

संभागी : 271 शाखा मण्डल, 3170 संभागी, अभातेममं पदाधिकारी 32

5. दिनांक : 03.05.2020

अर्हत वंदना प्रतियोगिता

संयोजिका : श्रीमती सरिता डागा (उपाध्यक्ष द्वितीय), श्रीमती सरिता बरलोटा

संभागी : 276 शाखा मण्डल, 6237 प्रतियोगी, अभातेममं पदाधिकारी 36

6. दिनांक : 10.05.2020

अपने कुशल नेतृत्व एवं अनुशासना से तेरापंथ की भव्य मीनार बनाई जिन्होंने, ऐसे आचार्य परम्परा को अभिवंदना 'आचार्यों की जीवनी' प्रश्नमंच द्वारा–

संयोजिका : श्रीमती अर्जना भण्डारी, श्रीमती वंदना विनायकिया

संभागी : 236 क्षेत्र, 3145 प्रतियोगी, अभातेममं संभागी 32

7. दिनांक : 26.04.2020

आदिनाथ ने प्रपौत्र के हाथों पारणा किया, दिग–दिगन्त हुआ घोष अहोदानं अहोदानं और वह दिन, तिथि अक्षय बन गया। आदि युग के आदिकर्त्ता को जाने प्रश्नमंच द्वारा–

संयोजिका : श्रीमती मधु देरासरिया (सहमंत्री), श्रीमती नीना कावड़िया

संभागी : 263 क्षेत्र, 3045 प्रतियोगी, अभातेममं पदाधिकारी 35

8. **ब्रेनविटा मोबाईल एप्प पर प्रश्नोत्तरी–**

1 अप्रैल 2020 – संभागी – 2470

15 अप्रैल 2020 – संभागी – 3048

1 मई 2020 – संभागी – 3015

15 मई 2020 – संभागी – 2957

9. दिनांक : 11.04.2020 से 14.04.2020

उद्वेलित भावों एवं मन को शांत करने का एक माध्यम ध्यान का प्रयोग और इस प्रेक्षाध्यान के द्वारा हमारा व्यक्तित्व कैसे प्रखर बन सकता है इसी को ध्यान में रखते हुए प्रेक्षा फाउण्डेशन लाडनूं के संयुक्त तत्वावधान में अभातेमम द्वारा ऑनलाइन प्रेक्षाध्यान व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन भी किया गया–

संयोजिका : श्रीमती नीतू ओस्तवाल, श्रीमती सोनम बागरेचा, श्रीमती प्रभा घोड़ावत, श्रीमती मधु कटारिया

संभागी : 3250

10. **नारीलोक प्रश्नोत्तरी गुगल फार्म के माध्यम से मंगवाई गई–**

संयोजिका : श्रीमती मधु देरासरिया (सह मंत्री)

संभागी : 2100

11. **''हमारा समाज हमारा दायित्व'' के अंतर्गत निम्न कार्य–**

✍ MASK MASS PLEDGE - संकल्प दिवस। आओ करें संकल्प, मास्क यूज और डिस्पोसल के जाने प्रकल्प गुगल फार्म संभागी – 3674

✍ पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता – स्वयं की रक्षा, समाज की सुरक्षा।

✍ कविता लेखन प्रतियागिता – कोविड–19 जिम्मेदार कौन?

✍ ऊर्जा–विद्युत बचाएं, 15 मई को शाम 6:30 बजे से 7:00 बजे तक घर की सारी लाइटें, पंखा, ऐसी सभी बंद की गई थी।

12. ✍ दिनांक : 02.05.2020

परम पूज्य के जन्मोत्सव के उपलक्ष में महिलाओं की आध्यात्मिक भेंट–

पंचरंगी सामायिक : 847

अन्य सामायिक : 41705

✍ दिनांक : 03.05.2020

परम पूज्य के पट्टोत्सव के उपलक्ष में महिला समाज की आध्यात्मिक भेंट–

पचरंगी मौन : 1049

अन्य मौन : 20771

✍ दिनांक : 06.05.2020

परम पूज्य के दीक्षा दिवस के उपलक्ष में 21 द्रव्य रखकर महिला समाज की आध्यात्मिक भेंट–

द्रव्य सीमा : 24182 महिलाएं

13. दिनांक : 22.05.2020

ज्ञात चेतना वर्ष के उपलक्ष में महात्मा महाप्रज्ञ पुस्तक पर आधारित प्रश्नमंच– ''मैं और मेरी यात्रा''

संयोजिका : श्रीमती कल्पना बैद (पूर्वाध्यक्ष), श्रीमती वन्दना बरड़िया

संभागी : प्रतिभागी 2368, अभातेममं पदाधिकारी 27

14. दिनांक : 31.05.2020

नव तत्वज्ञान प्रश्नमंच प्रतियोगिता

संयोजिका : श्रीमती सौभाग बैद (ट्रस्टी), श्रीमती विमला दुगड़

संभागी : प्रतिभागी 3448, अभातेममं पदाधिकारी – 32

- लॉकडाउन के समय का सदुपयोग हो और हजारों व्यक्ति बिना कहीं बाहर जाये घर बैठे नई–नई जानकारियां हासिल करें। स्वयं की जीवन–शैली को परिष्कृत, परिवर्तित करें, इसी का एक प्रयास अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल द्वारा WEBINARS का आयोजन, इन वेबिनार का Facebook Live एवं Zoom के द्वारा सफल संचालन हुआ।

S.No.	DATE	SUBJECT	SPEAKER	VIEWERS	REACH
1	01.05.2020	'वर्तमान में कल को संवारे'	Dr. Maridula Sinha (Former Governor, Goa)	-	-
2	04.05.2020	'Eat your way to Fit, Fine, Healthy Life Style	Neeta Mehta	8500+	31719
3	05.05.2020	'नवकार मंत्र की शक्ति, करें स्वयं को सुरक्षित'	Renu Chindalia	15000+	35002
4	06.05.2020	'Mission Equality and Opportunity'	Rekha Sharma	12000+	76670
5	09.05.2020	'Mother Nature is Rebooting itself, its time to Reboot Ourselves.'	Vibha Baid	6000+	20483
6	13.05.2020	'Transform Your Health, Know the seven secrets of Health'	Sneh Desai	29000+	71367
7	15.05.2020	'स्व से शिखर तक' हमारा समाज हमारा दायित्व	Suraj Baradia	13829	37832
8	17.05.2020	करें स्वयं का ईलाज, मुद्रा विज्ञान के साथ	Parasmal Dugar	9852	27904
9	20.05.2020	Design your destiny	Ruma Devi	17523	37874
10	27.05.2020	Breaking the Myths (Astrology & Vastu Shastra)	Riddhi Bahl	18347	30000

- कोविड–19 की इन विषय परिस्थितियों में अभातेममं के शाखा मण्डलों ने राहत कार्य में भी अपना अमूल्य योगदान दिया है। हजारों जरूरतमंदों को खाद्य सामग्री, दवाइयां, मास्क, सेनेटाईजर आदि वितरित कर रही हैं। अनेक शाखाओं ने स्थानीय स्तर पर सरकार की आर्थिक रूप से भी सहायता की है। कुल राशि लगभग रु. 2,28,22,760।
- इस लॉकडाउन में आयोजित कन्या मण्डल का संक्षिप्त विवरण :

S.No.	DATE	SUBJECT	SPEAKER	VIEWERS
1	25.03.2020	Become a powerfu soul, Learn 25 Bol	Ms. Pragya Nolkha (Kanya Mandal Sanyojika)	1200+
2	26.03.2020	Science in Jainism	Ms. Yashika Khater (Kanya Mandal Sanyojika)	2800+
3	27.03.2020	जाने अर्हत वन्दना	Sh. Rakesh Khater	2100+
4	02.04.2020	प्रासुक पानी का विज्ञान	Ms. Yashika Khater	14481+
5	14.04.2020	Corporate Etiquette	Smt. Taruna Bohara (Secratray, ABTMM)	23822+
6	24.04.2020	Stepping stones to Success	Smt. Namita Singhi (Kanya Mandal Sah Prabhari, ABTMM)	1777+
7	30.04.2020	Make Your CV the best	Suhani Jain (Senior Hr Consuttant)	7543+
8	04.05.2020	Conquor the Fear of Stage, at any Age	Smt. Raman Patawari (Kanya Mandal Prabhari, ABTMM)	14350+
9	14.05.2020	Effective Public Speaking	Ms. Pooja Bothra	19000+
10	24.05.2020	Why Winners Win	Mrs. Neelam Sethia (Vice President ABTMM)	25000+

ज्ञान चेतना प्रश्नोत्तरी - जून 2020

प्रिय बहनो, सादर जय जिनेन्द्र!

यह वर्ष आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष है। जिसे हम ज्ञान चेतना वर्ष के रूप में मना रहे हैं। पूज्य आचार्य महाप्रज्ञ जी ने विशाल साहित्य का सर्जन किया। उनकी हर रचना कालजयी थी एवं आज भी दीप ज्योति के तरह प्रज्जवलित है। आइये हम जानते हैं; उनकी प्रज्ञा ज्योति को ज्ञान चेतना प्रश्नोत्तरी के माध्यम से।

प्रश्न : निम्न कोष्ठकों में से आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की 23 पुस्तकों के नाम खोजें।

घ	ट	री	तो	वि	खो	सं	बो	र	अ	प	न	चा	ग	सु	जी	व	अ	ल
क्ष	मा	त्र	ने	स	लो	सं	ती	स	त्मा	में	ने	यो	त्र	अ	भ्य	म	उ	ला
री	ल	सू	त्र	र्ज	क	सु	है	आ	त्र	र	प्र	म	य	अ	भ्यु	रा	य	अ
ड	सु	के	सु	न	र्म	रा	र	अ	ने	घ	का	उ	द	द	भे	थे	अ	ने
र	रा	र्म	वि	स	का	औ	न्त	जी	ते	ने	चि	द	भ्यु	र	पा	ध	प	का
वां	त्र	ध	अ	जी	र	सु	जे	न	र	प	जी	य	अ	भ	जी	व	ने	न्त
सं	बो	धि	भा	री	क	र्म	द	सी	थी	अ	व	म	आ	मु	अ	हा	त	है
मं	सं	आ	श	उ	स	वा	च	पो	सं	ल	ड	र्ह	मी	र्ह	आ	ने	जी	ती
तु	घ	र	में	री	र्म	ती	की	रा	स	जी	व	अ	मी	ध	भ्य	जी	ते	स
न	म	र	औ	क	वि	न	चि	ति	म	व	स	आ	न	न	त्र	व	जी	रा
कै	से	प्र	ति	क	व	त	त	स्तु	य	अ	म	ध	के	म	आ	न	के	ने
म	हा	री	म	जी	व	न	खी	प्र	प	जी	य	न	रा	र	भा	में	न	त्र
मा	चें	चे	ग	न	ता	कौ	म	जै	ब	व	क	र्म	म	औ	च	सो	म	ल
न	सो	त	यो	च	म	खी	य	ली	न	यो	न	ग	क	त्त	लो	चे	ड	ची
व	से	री	न	जै	न	सु	ए	म	तु	दि	चि	नं	ल	चि	रं	मं	पा	र
क	कै	सो	जै	स्यु	की	म	क	ति	ति	कि	स	ए	क	आ	भा	उ	स	हा
उ	न्न	चे	जी	न	प्र	नी	सी	प्र	रो	क	स	म	रा	आ	व	घ	र	में
र	यो	ग	व	ति	हा	दि	न	रे	लो	च	ला	क	ए	रा	जी	म	न	की
ह	म	जी	म	क	जै	न	स	म	य	प्र	बं	ध	न	ल	सी	के	चा	बी

नोट : 1. उत्तर आप को Google Form के द्वारा 20 जून तक भेजने रहेंगे।

2. Google Form की Link team group में सूचित कर दी जायेगी।

3. अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें - **श्रीमती मधु देरासरिया, सूरत**
Mob.: 9427133069, Email_id : madhujain312@gmail.com

मई माह के उत्तर

1. भंवरलालजी
2. संकल्प
3. संवर
4. व्रत
5. भाव
6. अहिंसा परायण
7. संस्थान विचय
8. असंयम:
9. मद्रास
10. प्रत्ययास्पदम्
11. स्वरुपानुसंधान
12. आज्ञा
13. अंत:पुर
14. आज्ञाप्य:
15. औदारिक शरीर
16. ब्रह्मचर्य
17. मैत्री
18. लौकिक
19. वेदनीय कर्म
20. व्यापार

मई माह के भाग्यशाली विजेता – मई माह में कुल 2045 प्रविष्टियां प्राप्त हुई

1. संगीता लोढ़ा–धोइन्दा
2. शिल्पा भंडारी–रतलाम
3. संतोष बांठिया–हनुमानगढ़
4. आशा जैन–सूरत
5. वंदना केतन भोगर–सायरा
6. उषा सेठिया–इंदौर
7. संगीता सिंघवी–अमराईवाड़ी
8. पूनम डागलिया–वाशी, मुम्बई
9. शांति सालेचा–बल्लारी
10. आयुषि भटेवरा–ब्यावर

कोविड–19 के समय शाखा मंडलों द्वारा दी गई राहत राशि

क्र. सं.	राशि	शाखा मंडल का नाम
51.	3,25,000/–	पूर्व कोलकाता महिला मंडल
52.	32,000/–	नोएड़ा महिला मंडल
53.	7000/–	हासन महिला मंडल
54.	1,25,000/–	गाँधी नगर बैंगलोर महिला मंडल
55.	13,000/–	गजपुर महिला मंडल
56.	2,21,000/–	पाली महिला मंडल
57.	21,000/–	राजाजी नगर बैंगलोर महिला मंडल
58.	1,35,000/–	भीलवाड़ा महिला मंडल
59.	21,000/–	घुशकरा महिला मंडल
60.	15,000/–	ढेकियाजूली महिला मंडल
61.	5000/–	भोईसर महिला मंडल
62.	33,000/–	आमेट महिला मंडल
63.	5100/–	आमलनेर महिला मंडल
64.	13,000/–	जयगाँव भूटान महिला मंडल
65.	21,000/–	बोरावड़ महिला मंडल
66.	20,000/–	रिछेड़ महिला मंडल
67.	3,11,000/–	सी–स्कीम, जयपुर महिला मंडल
68.	7,31,000/–	मदुरई महिला मंडल
69.	21,000/–	भट्टा मधुवनी महिला मंडल
70.	25,000/–	विजयवाड़ा महिला मंडल
71.	25,000/–	साउथ हावड़ा महिला मंडल (कोलकाता)
72.	85,000/–	टालीगंज महिला मंडल (कोलकाता)
73.	4,25,000/–	गुवाहाटी महिला मंडल
74.	51,000/–	भीनासर महिला मंडल
75.	28,000,00/–	बालोतरा महिला मंडल
76.	17,000/–	गंगानगर महिला मंडल
77.	11,000/–	डूंगरी महिला मंडल
78.	53,000/–	नागपुर महिला मंडल
79.	2,51,000/–	हैदराबाद महिला मंडल
80.	9,00,000/–	दिल्ली महिला मंडल

81.	52,000/–	राजलदेसर महिला मंडल
82.	80,000/–	भुवनेश्वर महिला मंडल
83.	1,21,000/–	नोहर महिला मंडल
84.	31,000/–	धुबड़ी महिला मंडल
85.	11,000/–	पटनासिटी महिला मंडल
86.	41,000/–	अररिया कोर्ट महिला मंडल
87.	11,000/–	सवाई माधोपुर (आदर्श नगर) महिला मंडल
88.	51,000/–	श्री डूँगरगढ़ महिला मंडल
89.	50,000/–	छापर महिला मंडल
90.	11,000/–	अंकलेश्वर भरूच महिला मंडल
91.	27,000/–	मोमासर महिला मंडल
92.	21,000/–	औरंगाबाद महिला मंडल
93.	1,09,000/–	कटक महिला मंडल
94.	1,25,000/–	गुलाबबाग महिला मंडल
95.	1,00,000/–	फरीदाबाद महिला मंडल
96.	22,000/–	कटिहार महिला मंडल
97.	21,000/–	कोयम्बटूर महिला मंडल
98.	14,000/–	बोकारो महिला मंडल
99.	63,900/–	दुबली महिला मंडल
100.	60,400/–	राजसमंद महिला मंडल
101.	15,000/–	कोची महिला मंडल
102.	1,85,000/–	राज राजेश्वरी नगर, बैंगलौर महिला मंडल
103.	1,06,000/–	विजयनगरम महिला मंडल
104.	21,000/–	रतनगढ़ महिला मंडल
105.	51,000/–	सिलीगुड़ी महिला मंडल
106.	1,00,000/–	बरहमपुर महिला मंडल
107.	25,000/–	खुश्कीबाग महिला मंडल
108.	11,000/–	सरदारशहर महिला मंडल

पिछली नारीलोक में दिए गए 50 क्षेत्रों की कुल राशि 1,45,79,360 रूपये । अभी 57 क्षेत्रों से प्राप्त कुल राशि 82, 54,400/- । अब तक 108 क्षेत्रों से प्राप्त राहत राशि का कुल योग - 2,28,33,760 है ।

राहत राशि के लिए संयोजिका श्रीमती विमला दुगड़, जयपुर मो.: 9314517737 से सम्पर्क करें।

अध्यक्षीय कार्यालय : श्रीमती पुष्पा बैद - ''पावन'' बी-106/107, विद्युत नगर-बी, क्वीन्स रोड़, जयपुर - 302021
मो. : 9314194215, 8209004923 ईमेल pushpabaid312@gmail.com

महामंत्री कार्यालय : CA तरूणा बोहरा - 301, साधना पैलेस, मराठा कॉलोनी, दहिसर (पूर्व) मुम्बई - 400068
मो. : 8976601717 ईमेल tarunajain365@gmail.com

कोषाध्यक्ष कार्यालय : श्रीमती रंजु लुणिया - लुणिया मार्केटिंग प्रा. लिमिटेड, बड़ा बाजार, छेरा बस स्टॉप के पास, शिलोंग-793001 (मेघालय) मो: 94361033330, 8787645164 ईमेल lmplshillong@gmail.com

नारीलोक संपादन सहयोगी : श्रीमती गुलाब बोथरा मो : 9462342976

नारीलोक देखें website : www.abtmm.org

आओ चलें
गांव की ओर

स्वस्थ परिवार
स्वस्थ समाज

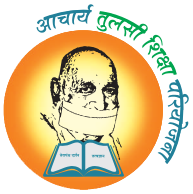
आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना

कन्या सुरक्षा योजना

ACHARYA MAHASHRAMAN
PHYSIOTHERAPHY CENTRE

ZOOM

DIGITAL ABTMM
DIGITAL INDIA !

निर्जरा

ART KHAZANA

WEBINAR

BUSINESS WOMEN NETWORK

सदस्य गणना

कंठस्थ ज्ञान

लेखनी

नन्ही कली

संपर्क

BRAINVITA

तृप्ती-एक बूंद

परिष्कार

स्वच्छ
भारत

स्व से सिखर तक

संकल्प से सिद्धि

समृद्ध राष्ट्र योजना

WOMEN ON WHEEL
WOW
RESPECT

भावना सेवा

काव्यांजली

अन्नपूर्णा